• वर्ष -15 • अंक-26 • प्रत्येक गुरुवार को प्रकाशित • अनूपपुर 29 जून से 05 जुलाई 2023 • मूल्य 2.00 • पृष्ठ 8 Epaper-www.fatwasamachar.com

डाक पंजी- SDL-0019/2025 RNI-MPHIN/2008/24599

फ़तवा

मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ का लोकप्रिय समाचार पत्र आपका विश्वास

पेज-2

पेज-3

पेज-4

सुविचार

माना कि बुरा वक्त बताकर नहीं आता, लेकिन जब भी आता है,कुछ ना कुछ सिखा कर जरूर जाता है !

संक्षिप्त समाचार

गैंगस्टर गोल्डी बरार ने फिर दी खुली धमकी

नई दिल्ली एजेंसी। सिने स्टार सलमान खान को एक बार फिर से कनाडा में छिपे गैंगस्टर गोल्डी बरार ने जान से मारने की धमकी दी है। गौरतलब है कि पिछले कुछ समय से सलमान खान को लगातार धमकियां मिल रही हैं। एक न्यूज चैनल से बातचीत में गोल्डी बरार ने कहा कि मुझे जब भी मौका मिलेगा, मैं सलमान खान को जरूर मारूंगा। इतना ही नहीं, सतविंदर सिंह उर्फ गोल्डी बरार ने ये भी खुलासा किया कि सलमान खान का नाम उसकी हिट लिस्ट में है। इंटरव्यू में पंजाबी सिंगर सिद्धू मूसेवाला हत्याकांड के मास्टरमाइंड गोल्डी बरार ने कहा कि उसकी गैंग सलमान खान को जरूर मारेगी। इतना ही नहीं वॉन्टेड गैंगस्टर ने कहा कि जब भी हमें मौका मिलेगा, हम उसे मार देंगे। बरार ने कहा कि उसे भाई साहब (लॉरेंस बिश्नोई) ने बताया था कि उन्होंने माफी नहीं मांगी है।

विमान में यात्री ने किया पेशाब, विरोध करने पर की अभद्रता

नई दिल्ली एजेंसी। एयर इंडिया की मुंबई-दिल्ली फ्लाइट से यात्रा कर रहे एक यात्री के पेशाब और थूकने का मामला सामने आया है। यात्री को दिल्ली हवाई अड्डे पर गिरफ्तार कर लिया गया। दिल्ली हवाई अड्डा पहुंचने के बाद अधिकारियों ने इसकी जानकारी पुलिस को दी थी। पुलिस ने यात्री को गिरफ्तार कर उसे अदालत में पेश किया, जहां से उसे जमानत मिल गई। दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा थाना में फ्लाइट कैप्टन की ओर से शिकायत दर्ज कराई गई है। शिकायत के मुताबिक 24 जून को मुंबई से दिल्ली आ रही एयर इंडिया की फ्लाइट एआईसी-866 हवा में थी, जहां सीट नंबर-17एफ पर एक यात्री ने विमान की पंक्ति 9 डीईएफ पर पेशाब किया। यात्री की इस हरकत को केबिन क्रू ने देखा। विरोध करने पर यात्री ने उस पर थूक दिया। बाद में उड़ान के केबिन पर्यवेक्षक ने मौखिक चेतावनी दी।

भाजपा नेता कमाल खान का बेटा 70 करोड़ की ड्रग्स के साथ गिरफ्तार

इंदौर एजेंसी। भाजपा के वरिष्ठ नेता और अल्पसंख्यक आयोग के पूर्व अध्यक्ष कमाल खान के बेटे बिलाल खान को इंदौर क्राइम ब्रांच पुलिस ने गिरफ्तार किया है। जैसे ही क्राइम ब्रांच ने बिलाल खान को गिरफ्तार किया। उसके बाद बजरंग दलके कार्यकर्ताओं ने उसके समर्थन में पलासिया चौराहे पर जमकर प्रदर्शन किया। पुलिस ने उसके बाद लाठीचार्ज किया था। इस मामले में गृहमंत्री ने 2 पुलिस अधिकारियों को लाइन अटैच किया था। इस मामले की जांच एडीजी स्तर के अधिकारी द्वारा की जा रही है। बिलाल खान को 2021 में पकड़ी गई 70 करोड़ के एमडी ड्रग्स जप्त होने के बाद से वह फरार चल रहा था। पुलिस उसकी तलाश कर रही थी। उसके ऊपर 4000 रुपये का इनाम भी पुलिस ने घोषित किया हुआ था।

सोहागपुर और पपौंध में आकाशीय बिजली गिरने से पांच वर्षीय बालक सहित तीन लोगों की मौत

परिवार की तीन पीढ़ियां आकाशीय बिजली की चपेट में आने से खत्म

शहडोल नप्र। शहडोल जिले के सोहागपुर और पपौंध थाना क्षेत्रों में आकाशीय बिजली गिरने से पांच वर्षीय बालक सहित तीन लोगों की मौत हो गई। तीन दिनों से यहां रुक-रुक कर तेज गरज लपक के साथ वर्षा हो रही है। इसी बीच आकाशीय बिजली गिरी जिसकी चपेट में तीन लोग आ गए हैं। सोहागपुर के पटासी गांव में खेत में खाद डाल कर साइकिल से लौट रहे पिता-पुत्र की आकाशीय बिजली की चपेट में आने से मौत हो गई है। थाना प्रभारी सोहागपुर अनिल पटेल ने बताया कि इंद्रपाल सिंह 35 वर्ष अपने 5 वर्षीय पुत्र प्रताप सिंह के साथ खेत में खाद डालकर वापस घर लौट रहे थे। तभी खेत से कुछ दूरी पर आकाशीय बिजली गिरी जिसकी चपेट में आए दोनों पिता-पुत्र की मौके पर ही मौत हो गई है। थाना प्रभारी ने बताया है कि दोनों बुरी तरीके से झुलस चुके थे। साइकिल भी जल गई है।

तीन पीढ़ियां खत्म

इंद्रपाल के पिता और प्रताप सिंह के दादा जयवीर सिंह की भी 7 वर्ष पहले खेत में काम करते वक्त आकाशीय बिजली से मौत हुई थी। 7 वर्ष के भीतर एक परिवार की तीन पीढ़ियां आकाशीय बिजली की चपेट में आने से खत्म हो गईं। दूसरी घटना पपौंध थाना क्षेत्र में हुई है। यहां 40 वर्षीय सुशीला सिंह खेत में काम कर रही थीं, तभी आकाश की बिजली गिरी और चपेट में आने से मौके पर मौत हो गई है। पुलिस ने दोनों मामलों पर मर्ग कायम कर जांच में ले लिया है।

पकरिया में बिजली करंट से गौवंश की मौत

बुढ़ार के पकरिया के सरकारी टोला में करेंट की चपेट में आनें से एक गौवंश की मौत हो गई है।जिस रास्ते से पीएम के जाने का है था उसी रास्ते पर लगे बिजली के पोल से फैले करंट से गोवंश की मौत हुई है।गांव वालों ने बताया कि वर्षा के दौरान यहा करंट फैलता है। ग्राम पंचायत द्वारा बिजली विभाग में कई जानकारी भी दी गई है,लेकिन सुधार नहीं किया गया और गोवंश की जान चली गई। बिजली विभाग की लापरवाही के चलते कभी भी बड़ी दुर्घटना ग्राम पकरिया के सरकारी टोला मुख्य मार्ग पर हो सकती है।

मुख्यमंत्री ने लोकतंत्र सेनानियों के राज्य स्तरीय सम्मेलन को संबोधित किया

लोकतंत्र सेनानी सम्मान निधि 25 हजार से बढ़कर 30 हजार रू. प्रतिमाह होगी

मुख्यमंत्री चौहान ने दीं कई सौगातें कहा- लोकतंत्र सेनानियों ने देश की आजादी की तीसरी लड़ाई लड़ी

भोपाल नप्र। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि आपातकाल में भी लोकतंत्र सेनानियों ने भारत माता का जयघोष किया। सत्ताधीशों ने अपने आप को सत्ता में बनाए रखने के लिए लोकतंत्र का गला घोंटा गया, परन्तु लोकतंत्र सेनानियों ने बिना परिणामों की परवाह किए यातनाएँ और कष्ट सहे। उन्होंने देश की आजादी की तीसरी लड़ाई लड़ी।

इस संघर्ष का सम्मान हमारा कर्तव्य और धर्म है। मुख्यमंत्री चौहान प्रदेश के लोकतंत्र सेनानियों के सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री चौहान ने कहा कि लोकतंत्र सेनानियों को प्रदान की जा रही 25 हजार रूपए की सम्मान निधि को बढ़ाकर 30 हजार रूपए प्रतिमाह किया जाएगा। जो लोकतंत्र सेनानी एक माह से कम अवधि के लिए बंदी रहे हैं, उनकी सम्मान निधि 8 हजार रूपए से बढ़ाकर 10 हजार रूपए की जाएगी। दिवंगतों के परिवारों को दी जाने वाली निधि भी 5 हजार से बढ़ाकर 8 हजार रूपए की जाएगी। लोकतंत्र सेनानियों को दिल्ली प्रवास के दौरान मध्यप्रदेश भवन में ठहरने की सुविधा होगी। जिलों के विश्राम गृह और रेस्ट हाऊस में वे 2 दिन तक 50 प्रतिशत शुल्क देकर रह सकेंगे। साथ ही सभी तरह की बीमारियों का सम्पूर्ण इलाज राज्य शासन द्वारा कराया जाएगा। शासकीय कार्यालयों में उनके साथ सम्मानजनक व्यवहार हो, इसके लिए विशेष निर्देश जारी किए जा रहे हैं। लोकतंत्र सेनानियों को राज्य शासन की ओर से ताम्रपत्र प्रदान किए गए थे, जिन्हें ताम्रपत्र मिलना शेष हैं उन्हें भी तत्काल ताम्रपत्र उपलब्ध कराए जाएंगे। लोकतंत्र सेनानी किसी भी तरह के कष्ट और परेशानी में अपने आप को अकेला न समझें, राज्य सरकार उनके साथ है।

लोकतंत्र बचाने की जिम्मेदारी हम सबकी

मुख्यमंत्री चौहान ने कहा कि आपातकाल में कई परिवार तबाह हुए। यह वह दौर था जब कोई अपील- कोई वकील- कोई दलील नहीं सुनी जाती थी। लोकतंत्र सेनानियों ने एक सिद्धांत, विचारधारा और संगठन के लिए यातनाएं सहीं, यह उस विचार का सम्मान था, जिसने लोकतंत्र को बचाया। आज इसी विचारधारा का डंका पूरी दुनिया में बज रहा है। प्रधानमंत्री मोदी ने भारत की शान को बढ़ाया है। वर्तमान में भी लोकतंत्र को बचाने की जिम्मेदारी हम सबकी है। जिनकी लोकतंत्र में आस्था नहीं है, जिनका भारतीय संस्कृति- मूल्यों और परम्पराओं से कोई लेना-देना नहीं है, उनसे सतर्क रहना जरूरी है।

आदिपुरुष पर इलाहाबाद हाईकोर्ट की टिप्पणी- हिंदुओं की सहनशीलता की परीक्षा क्यों ले रहे हैं, शुक्र है कानून नहीं तोड़ा

प्रयागराज एजेंसी। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने मंगलवार को फिल्म आदिपुरुष के आपत्तिजनक डायलॉग के मामले में लगाई गई याचिका पर सुनवाई की। कोर्ट की लखनऊ बेंच ने कहा कि हिंदुओं की सहनशीलता की परीक्षा क्यों ली जाती है? शुक्र है उन्होंने (हिंदुओं ने) कानून नहीं तोड़ा। कोर्ट ने भगवान राम और भगवान हनुमान सहित धार्मिक पात्रों को आपत्तिजनक तरीके से पेश करने के लिए फिल्म आदिपुरुष के निर्माताओं की आलोचना भी की। कोर्ट ने फिल्म के सह-लेखक मनोज मुंतशिर शुक्ला को मामले में पक्षकार बनाने का निर्देश दिया। साथ ही उन्हें नोटिस जारी कर एक सप्ताह के भीतर जवाब देने को कहा है। हाईकोर्ट ने आगे कहा- जो सज्जन हैं उन्हें दबा देना सही है क्या? यह तो अच्छा है कि यह एक ऐसे धर्म के बारे में है, जिसके मानने वालों ने कोई पब्लिक ऑर्डर प्रॉब्लम क्रिएट नहीं की। हमें उनका आभारी होना चाहिए। हमने न्यूज में देखा कि कुछ लोग सिनेमा हॉल (जहां फिल्म प्रदर्शित हो रही थी) गए थे और उन्होंने वहां जाकर लोगों को सिर्फ हॉल बंद करने के लिए मजबूर किया, वे कुछ और भी कर सकते थे।

अब एक जुलाई को शहडोल आएंगे पीएम मोदी

भोपाल नप्र। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अब एक जुलाई को शहडोल दौरे पर आएंगे। उनके दौरे की नई तारीख तय हो गई है। वे एक जुलाई को दोपहर तीन बजे शहडोल जिले के पकरिया और लालपुर में होने वाले कार्यक्रम में शामिल होंगे। सीएम शिवराज सिंह चौहान ने ट्वीट कर इसकी जानकारी दी है। पीएम मोदी पहले 27 जून को शहडोल जिले के इन कार्यक्रमों में शामिल होने वाले थे, लेकिन भारी बारिश के अलर्ट को देखते हुए उनका दौरा निरस्त कर दिया गया।

पीएम नरेंद्र मोदी ने 5 वंदे भारत ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रानी कमलापति रेलवे स्टेशन से 5 वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। प्रधानमंत्री ने इनमें से तीन वंदे भारत ट्रेन को वर्चुअल माध्यम से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। प्रधानमंत्री मोदी ने ट्रेन में यात्रा कर रहे बच्चों के साथ संवाद भी किया।

छोटे कपड़े पहने तो मंदिर में नो एंट्री- उज्जैन के नागदा में हनुमान मंदिर में लगा पोस्टर, लिखा- मर्यादित वस्त्र पहनकर ही आएं

उज्जैन नप्र। मध्यप्रदेश के अशोकनगर और भोपाल के बाद अब उज्जैन के नागदा में हनुमान मंदिर में ड्रेस कोड लागू कर दिया गया है। यहां के खड़े हनुमान मंदिर में पोस्टर लगाया गया है। इसमें लिखा है कि छोटे वस्त्र, हाफ पैंट, बरमूडा, मिनी स्कर्ट, नाइट सूट, कटी-फटी जीन्स जैसे कपड़े पहनकर आने वालों को एंट्री नहीं दी जाएगी। ऐसे लोग मंदिर के बाहर से ही दर्शन कर सकेंगे। हालांकि पोस्टर में प्रवेश पर प्रतिबंध की बात नहीं कही गई है। पोस्टर सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। मंदिर के पुजारी पवन ने बताया कि खड़े हनुमान का प्राचीन मंदिर है। पोस्टर लगाने के पीछे का उद्देश्य यही है कि जो नए भक्त आते हैं, वो मर्यादा का ख्याल रखें। मंदिर में आने वाली युवा पीढ़ी को मोटिवेशन मिले।

भोपाल में दो मंदिरों में ड्रेस कोड

बता दें कि महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश और उत्तराखंड के कई मंदिरों में ड्रेस कोड लागू है। इसके बाद अशोकनगर स्थित बालाजी मंदिर में कुछ दिन पहले ड्रेस कोड लागू किया गया। इसके बाद भोपाल के मां वैष्णो धाम आदर्श नव दुर्गा मंदिर में ड्रेस कोड लागू कर दिया गया था।

यह लिखा है पोस्टर पर

नागदा के खड़े हनुमान मंदिर में सोमवार सुबह जब श्रद्धालु दर्शन करने पहुंचे, तो मंदिर गेट के पास पोस्टर लटका दिखा। जिसमें लिखा-
सभी महिलाओं एवं पुरुषों से निवेदन है कि मर्यादित वस्त्र पहनकर ही मंदिर में प्रवेश करें। छोटे वस्त्र, हाफ पैंट, बरमूडा, मिनी स्कर्ट, नाइट सूट, कटी-फटी जीन्स आदि ऐसे कपड़े पहनकर आने पर बाहर से ही दर्शन कर सहयोग करें।
- भारतीय संस्कृति का पालन करते हुए सात्विक वस्त्र में ही प्रवेश करें।

22 बीबलओ निलंबित; वोटिंग लिस्ट के काम में की थी लापरवाही

भोपल नप्र। भोपाल कलेक्टर और जिला निर्वाचन अधिकारी आशीष सिंह ने मंगलवार को बड़ी कार्रवाई की। उन्होंने 22 बीएलओ (बूथ लेवल ऑफिसर) को निलंबित कर दिया। मतदाता सूची कार्य में लापरवाही बरतने और आदेशों का निर्वाहन नहीं किए जाने के कारण यह कार्रवाई की गई। संबंधित एसडीएम ने कलेक्टर को कार्रवाई के लिए प्रस्ताव भेजा था। इसके बाद मंगलवार को कलेक्टर ने यह कार्रवाई की। भोपाल में कुल 2022 बीएलओ

भोपाल में कुल 2022 बीएलओ हैं। 12 अप्रैल को बूथ लेवल अधिकारी के तौर पर इनकी ड्यूटी मतदाता सूची संबंधित कार्य के लिए लगाई गई थी। इनमें से 22 बीएलओ अनुपस्थित रहे। इनके अलावा भी कई बीएलओ हैं, जिन्होंने लापरवाही बरती है। इसलिए उन पर भी कार्रवाई की जाएगी।

इन्हें किया निलंबित: अनिल मेराल, रंजनकुमार सक्सेना, विपिन ठाकुर, विजय त्रिपाठी, प्रकाश पटेल, प्रकाश सावरे, शत्रुधन प्रसाद तिवारी, शंकर बेगा, मनोज राज, हरदेव सिंह, विजय मिडोरे, मनोज कुमार राठौर, संतोष कुमार कुशवाह, अंसी वर्गीस, राजकुमार वर्मा, योगेश सरवैया, रमेश शर्मा, सौरभ दुबे, श्याम सिंह भदौरिया, राजेंद्र सिंह, जगदीश यादव एवं विजय कुमार पाटिल।

सीहोर से लौट रहे बाइक सवार परिवार को ट्रक ने रौंदा

नाबालिग बेटे और मां की दर्दनाक मौत

भोपाल नप्र। शहर के खजूरी सड़क थाना इलाके में बाइक सवार परिवार के चार लोगो को ट्रक ने पीछे से जोरदार टक्कर मार दी। दर्दनाक हादसे में महिला ने मौके पर ही दम तोड़ दिया, जबकि उसके 16 साल के बेटे की हॉस्पिटल में मौत हो गई। वहीं बाइक चला रहा पिता और 12 साल का बेटा गंभीर रूप से घायल है, जिनका निजी हॉस्पिटल में उपचार जारी है। दोनों का उपचार मल्टी केयर अस्पताल में चल रहा है।

जहां दोनों की हालत नाजुक बनी हुई है। टक्कर मारने वाले ट्रक को पुलिस ने जब्त कर लिया है। आरोपी चालक को भी हिरासत में ले लिया है। जानकारी के मुताबिक मोची मोहल्ला बैरागढ़ में रहने वाले 42 वर्षीय धनसिंह मालवीय मोटर वाइंडिंग का काम करते थे। उनके परिवार में पत्नी भूरी मालवीय (38) बेटा विनय मालवीय (16) और चिराग मालवीय (12) थे। बीती सुबह धनसिंह सीहोर में रहने वाले अपने साडू के बेटे के मान कार्यक्रम में शामिल होने बाइक से परिवार सहित गए थे। कार्यक्रम में शामिल होने के बाद धनसिंह अपनी बाइक से परिवार सहित वापस भोपाल लौट रहे थे। शाम करीब 6 बजे खजूरी सडक़ इलाके के 11 मील बायपास पहुंचने पर 16 चक्का ट्रक ने पीछे से उनकी बाइक को जोरदार टक्कर मार दी। ट्रक की चपेट में आकर परिवार चलती बाइक सहित सड़क पर जा गिरा।

पिता और दूसरे बेटे की हालत गंभीर

वर्ल्ड कप में भारत-पाक मुकाबला 15 अक्टूबर को

दुबई एजेंसी। भारत में अक्टूबर-नवंबर के बीच 46 दिन तक वनडे वर्ल्ड कप के 48 मुकाबले खेले जाएंगे। इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल ने मंगलवार को वर्ल्ड कप का शेड्यूल जारी कर दिया। टूर्नामेंट की शुरुआत 5 अक्टूबर को न्यूजीलैंड-इंग्लैंड मुकाबले से होगी। यह मैच अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में खेला जाएगा। इसी मैदान पर 19 नवंबर को फाइनल होगा। टूर्नामेंट के सेमीफाइनल मुकाबले मुंबई और कोलकाता में होंगे। टूर्नामेंट का सबसे चर्चित मैच, यानी भारत-पाकिस्तान मुकाबला 15 अक्टूबर को नरेंद्र मोदी स्टेडियम में ही होगा।

अस्पताल ने महिला के गर्भ में पति की जगह किसी और का डाल दिया शुक्राणु

नई दिल्ली एजेंसी। राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग एनसीडीआरसी, ने शुक्राणु की अदला-बदली के मामले में दिल्ली के एक निजी अस्पताल और संबंधित डॉक्टरों पर 1.5 करोड़ रुपये का जुर्माना लगाया है। डॉक्टरों ने महिला को सहायक प्रजनन तकनीक (एआरटी) के जरिए गर्भधारण में मदद के लिए पति के बजाय किसी अन्य व्यक्ति के शुक्राणुओं का इस्तेमाल किया था। शीर्ष उपभोक्ता आयोग ने एआरटी क्लीनिकों के खिलाफ कड़ी टिप्पणियां कीं जो हाल के वर्षों में तेजी से बढ़े हैं और जहां बड़े पैमाने पर अनैतिक प्रक्रियाएं चल रही हैं। आयोग ने कहा कि ऐसे क्लीनिकों की मान्यता की जांच के अलावा नवजात शिशुओं का डीएनए प्रोफाइल जारी करना अनिवार्य कर दिया जाए। आयोग एक दंपती की शिकायत पर सुनवाई कर रहा था, जिसके अनुसार पत्नी ने जून 2009 में एआरटी प्रक्रिया के माध्यम से जुड़वां बच्चियों को जन्म दिया था। शिशुओं का रक्त समूह माता-पिता से बच्चे तक पहुंचने वाले संभावित रक्त समूहों के अनुरूप नहीं था। ऐसे में पितृत्व परीक्षण या डीएनए प्रोफाइल किया गया। दंपती ने सेवा में लापरवाही के लिए दो करोड़ रुपये के मुआवजे का दावा करते हुए आयोग का रुख किया। जिसमें कहा कि उनके लिए भावनात्मक तनाव, पारिवारिक कलह और आनुवंशिक रूप से विरासत में मिली बीमारियों का डर सहित कई मुद्दे पैदा हो गए।

तीन दिन कई जिलों में तेज बारिश के आसार

पिकनिक मनाने गए 6 लोग बेतवा नदी में फंसे- भोपाल, ग्वालियर, जबलपुर में बारिश, डायवर्जन पुल बहा

भोपाल नप्र। भोपाल में मंगलवार सुबह से बारिश हो रही है। ग्वालियर में आज सुबह इस मानसून सीजन की पहली बारिश हुई। जबलपुर, नर्मदापुरम और आसपास के जिलों में भी रुक-रुककर पानी गिर रहा है। ओरछा में पिकनिक मनाने गए 6 लोग बेतवा नदी में फंस गए। ये सभी नदी के बीच चट्टानों के बीच बैठे थे। इस दौरान अचानक नदी का जलस्तर बढ़ गया। रेस्क्यू टीम ने सभी को सुरक्षित निकाल लिया।

मंगलवार को मलाजखंड में 43 मिमी यानी दो इंच के करीब बारिश हुई। मंडला, पचमढ़ी में 1-1 इंच जबकि छिंदवाड़ा, दमोह, रायसेन, जबलपुर में आधा इंच से ज्यादा पानी गिरा। सागर, नौगांव, बैतूल, भोपाल, नर्मदापुरम, धार, सीधी, उमरिया, गुना और ग्वालियर में भी बारिश हुई। मौसम वैज्ञानिकों ने बैतूल, हरदा, बुरहानपुर और खंडवा में अति भारी बारिश होने की चेतावनी जारी की है। भोपाल, विदिशा, रायसेन, सीहोर, राजगढ़, नर्मदापुरम, रतलाम, उज्जैन, देवास, गुना, अशोकनगर, रीवा, सतना, उमरिया, डिंडोरी, जबलपुर, बालाघाट, पन्ना, दमोह और सागर में भारी बारिश के आसार भी विभाग ने बताए हैं। इससे पहले सोमवार को 16 जिलों में तेज और रिमझिम बारिश का दौर जारी रहा। प्रदेश में 24 जून को मानसून मंडला जिले से मप्र में एंटर हुआ। दूसरे दिन मानसून पूरे मध्यप्रदेश में छा गया। पिछले 24 घंटे में उमरिया में 5.19 इंच बारिश रिकॉर्ड हुई है। पचमढ़ी में 4.58, दतिया में 4.22, सिवनी में 3.1, मंडला में 2.74, सागर में 2.88, जबलपुर में 2.07 बारिश हुई।

डायवर्जन पुल बहा, जबलपुर-भोपाल मार्ग 5 घंटे बंद रहा

सोमवार-मंगलवार रात हुई बारिश से जबलपुर-भोपाल राष्ट्रीय राजमार्ग का डायवर्जन पुल पानी में बह गया। पुल के बह जाने से जबलपुर से भोपाल का संपर्क टूट गया। इस दौरान दोनों तरफ वाहनों की लंबी कतार लग गई। करीब 5 घंटे बाद नए पुल से वाहनों की आवाजाही शुरू की गई।

विदिशा में पोकलेन मशीन से नदी पार करते दिखे लोग

विदिशा में सोमवार रात से हो रही बारिश के चलते नदी-नाले उफान पर आ गए। हैदरगढ़ से गैरतगंज के बीच कोटरा नदी में बाढ़ से वैकल्पिक रास्ता बह गया। यहां पर एक पुल भी बन रहा है। रास्ता बंद होने से लोगों की आवाजाही बंद हो गई। इसके बाद लोगों ने तरकीब लगाई और पोकलेन मशीन के पंजे में बैठकर नदी पार करने लगे। इसका वीडियो भी सामने आया है।

जबलपुर में नदी - नालों में उफान

जबलपुर में मंगलवार सुबह 9 बजे तक मौसम साफ रहा, इसके बाद बारिश शुरू हो गई। सोमवार को लगातार बारिश का दौर जारी रहा। यहां शाम तक करीब ढाई इंच बारिश हो गई। शहर की सड़कों और कॉलोनियों में जलभराव की स्थिति बन गई। जिले में कई नदी - नाले उफान पर आ गए। मौसम विभाग के मुताबिक जबलपुर में सोमवार शाम तक 65.2 मिलीमीटर बारिश हो चुकी है।

उज्जैन में कई इलाकों में भरा पानी

उज्जैन में सोमवार शाम तेज बारिश का दौर शुरू हुआ। करीब एक घंटे तक तेज बारिश के कारण शहर के कई इलाके जलमग्न हो गए। शहर के लोगों को आने जाने में परेशानी का सामना करना पड़ा।

संपादकीय

व्यवस्थागत बदहाली के कारण महिला रेल यात्री की गई जान

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन एक भीड़भाड़ वाली जगह है और वहां अमूमन हर वक्त अपने गंतव्य तक जाने वाले लोगों की खासी तादाद मौजूद रहती है। नई दिल्ली रेलवे स्टेशन परिसर में व्यवस्थागत लापरवाही की कीमत जिस तरह एक महिला को अपनी जान देकर चुकानी पड़ी, उससे एक बार फिर यही साबित होता है कि सरकारी महकमों को होश तभी आता है जब कोई बड़ा हादसा हो जाए। इससे बड़ी विडंबना और क्या होगी कि देश की राजधानी होने के नाते नई दिल्ली रेलवे स्टेशन को व्यवस्था के स्तर पर हर तरह से चाक-चौबंद बताया जाता रहता है, लेकिन वहीं परिसर में खड़ा कोई बिजली का खंभा जानलेवा साबित हो जाता है। रविवार की सुबह रेलगाड़ी से चंडीगढ़ जाने के लिए पहुंचे एक परिवार को स्टेशन परिसर में जमा बारिश के पानी को पार करके आगे बढ़ना था। परिवार में एक स्कूल शिक्षिका ने जब पानी में फिसल कर गिरने से बचने के लिए पास के एक खंभे का सहारा लेने की कोशिश की, तो उसमें प्रवाहित हो रहे करंट की वजह से उनकी जान ही चली गई। यह प्रथम दृष्टया एक हादसा लग सकता है, लेकिन साफ है कि परिसर में पानी जमा होने से लेकर खंभे में करंट प्रवाहित होना सिर्फ दायित्वों में लापरवाही और व्यवस्थागत बदहाली का नतीजा है, जिसकी वजह से एक महिला को जान गंवानी पड़ी। सवाल है कि बिजली के खंभे में करंट प्रवाहित होने की वजह और क्या हो सकती है, सिवाय इसके कि उसकी देखरेख और निगरानी करने वाले संबंधित महकमे या उसकी ओर से ड्यूटी पर तैनात किसी व्यक्ति ने अपना दायित्व सही तरीके से पूरा करने में घनघोर लापरवाही बरती? स्टेशन परिसर में बने पार्किंग क्षेत्र को किस तरह बनाया गया है कि वहां बारिश का पानी इस कदर भर गया था कि लोगों के लिए आना-जाना भी खतरनाक हो गया था। गौरतलब है कि नई दिल्ली रेलवे स्टेशन एक भीड़भाड़ वाली जगह है और वहां अमूमन हर वक्त ही अपने गंतव्य तक जाने वाले लोगों की खासी तादाद मौजूद रहती है। दूसरी ओर, व्यवस्था और सुविधाओं की कसौटी पर इस स्टेशन को हर स्तर पर बेहतर बताने में कोई कसर नहीं छोड़ी जाती है। लेकिन यह कैसी व्यवस्था है कि वहां ट्रेन से अपने किसी गंतव्य की ओर जाने के लिए पहुंचा कोई व्यक्ति जान गंवा बैठता है? क्या यह साफ तौर पर लापरवाही से हुई मौत का मामला नहीं है? इसके लिए किसकी जिम्मेदारी तय की जाएगी? यों व्यवस्थागत कोताही का यह कोई अकेला मामला नहीं है। आए दिन ऐसी खबरें आती रहती हैं, जिनमें यह बताया जाता है कि सड़क किनारे किसी बिजली के खंभे में प्रवाहित हो रहे करंट से अनजान कोई व्यक्ति धोखे से उसकी चपेट में आ जाता है और उसकी मौत हो जाती है। इसी तरह, मुख्य रास्ते के बीच या किनारे मैनहोल या फिर खुले नाले किसी की मौत को न्योता दे रहे होते हैं, जिनमें गिर कर नाहक ही किसी की जान चली जाती है। ऐसे मामलों को आमतौर पर हादसा मान लिया जाता है और इसके लिए शायद ही किसी की जिम्मेदारी तय की जाती है। जबकि ऐसी घटनाएं सीधे-सीधे संबंधित महकमों के दायित्वों के निर्वहन में बरती गई घनघोर लापरवाही का नतीजा होती हैं और इसके लिए पर्याप्त मुआवजा दिया जाना चाहिए। आम रास्तों या लोगों की आवाजाही वाले इलाकों में नागरिक सुविधाएं मुहैया कराने के साथ-साथ उनके रखरखाव के लिए एक पुख्ता तंत्र होता है।

डॉक्टर्स के ब्रेन डेन को नजरअंदाज मत करिए

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

देश से डॉक्टर्स का ब्रेन ड्रेन यानी प्रतिभा पलायन इस मायने में महत्वपूर्ण और गंभीर हो जाता है कि देश में चिकित्सकों की आज भी बेहद कमी का सामना करना पड़ रहा है। देश के करीब 75 हजार डॉक्टर्स ओईसीडी यानी कि आर्थिक सहयोग व विकास संगठन से जुड़े देशों में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। ताजातरीन उदाहरण देश के सबसे बड़े दिल्ली के एम्स का ही देखा जा सकता है, जहां पिछले दस माह में सात विशेषज्ञ डॉक्टर्स ने किसी न किसी कारण से सेवाएं देना बंद कर दिया है। आज दस हजार से अधिक लोगों को प्रतिदिन सेवाएं देने वाले एम्स में ही 200 डॉक्टर्स की कमी चल रही है। यह तो एक मिसाल मात्र है। इसमें कोई दोराय नहीं कि हमारे चिकित्सकों की काबिलीयत और विशेषज्ञता के कारण ही विदेशों में अपनी पहचान बनाए हुए हैं । एक मोटे अनुमान के अनुसार ओईसीडी देशों में रह रहे 75 हजार डॉक्टर्स में से करीब दो तिहाई तो अमेरिका में ही अपनी सेवाएं दे रहे हैं। यह तो मानना पड़ेगा कि देश में स्वास्थ्य सेवाओं में उल्लेखनीय सुधार हुआ है पर अभी बहुत कुछ किया जाना है। कोविड के दौरान तो दुनिया में श्रेष्ठतम कार्य करने के बावजूद हमारी स्वास्थ्य सेवाओं की पोल खुलकर रह गई। दुनिया में सबसे अधिक डॉक्टर्स के ब्रेन ड्रेन वाला देश ग्रेनेडा है। यहां के दस हजार डॉक्टर विदेशों में पलायन कर चुके हैं। कोरोनाकाल में ग्रेनेडा को अपने चिकित्सकों को विदेशों से वापस बुलाने तक का निर्णय करना पड़ा। हमारे यहां कोरोना ने स्वास्थ्य सेवाओं को नई जान दी है और सरकारी व गैरसरकारी प्रयासों से अस्पतालों में वेंटिलेटर, ऑक्सिजन कन्सट्रेट आदि की जरूरतों को पूरा करने के समग्र और सार्थक प्रयास किए गए पर आज भी प्रशिक्षित मैनपावर की कमी के कारण इन उपकरणों का सही उपयोग नहीं होना दुर्भाग्यपूर्ण ही माना जाएगा। यदि हम ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़े आंकड़ों का विश्लेषण करें तो देश में शहरी क्षेत्र में तो कमी है ही पर ग्रामीण क्षेत्र के हालात अधिक ही चिंताजनक है। ग्रामीण स्वास्थ्य सांख्यिकी 2021-22 की माने तो देश में ग्रामीण इलाकों की डिस्पेंसरियों में 81.6 प्रतिशत बाल रोग विशेषज्ञ उपलब्ध नहीं है। और तो और सामान्य फिजिशियनों की ही बात करें तो ग्रामीण क्षेत्र की डिस्पेंसरियों में 79 प्रतिशत फिजिशियन की कमी है। 72 प्रतिशत से कुछ अधिक कमी प्रसूति रोग विशेषज्ञों की है। यह तो सरकारी आंकड़ों में दर्शाए गए हालात है। हालांकि नवीनतम रिपोर्ट में हालात में कुछ सुधार देखने को मिल सकते हैं पर अधिक सुधार की आशा करना बेमानी होगा। दरअसल हमारे यहां दस हजार की आबादी पर केवल सात डॉक्टर उपलब्ध हैं जबकि क्यूबा जैसा देश दुनिया के देशों में मेडिकल चिकित्सकीय सेवा में लीड कर रहा है और वहां दस हजार की आबादी पर 84 डॉक्टर उपलब्ध है, अमेरिका में यह संख्या 35 तो चीन में 23 है। ब्रेन ड्रेन शब्द सबसे पहली बार विश्वयुद्ध के समय उभर कर आया जब भारतीय इंजीनियर व अन्य विशेषज्ञ अपनी काबिलीयत को लोहा मनवाने विदेशों में जाने लगे और वहां अपनी पहचान बनाई। 1950 से 1960 के दशक में यूके, कनाडा और यूएसए में प्रतिभा पलायन का दौर चला और इसे ब्रिटिश रॉयल सोसायटी ने ब्रेन ड्रेन कहा तो अब विदेशों में प्रतिभा पलायन चाहे वह किसी भी देश की हो उसे ब्रेन ड्रेन के नाम से पुकारा जाने लगा है। ब्रेन ड्रेन को एक तरह से अच्छा भी माना जा सकता है क्योंकि हमारी प्रतिभा को वहां स्थान मिल रहा है पर जब तक घर के हालात तंदुरुस्त नहीं हो तब तक इसे ज्यादा अच्छा नहीं कहा जा सकता। वैसे भी हमारे यहां से ही नहीं अपितु दुनिया के लगभग अधिकांश देशों से प्रतिभाएं किसी न किसी कारण से पलायन करती है। विदेशों में प्रतिभा पलायन को ही ब्रेन ड्रेन कहा जाने लगा है। हालांकि अब ब्रेन ड्रेन को ब्रेन गेन कह कर भी पुकारा जाने लगा है तो दूसरी और रिवर्स ब्रेन ड्रेन भी होने लगा है। सवाल यह है कि देश में स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार और डॉक्टर्स की जरुरतों को देश में पूरा करना समय की मांग है। आज हम देश में आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। बावजूद इसके ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति खासतौर से चिकित्सकों और पैरामेडिकल स्टॉफ की कमी निश्चित रूप से चिंता का विषय है। खासतौर से कोरोना के बाद तो सरकार को और अधिक गंभीर होने की आवश्यकता हो जाती है। दरअसल विदेश जैसी सुविधाएं हमारे डॉक्टर्स को मिलने लगें तो उनके विदेश जाने के मोह को कुछ हद तक कम किया जा सकता है। लाख सरकारी दावों के बावजूद अन्य देशों की तुलना में स्वास्थ्य सेवाओं पर जीडीपी की तुलना में हमारे देश में तीन प्रतिशत से कुछ अधिक ही खर्च किया जा रहा है जबकि यूएसए में जीडीपी का स्वास्थ्य पर खर्च 18 प्रतिशत से भी अधिक है तो क्यूबा में 11 प्रतिशत, जापान में 10 से अधिक ही व्यय किया जा रहा है। दरअसल देश में निर्धारित अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार प्रति दस हजार की आबादी पर चिकित्सकों की उपलब्धता सुनिश्चित करने में लंबा समय लगेगा। हालांकि पिछले सालों में देश में चिकित्सा सेवाओं का विस्तार हुआ हैं। नए एम्स खोले जा रहे हैं तो शहरी और ग्रामीण क्षेत्र में अस्पताल खुल रहे हैं। राजस्थान सरकार राइट टू हेल्थ लाई है। मोहल्ला डिस्पेंसरी खोली जा रही हैं। पर यह साफ है कि देश में यूनिवर्सल हेल्थ कवरेज यानी कि सभी देशवासियों को गुणवत्तापूर्ण सेवाओं तक पहुंच अभी दूर की बात है। इसी साल देश में 50 नए मेडिकल कालेज खोलने का निर्णय किया गया है। इन्हें मिलाकर देश में 702 मेडिकल कालेज हो गए हैं तो अब देश में मेडिकल कालेजों में एमबीबीएस के अध्ययन की सीटें भी बढ़कर एक लाख 7 हजार से अधिक हो गई हैं। इसका सीधा अर्थ यह हो गया है कि कुछ साल बाद हमें एक लाख डॉक्टर्स प्रतिवर्ष मिलने लगेंगे तो विदेशों से अध्ययन कर लौटने वाले भी कुछ डॉक्टर्स होंगे। इस तरह से नए डॉक्टर्स आने लगेंगे तो हालात में सुधार होगा। सवाल अभी भी कायम है कि चिकित्सकों के ब्रेन ड्रेन को रोकने के लिए भी सरकार को ठोस प्रयास करने होंगे। डॉक्टर्स की सेवा शर्तों में सुधार के साथ ही इस क्षेत्र में निजी और सरकारी दोनों ही क्षेत्रों में निवेश को बढ़ावा देना होगा। सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत बनाना होगा। आज भी चिकित्सा क्षेत्र में निवेश की जो तस्वीर देखने को मिल रही है वह यही है कि करीब 90 फीसदी निवेश निजी क्षेत्र में आ रहा है। लाख टके का सवाल है कि लाख सरकारी व्यवस्थाओं के बावजूद निजी चिकित्सालयों तक अधिकांश लोगों की पहुंच लगभग नहीं के बराबर ही है और आने वाले समय में कोई बड़ा बदलाव होगा यह लगता भी नहीं है। हमारे लिए एक अच्छी बात यह है कि देश में मेडिकल टूरिज्म को बढ़ावा मिलने लगा है। देश के नामी अस्पतालों की साख व अपनी पहचान का ही कारण है कि विदेशी यहां इलाज के लिए आने लगे हैं। अब यदि विदेशों में बेहतर सुविधाओं और नाम कमाने के लिए युवा डॉक्टर्स पलायन का रास्ता अपनाते हैं तो इसे रोकने के भी प्रयास करने होंगे। कहा जा सकता है कि इतने बड़े देश से 75 हजार डॉक्टर्स ब्रेन ड्रेन पर चले भी जाते हैं तो क्या फर्क पड़ने वाला है। हालात में फिर भी सुधार होने से रहा तो यह हमारी निगेटिव सोच ही होगी। 75 हजार कोई छोटी संख्या नहीं है। इससे कुछ मायने में तो सुधार होगा ही। अन्य युवाओं को विदेश की राह अपनाने से तो हतोत्साहित किया जा सकेगा। युवा व अनुभवी विशेषज्ञ चिकित्सकों की अंतरराष्ट्रीय मंच पर मार्केटिंग की जाती है। देश में मेडिकल रिसर्च से जुड़े विश्वस्तरीय सेमिनार, वर्कशाप और इसी तरह की गतिविधियों का वार्षिक केरिकुलम बनाकर प्रचारित किया जाता है तो देश में ही सेवा दे रहे चिकित्सकों को विश्वस्तरीय पहचान बनेगी। मेडिकल टूरिज्म को बढ़ावा मिलेगा और विदेशों में पलायन रुकेगा। इसके साथ ही सेवा शर्तों और सुविधाओं की और भी ध्यान देना होगा। यदि ऐसा होता है तो निश्चित रूप से हमारे युवा डॉक्टर्स का ब्रेन ड्रेन रुकेगा और देश में बेहतर चिकित्सकीय सेवाएं उपलब्ध हो सकेंगी। इससे विदेशों की और रुख करने वाले डॉक्टर्स को भी देश में रह कर ही अपनी प्रतिष्ठा और पहचान बनाने का अवसर मिलेगा।

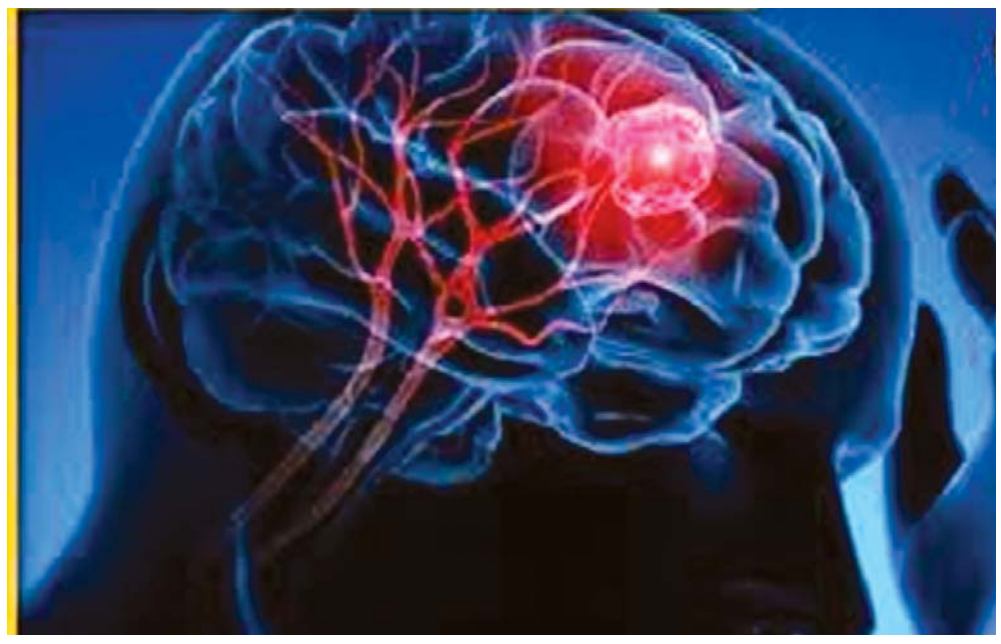

> कोविड के दौरान तो दुनिया में श्रेष्ठतम कार्य करने के बावजूद हमारी स्वास्थ्य सेवाओं की पोल खुलकर रह गई। दुनिया में सबसे अधिक डॉक्टर्स के ब्रेन ड्रेन वाला देश ग्रेनेडा है। यहां के दस हजार डॉक्टर विदेशों में पलायन कर चुके हैं। कोरोनाकाल में ग्रेनेडा को अपने चिकित्सकों को विदेशों से वापस बुलाने तक का निर्णय करना पड़ा। हमारे यहां कोरोना ने स्वास्थ्य सेवाओं को नई जान दी है और सरकारी व गैरसरकारी प्रयासों से अस्पतालों में वेंटिलेटर, ऑक्सिजन कन्सट्रेट आदि की जरूरतों को पूरा करने के समग्र और सार्थक प्रयास किए गए पर आज भी प्रशिक्षित मैनपावर की कमी के कारण इन उपकरणों का सही उपयोग नहीं होना दुर्भाग्यपूर्ण ही माना जाएगा। यदि हम ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़े आंकड़ों का विश्लेषण करें तो देश में शहरी क्षेत्र में तो कमी है ही पर ग्रामीण क्षेत्र के हालात अधिक ही चिंताजनक है।

गीता प्रेस जनतांत्रिक, आलोचना दुर्भाग्यपूर्ण

लेखक
कृष्ण कल्पित

> रामनाथ सुमन गांधीवादी थे। युवा ज्ञानरंजन का इस बात पर अपने पिता से मतभेद भी रहा । जैसा ज्ञान जी ने बताया । मैंने उन्हें (ज्ञानरंजन जी) बताया कि कुछ समय के लिए मेरे चित्रकार पिता ने भी 'भाई जी' के कहने से गीता प्रेस के लिए काम किया। मेरे पिता और हनुमान प्रसाद पोद्दार राजस्थान के रतनगढ़ कस्बे के रहने वाले थे लेकिन उस समय मेरे पिता कलकत्ता (अब कोलकाता) में कमर्शियल चित्रकार का काम करते थे और बड़ा बाजार की कलाकार स्ट्रीट पर रहते थे। भाई जी ने उन्हें बुलाया था और गीता प्रेस के लिए कुछ काम करने के लिए कहा था। ज्ञान जी से बहुत देर तक बातें हुईं । बहुत-सी बातें लिखते हुए भूल रहा हूं। मुझे लगा इन बातों को भी दर्ज कर लेना चाहिए।

87 की उम्र में भी वही खनकती हुई आवाज! सुबह जबलपुर से ज्ञानरंजन जी (पहल पत्रिका के संस्थापक संपादक) का टेलीफोन आया। दिल में धड़का हुआ कि मुझसे कोई गलती हुई है और डांट पड़ने वाली है। लेकिन मेरी आशंका निर्मूल साबित हुई। ज्ञान जी ने मेरे गीता प्रेस पर लिखे आलेखों (फेसबुक पोस्ट) की तारीफ की और कहा कि गीता प्रेस जैसी दुनिया की अनोखी जनतांत्रिक संस्था की आलोचना दुर्भाग्यपूर्ण है । कांग्रेस के जयराम रमेश हों या हिंदी के अन्य लेखक बुद्धिजीवी, जो भी गीता प्रेस की आलोचना कर रहे हैं वे इस देश की मिट्टी की तासीर से अनभिज्ञ हैं। गीता प्रेस दुनिया का अनोखा छापाखाना है। इसका विरोध नहीं, अध्ययन और शोध होना चाहिए। फिर ज्ञानरंजन जी ने अपने पिता रामनाथ सुमन और गीता प्रेस के संस्थापक हनुमान प्रसाद पोद्दार 'भाई जी' के रिश्तों के बारे में बताने लगे। उनके संबंध प्रगाढ़ रहे। हनुमान प्रसाद पोद्दार और रामनाथ सुमन के बीच जो पत्राचार हुआ वह उनके पास सुरक्षित है। ऐसे कोई सौ के लगभग पत्र होंगे। उन्होंने बताया कि रामनाथ सुमन ने आजादी से पूर्व कल्याण में गांधी और स्वतंत्रता संग्राम पर कोई चालीस लेख लिखे जिसे भाई जी ने बिना संपादन के प्रकाशित किया । कल्याण लेखकों को पारिश्रमिक नहीं देता था लेकिन सुमन जी को उन्होंने इन लेखों का बाकायदा पारिश्रमिक दिया । जब ज्ञानरंजन की माता जी यक्ष्मा से पीड़ित हुईं तो हनुमान प्रसाद पोद्दार ने उनकी वित्तीय सहायता भी की। रामनाथ सुमन जी एक तरह से कल्याण के सलाहकार की भूमिका में थे। उनकी बात सुनी जाती थी। हिंदी के बहुत से प्रमुख साहित्यकार सुमन जी की प्रेरणा से कल्याण से जुड़े और कल्याण के लिए लिखा। सुमन जी ने अपनी मृत्यु से पूर्व अपनी तमाम किताबें गीता प्रेस को भेंट कर दी थीं। ज्ञानरंजन जी ने बताया कि वे सभी किताबें अभी भी गीता प्रेस के कार्यालय में सुरक्षित हैं। प्रेमचंद ने भी कल्याण के लिए लिखा और कुछ साहित्यकारों और चित्रकारों की नौकरी के लिए भाई जी से सिफारिश भी की। सुमन जी से पोद्दारजी का मृत्यु पर्यंत संबंध बना रहा । गीता प्रेस की रविंद्रनाथ टैगोर ने प्रशंसा करते हुए कहा कि बिना सांप्रदायिकता के अपने धर्म का ऐसा प्रचार श्लाघनीय है । रामनाथ सुमन गांधीवादी थे। युवा ज्ञानरंजन का इस बात पर अपने पिता से मतभेद भी रहा । जैसा ज्ञान जी ने बताया । मैंने उन्हें (ज्ञानरंजन जी) बताया कि कुछ समय के लिए मेरे चित्रकार पिता ने भी 'भाई जी' के कहने से गीता प्रेस के लिए काम किया। मेरे पिता और हनुमान प्रसाद पोद्दार राजस्थान के रतनगढ़ कस्बे के रहने वाले थे लेकिन उस समय मेरे पिता कलकत्ता (अब कोलकाता) में कमर्शियल चित्रकार का काम करते थे और बड़ा बाजार की कलाकार स्ट्रीट पर रहते थे। भाई जी ने उन्हें बुलाया था और गीता प्रेस के लिए कुछ काम करने के लिए कहा था। ज्ञान जी से बहुत देर तक बातें हुईं । बहुत-सी बातें लिखते हुए भूल रहा हूं। मुझे लगा इन बातों को भी दर्ज कर लेना चाहिए। दिल से बोझ कुछ कम हुआ! जिसके लिए मैंने लाखों के बोल सहे। गालियां खाईं। बदनाम हुए । जिस सरकार/विचार का सबसे बड़ा आलोचक होने के बावजूद मुझे कहा गया कि मैं बिक चुका हूं। किसी तानाशाह या किसी धन पशु की हिम्मत नहीं जो कृष्ण कल्पित को खरीद सके । गीता प्रेस विवाद पर कई पोस्ट मैंने फेसबुक में लिखीं हैं, जिससे धुंधलका कुछ कम हो सके। ये मेरे अपने विचार हैं गीता प्रेस के बारे में। किसी ने लिखवाए नहीं हैं। यदि गीता प्रेस नहीं होती तो मैं अभी तक भेड़-बकरियां चराने वाला चरवाहा होता, कवि नहीं होता। हनुमान प्रसाद पोद्दार को भारत सरकार ने भारत रत्न देने की पेशकश की लेकिन उन्होंने विनम्रता पूर्वक इनकार कर दिया। तब कांग्रेस की सरकार थी। गीता प्रेस की स्थापना चूरू के जयदयाल गोयेंदका और रतनगढ़ के हनुमान प्रसाद पोद्दार ने की थी। महात्मा गांधी से गीता प्रेस का कोई झगड़ा नहीं था। वे कल्याण के लेखक थे। और उनकी ही सलाह पर आज तक गीता प्रेस कोई विज्ञापन या कोई पैसा किसी से नहीं लेता। भारत सरकार के करोड़ रुपये तो अभी ठुकराए हैं, न जाने कितने करोड़ रुपये गीता प्रेस अब तक ठुकरा चुका है। गीता प्रेस ने गांधी के रामराज्य के विचार को ही विस्तार दिया। गीता प्रेस दुनिया का सर्वश्रेष्ठ और अनोखा प्रकाशन गृह है। इतनी किताबें किसी प्रकाशन गृह से नहीं छपी। गीता और रामचरितमानस से अधिक प्रतियां शायद बाइबिल की ही छपी होंगी । गीता प्रेस दुनिया के प्रकाशन जगत का अजूबा है । काश मेरा कविता-संग्रह गीता प्रेस से छप सकता। सबसे पहले हम यही पुस्तकें/गुटका/किताबिया ढूंढते थे, जो मुफ्त में मिलती थी। कोई तीन चार महीनों में हमारे सुदूर गांव में गीता प्रेस की किताबों से भरी मोटर आती। वह हमारे लिए उत्सव का समय होता। इन छोटी-छोटी किताबों से हमने पढ़ना सीखा । गीता प्रेस हमारे बचपन से गहरे से वाबस्ता है! गीता प्रेस का निर्माण सनातन धर्म को बचाने के उद्देश्य से किया गया था। गीता प्रेस नहीं होती तो हिन्दी पट्टी के लाखों अभावग्रस्त बच्चे पढ़ाई से वंचित रह जाते। हिंदी और अंग्रेजी के कथित कला समीक्षकों को अपनी आंखों पर चढ़ा आधुनिकता का चश्मा उतार कर कभी भारतीय पारंपरिक कलाकृतियों को देखने गीता प्रेस गोरखपुर जाना चाहिए । वे हतप्रभ रह जायेंगे। मेरा मानना है कि दुनिया से जब आधुनिकता और उत्तर आधुनिकता का खुमार उतरेगा तो गीता प्रेस की यह चित्रशाला दुनिया की सबसे महंगी आर्ट गैलरी होगी। इस चित्रशाला में जयपुर के किसी अज्ञात कलाकार की एक पेंटिंग हैझ शिवजी की बरात। अपूर्व और क्लासिक । मैं केवल यही चित्र जीवन भर देखता रह सकता हूं। हिन्दी के कुछ वामपंथी आलोचकों, पत्रकारों और जातीय बुद्धिजीवियों के मन में गीता प्रेस के प्रति जैसी नफरत भरी हुई है, उससे लगता है कि उनके पास यदि सत्ता होती तो वे गीता प्रेस पर कभी का बुलडोजर चलवा देते । हमारा मानना है कि यदि गीता प्रेस जैसा संस्थान/छापाखाना जर्मनी जैसे किसी उन्नत देश में होता तो उसे अब तक राष्ट्रीय स्मारक घोषित कर दिया जाता। यह दुनिया का संभवतः सबसे बड़ा प्रेस है जिसने अब तक कोई सौ करोड़ किताबें प्रकाशित की होंगी। ज्ञान का ऐसा प्रसार अभूतपूर्व है। गीता प्रेस के लेखकों में गांधी, रविंद्र, प्रेमचंद और निराला तक रहे हैं।

नई ऊंचाइयों पर भारत-अमेरिका संबंध

लेखक
मृत्युंजय दीक्षित

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अभूतपूर्व और ऐतिहासिक अमेरिका यात्रा पूर्ण हो चुकी है। इस यात्रा पर पूरे विश्व की दृष्टि थी । अमेरिका में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के स्वागत का प्रत्येक क्षण भारतवासियों के लिए गर्व का क्षण था। यह यात्रा दोनों देशों के बीच मित्रता का एक नया स्वर्णिम अध्याय प्रारम्भ करने वाली रही है। इस यात्रा से जहां एक ओर भारत के शत्रु देशों चीन व पाकिस्तान को कड़ा सन्देश दिया गया है वहीं दूसरी ओर उन ताकतों को भी सन्देश दे दिया गया जो अल्पसंख्यकों के हितों, मानवाधिकार, अभिव्यक्ति की आजादी आदि विषयों को लेकर तथ्यहीन समाचार प्रसारित कर प्रधानमंत्री मोदी की छवि बिगाड़ने का प्रयास करते रहते हैं। प्रधानमंत्री मोदी की यात्रा अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में ऐतिहासिक योग सत्र का नेतृत्व करते हुए आरम्भ हुई। यहीं से अमेरिका में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व भारतीय संस्कृति की लोकप्रियता का आभास होने लगा। न्यूयॉर्क में आयोजित कार्यक्रम में मोदी के साथ योग करने के लिए वहां के लोगों का उत्साह अद्भुत था। योग कार्यक्रम में ॐ सहित संस्कृत श्लोकों का भी उद्घोष किया गया। यह भारतीय संस्कृति व योग के लिए गौरवशाली पल थे। यह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रयासों का प्रतिफल है कि आज योग पूरे विश्व में छा गया है और विश्व को एक सूत्र में बांध रहा है । अमेरिका यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने अमेरिका की कई महत्वपूर्ण हस्तियों से भेंट की। सबसे प्रमुख कार्यक्रम के रूप में अमेरिकी संसद को सम्बोधित किया तथा अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडन के साथ द्विपक्षीय वार्ता और उसके बाद आयोजित प्रेस वार्ता की । यात्रा के अंतिम चरण में उन्होंने रोनाल्ड रीगन सेंटर में अमेरिका में बसे भारतीयों को संबोधित किया। प्रधानमंत्री की अमेरिका यात्रा के सकारात्मक परिणाम अभी से ही सामने आने लगे हैं। यात्रा का बड़ा नतीजा यह है कि अमेरिका ने भारत की उन 100 प्राचीन मूर्तियों व धरोहरों को वापस लौटाने का निर्णय लिया है जो विगत 70 वर्षों में किसी न किसी माध्यम से अमेरिका व अंतरराष्ट्रीय बाजारों में पहुंचा दी गयी थीं। इसके अतिरिक्त भारत और अमेरिका के मध्य रक्षा, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, विनिर्माण को बढ़ावा देने और औद्योगिक आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करने के लिए समझौते हुए हैं। वैश्विक मुद्दों पर दोनों देशों के रुख में समानता है। यह मेक इन इंडिया और मेक फॉर द वर्ल्ड से जुड़े प्रयासों को बढ़ावा देंगे। प्रधानमंत्री ने अमेरिका में बड़ा संदेश दिया। वह यह है कि भारत लोकतंत्र की जननी है तो अमेरिका आधुनिक लोकतंत्र का चैपियन। विश्व इन दो महान लोकतंत्रों के बीच द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत होता देख रहा है। निश्चितौर पर भारतीय- अमेरिकी समुदाय दोनों देशों के संबंध की वास्तविक क्षमता को साकार करने में बड़ी भूमिका निभाएगा। यह भारत में अधिक से अधिक निवेश करने का उपयुक्त समय है। प्रधानमंत्री ने कहा हम साथ मिलकर न सिर्फ नीतियां और समझौते तैयार कर रहे हैं बल्कि हम जीव ,सपनों और नियति को भी आकार दे रहे हैं। अमेरिका में बसे भारतीयों को संबोधित करते हुए जब प्रधानमंत्री ने बताया कि अब एच- 1 बी वीजा का नवीनीकरण अमेरिका में ही हो जाएगा तो वहां पर उपस्थित जनसमुदाय प्रसन्नता से झूमा और मोदी- मोदी के गगनभेदी के नारों से गूंज उठा। अमेरिका में रह रहे भारतीयों को अब अपने कार्य हेतु वीजा एच1 बी वीजा का नवीनीकरण कराने के लिए भारत नहीं आना पड़ेगा और वह अमेरिका में ही अपनी नौकरी जारी रखकर यह कार्य करवा सकेंगे। इस निर्णय से अमेरिका के इंजीनियरिंग व दूसरे उच्च प्रौद्योगिकी में काम करने वाले भारतीयों को सुविधा होगी। आगे चलकर यह सुविधा एल वीजा धारकों के लिए भी हो सकेगी। नरेन्द्र मोदी अपने नौ वर्ष के कार्यकाल में दो बार अमेरिकी संसद को संबोधित करने वाले प्रधानमंत्री बन गए हैं। अमेरिकी संसद को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि आतंकवाद मानवता का शत्रु है, इस संकट से निपटने के लिए कोई अगर- मगर नहीं हो सकता। प्रधानमंत्री का यह संबोधन ऐतिहासिक रहा जिसको सुनने के लिए भारत ही नहीं विश्व भर के लोग जागते रहे। अपनी भाषण शैली से प्रधानमंत्री ने आतंक के पोषकों पर वार तो किया ही साथ ही जो लोग विदेशों में जाकर भारतीय लोकतंत्र की आलोचना करते हैं तथा भारत के अंदर सदन की कार्यवाही को ठप करने की साजिश रचते हैं उनको कड़ा उत्तर दे दिया। अब भारत को पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद के खिलाफ निर्णायक लड़ाई के लिए अमेरिका सहित विश्व के अनेक देशों का समर्थन मजबूती से मिल सकता है। यद्यपि आतंक के खिलाफ लड़ाई में चीन अभी भी एक बड़ी बाधा बन रहा है। दूसरी महत्वपूर्ण बात हुई है कि संयुक्तराष्ट्र महासभा में भारत की स्थायी सीट का दावा एक बार फिर मजबूत हुआ है और अमेरिका ने उसका समर्थन भी किया है। अमेरिका में जो लोग समय -समय पर भारत विरोधी एजेंडा चलाते रहते हैं उनका स्वप्न चकनाचूर हो गया है। स्पष्ट है कि आगामी समय में भारत और अमेरिका के बीच रिश्तों में और अधिक स्थायित्व आ सकता है ।

दूर घटना का इंतजार जान खतरे में डालकर पुलिया पार कर रहे बाइक चालक और यात्री बसें शासन प्रशासन बेखबर

फतवा समाचार ◈ बड़वाना (पाटा)

गर्मी के दिनों में गोई नदी का पानी सुख जाने के बाद पांचपुला में बने डेम का पानी गोई नदी में छोड़ा गया। जिससे नदी में लबालब पानी भर गया। वही डेम के पानी से पाटी नगर की गोई नदी पर बने वैकल्पिक पाइप पुलिया डूब गया,जिसके चलते पाइप पुलिया के ऊपर से पानी बहता रहा,पाइप पुलिया पर पानी होने से रास्ता बंद हो चुका था। ऐसे में लोग पुल के दोनों किनारे पर खड़े होकर पानी उतरने का इंतजार कर रहे थे। वही लापरवाही यात्री बस खतरा मोल लेते हुए पुलिया पर से पार करते रहे। साथ ही धीरे-धीरे बाइक और पैदल जाने वाले भी पानी से होकर गुजरने लगे तो कुछ लोग पानी उतरने का इंतजार भी कर रहे थे।

दरअसल नगर की गोई नदी पर नवीन उच्च स्तरीय पुल का निर्माण कार्य जारी है। अस्थाई रूप से वाहनों के आवागमन के लिए वैकल्पिक पाइप पुलिया बनाया गया लेकिन पाइप पुलिया की ऊँचाई कम होने से इन दिनों नदी का पानी पाइप पुलिया के ऊपर से जा रहा है। यह पानी तो डेम का है जो कि एक दिन में कम भी हो जाता हैं लेकिन जब बारिश का पानी नदी में आएगा तो कम होने में उसे कई दिन लग जाएंगे। ऐसी स्थिति में इस पाइप पुलिया से गुजरने वाले वाहन चालक समेत राहगीरों को परेशानी का सामना करना पड़ेगा। इस गोई नदी में पहाड़ियों का पानी आता है जो कि तेज बहाव में आता है। ऐसी स्थिति में वैकल्पिक पाइप पुलिया के ऊपर से पानी जाने से वाहन चालक नदी पार नहीं कर सकते हैं इस दौरान उन्हें परिवर्तित मार्ग ओसाडा में रोसर फाटा से सेमली,बमनाली, वेरवाड़ा, वाली होकर पाटी पहुँचना होगा। जिसकी दूरी करीबन 10 किमी है। इस परिवर्तित मार्ग में भी बमनाली व आवली में नाले पर दो बड़ी पुलिया बन रही हैं, जिसके चलते वहाँ पर भी परिवर्तित मार्ग बनाया गया है। यह पुलिया भी बनकर तैयार नहीं हुई है। ऐसी स्थिति में बारिश के दिनों में वाहन चालक समेत राहगीरों का नदी पार कर पाटी जाने का संपर्क कई दिनों तक टूट सकता है। यह मार्ग जिला मुख्यालय समेत महाराष्ट्र राज्य को जोडता है। रोजाना सैकड़ो वाहनों का आवागमन होता है। गोई नदी पर बने पाइप पुलिया के दोनो किनारे संकेतक बोर्ड भी लगाए जाना चाहिए ताकि बारिश के दिनों में वाहन चालक जब पुलिया के ऊपर पानी हो तो पुलिया पार ना करें और घटना दुर्घटनाओं से बच सके। लेकिन यहां पर किसी तरह के कोई संकेतक बोर्ड भी नहीं लगाए गए हैं।

केंद्रीय राज्य मंत्री सोम प्रकाश धार जिले के प्रवास पर रहेंगे

फतवा समाचार ◈ धार

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र में भाजपा सरकार ने अपने 9 वर्ष पूर्ण कर लिए हैं। इस अवसर पर 30 मई से 30 जून तक भाजपा संगठन द्वारा विभिन्न कार्यक्रम सभी जिला, मंडल, शक्ति केंद्र एवं बूथ पर आयोजित किए जा रहे हैं तथा विशेष जनसंपर्क अभियान चलाया जा रहा है। इसी अभियान के तहत भारत सरकार के केंद्रीय राज्य मंत्री श्री सोम प्रकाश जी दो दिवसीय धार जिले के प्रवास पर रहेंगे। भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि केंद्रीय मंत्री श्री सोम प्रकाश जी 27 जून को दोपहर 2 बजे रेस्ट हाउस धार पहुचेंगे तथा दोपहर 3 बजे श्री राम मंदिर महामंडलेश्वर नरसिंह दास जी महाराज से सौजन्य भेंट कर सांय 6 बजे राष्ट्रीय कवि संदीप शर्मा निवास पहुचेंगे एवं रात्रि 8 बजे भाजपा जिला कार्यालय पर कार्यकताओं से संवाद करेंगे। सुबह 10 बजे पीथमपुर क्षेत्र सेक्टर नंम्बर 03 पर रहेंगे तथा ग्राम मंडलावदा वरिष्ठ समाजसेवी श्री मांगीलाल चौधरी एवं 3 बजे श्री कैलाश महाराज जी सागौर में सौजन्य भेंट करेंगे। दोपहर 4 बजे पीथमपुर से इंदौर रवाना होंगे। इस दौरान भाजपा जिला अध्यक्ष मनोज सोमानी, सांसद श्री छतर सिंह दरबार , अभियान लोकसभा प्रभारी श्री दिलीप पटोंदिया जिला सह प्रभारी नीलेश भारती, विधायक एवं जनप्रतिनिधि, भाजपा नेता मौजूद रहेंगे। उक्त जानकारी भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने दी।

टीकमगढ़ जिला के ग्राम पंचयात लाहरगुआ में आम आदमी पार्टी के जिला अध्यक्ष जितेन्द्र जैन क्रांतिकारी ने एक आम सभा कर बाटे आमंत्रण पत्र

फतवा समाचार ◈ टीकमगढ़

जैसा कि आप सभी को मालूम है 1जुलाई 2023 को दिल्ली के मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक श्री अरविंद केजरीवाल जी और पंजाब के मुख्यमंत्री श्रीभगवंत मान जी ग्वालियर मेला ग्राउंड में एक महारैली करने वाले है जिसको मद्देनजर रखते हुए पूरे जिले में आम आदमी पार्टी के नेता गांव गांव जाकर लोगो को आम आदमी पार्टी की नीतियों के वारे में अवगत करा रहे है और लोगो से गवालिर जाने की अपील कर रहे है आज के कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रहे पंजाब सरकार के चेयरमैन श्री रंजीत सिंह जी का कहना है कि जिस प्रकार से इस गांव की हालत है हमारे पंजाब में 40 वर्ष पूर्व ऐसे गांव होते थे आपका मध्यप्रदेश बहुत पीछे है यहां के गांव के हालात बता रहे है कि यहां भ्रस्टाचार चरम सिमा पर है आप इमानदार नेता चुनो इसी के साथ जिला अध्यक्ष जितेंद्र जैन क्रांतिकारी ने प्रदेश सरकार पर जमके निशाना साधा और कहा आजादी के 75 साल बाद भी यहां पानी जेसी बुनियादी जरूरत के लिए लोगों को दर दर भटकना पड़ रहा ।

जिले में संचालित 07 लोक सेवा केन्द्रों हेतु निविदा आमंत्रित

दिलीप शुक्ला ◈ बड़वानी

जिले में संचालित 07 लोक सेवा केन्द्रों के संचालन के लिए पीपीपी मॉडल के तहत प्रायवेट आपरेटरों के चयन हेतु आनलाईन माध्यम से निविदा 20 जुलाई तक आमंत्रित की गई है।

जिला पंचायत सीईओ श्री जगदीश कुमार गोमे से प्राप्त जानकारी अनुसार निविदा प्रपत्र एवं लोक सेवा केन्द्रों की सूची http://mptenders.gov.in तथा www.barwani.nic.inEUa www.mpedistrict.gov.in पर उपलब्ध है। आनलाईन निविदा 20 जुलाई की दोपहर 3 बजे तक आमंत्रित की गई है। आनलाईन तकनीकी निविदा 24 जुलाई को दोपहर 12 बजे खोली जायेगी।

बागेश्वर धाम में 5 दिवसीय गुरुपूर्णिमा महोत्सव 1 जुलाई से:5 जुलाई को गुरु दीक्षा एवं दर्शन कार्यक्रम

फतवा समाचार ◈ छतरपुर

बागेश्वर धाम में 1 जुलाई से गुरु पूर्णिमा महोत्सव का आयोजन हो रहा है। 3 जुलाई को गुरु पूर्णिमा के मौके पर श्री हनुमत एवं नवचंडी यज्ञ का आयोजन होगा।

महोत्सव के 5 दिनी चलने वाले इस आयोजन की शुरूआत एक जुलाई से होगी। 1 और 2 जुलाई को शरणागति का कार्यक्रम होगा, जो भक्त बागेश्वर धाम पीठाधीश्वर पं. धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री की दीक्षा लेने के इच्छुक होंगे, उन्हें दीक्षा दिलाई जाएगी।

1 से 5 जुलाई तक यह होंगे कार्यक्रम

1 जुलाई को भजन संध्या ।
2 जुलाई को कवि सम्मलेन।

गुजरात के भजन गायक देंगे प्रस्तुति

गुजरात से आ रहे हैं भजन गायक

भजन संध्या के कार्यक्रम में अपनी प्रस्तुति देने गुजरात के प्रसिद्ध भजन गायक कीर्तिदान गढ़वी एवं गीता रबारी आ रही हैं। वहीं, जाने-माने भजन गायक खनिजदेव चौहान भी अपनी आवाज का जलवा बिखरेंगे

3 जुलाई को गुरु पूर्णिमा पर पं.धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री का पूजन एवं दर्शन कार्यक्रम। शाम को भजन संध्या।

4 जुलाई को महाराजश्री का जन्मोत्सव मनाया जाएगा।

5 जुलाई को गुरु दीक्षा एवं दर्शन का कार्यक्रम।

सिवनी में पहुंचा मानसूनः रात से हो रही झमाझम बारिश, किसानों के चेहरे खिले

फतवा समाचार ◈ सिवनी

जिले में मानसून की शुरूआत हो गई है। रात से जिले भर में झमाझम बारिश हो रही है। लगातार हो रही बारिश के कारण कई घरों में पानी भी गया है। बारिश का दौर प्रारंभ होने के साथ ही किसानों की ओर से अपने खेतों में खरीफ फसल की बोवनी का कार्य प्रारंभ कर दिया गया है। जिला मुख्यालय सहित जिले के कई ग्रामों में तेज बारिश अभी भी हो रही है। बारिश के चलते छोटे छोटे नदी नालों में पानी का भराव हो गया है। इस वर्ष बारिश का दौर अप्रैल, मई माह के साथ ही जून में भी जारी रहा, जून माह के दूसरे पखवाड़े से बारिश का दौर थमा और तेज उमस भरी गर्मी ने लोगों को हलाकान करना प्रारंभ कर दिया था। अब लगातार हो रही बारिश से लोगों को गर्मी से राहत मिल रही है। इस बारिश को किसानों ने मानसून की आहट समझकर अपने खेतों में खरीफ फसलों की बोवनी का कार्य प्रारंभ कर दिया है। जिले में किसानों के द्वारा खरीफ मौसम में मक्का, धान के साथ ही सोयाबीन की फसल मुख्य रूप से बोयी जा रही है। साथ ही तुवर, उड़द, मूंगफल्ली सहित अन्य फसलों की बोवनी प्रारंभ हो गई है। जिला मुख्यालय सहित कई ग्रामों में रात्रि से हो रही बारिश के चलते लोग रेनकोट पहनकर और छाता लेकर घर से निकल रहे हैं। वहीं कई घरों में भरे पानी को लोग निकालने का प्रयास कर रहे हैं।

30 जून को जिले के अंदर होने वाले तबादलों की सूची होगी जारी, विभागों ने प्रस्ताव कलेक्टर कार्यालय भेजे

छतरपुर। जिले में तबादलों पर लगा प्रतिबंध हटने के बाद 15 जून से 30 जून के बीच में प्रभारी मंत्री के अनुमोदन के बाद तबादला सूची जारी होना है। सभी विभागों ने विधायकों एवं व्यक्तिगत कर्मचारियों ने अपने अपने स्थानांतरण के आवेदन विभाग प्रमुख को सौंपे हैं। विभागों के अधिकारियो के द्वारा यह प्रस्ताव कलेक्टर को सौंप दिए हैं और सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार प्रभारी मंत्री के द्वारा एक दो दिन में इन प्रस्तावों पर चर्चा कर-के सूची जारी कर दी जाएगी। हालांकि शिक्षा विभाग के कोई भी स्थानांतरण इन प्रस्तावों में नहीं जोड़े गए हैं। शिक्षा विभाग के जो भी स्थानांतरण होंगे वह ऑनलाइन किए जाएंगे।

उत्तम पद की अपेक्षा उत्तम चरित्र पहली प्राथमिकताः कुलसचिव प्रो. एसडी चतुवेर्दी

फतवा समाचार ◈ छतरपुर

एमसीबीयू ,छतरपुर में 22 जून को 100 दिन का कार्यकाल पूरा कर लेने पर कुलसचिव प्रो. एस.डी. चतुवेर्दी ने बताया कि उनके 100 दिन के कार्यकाल में भ्रष्टाचार के प्रति जीरो टॉलरेंस की पॉलिसी रही है। इस कार्यकाल में विश्वविद्यालय में शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों से संबद्धता एवं निरंतरता की करोड़ों रुपए की बकाया राशि वसूल की गई है।इससे पहले राशि नहीं शपथ पत्र से काम चल जाता था । 100 दिवस के कार्यकाल में अनेक अशासकीय महाविद्यालय जिनका अस्तित्व ही नहीं था,कई वर्षो से शिक्षा माफियाओं द्वारा चलाए जा रहे थे, उनको ढूंढ कर बंद करने की कार्यवाही जारी है। इसी सिलसिले में तीन महाविद्यालयों को नोटिस जारी कर बंद करने की प्रक्रिया विचाराधीन है ।भविष्य में दर्जनों महाविद्यालयों को नोटिस जारी कर बंद करने की कार्यवाही की जाएगी।कई वर्षो से बिना भूमि एवं बिल्डिंग के चलने वाले महाविद्यालयों को चलाने वाले शिक्षा माफिया और उनके संरक्षक कई गुनी ताकत से एकत्र होकर अनर्गल प्रचार-प्रसार करेंगे।

स्टेडियम की दुकानों पर वर्ष 2016 से किराया ना देने वाले दुकानदारों की सूची मंगवा कर उनसे वसूली की कार्यवाही की जा रही है। अस्तित्व ना होने के बावजूद भी शैक्षणिक संस्थाओं के संचालक और उनको पोषित करने वाले पूर्व अधिकारियों में हड़कंप की स्थिति बनी हुई है। इसीलिए रोजाना नए-नए हथकण्डों के माध्यम से विश्वविद्यालय को लगातार सुर्खियों में रखने का कुप्रयास किया जा रहा है। विश्वविद्यालय में हुई चतुर्थ श्रेणी भर्ती प्रक्रिया के बारे में कुलसचिव डॉ. एसडी चतुवेर्दी ने बताया कि यह प्रक्रिया कार्यपरिषद की 23 वीं बैठक 22 दिसंबर 22 से प्रचलन में है एवं 25 वीं

!.100 दिन के कार्यकाल में एमसीबीयू में भ्रष्टाचार के प्रति जीरो टॉलरेंस

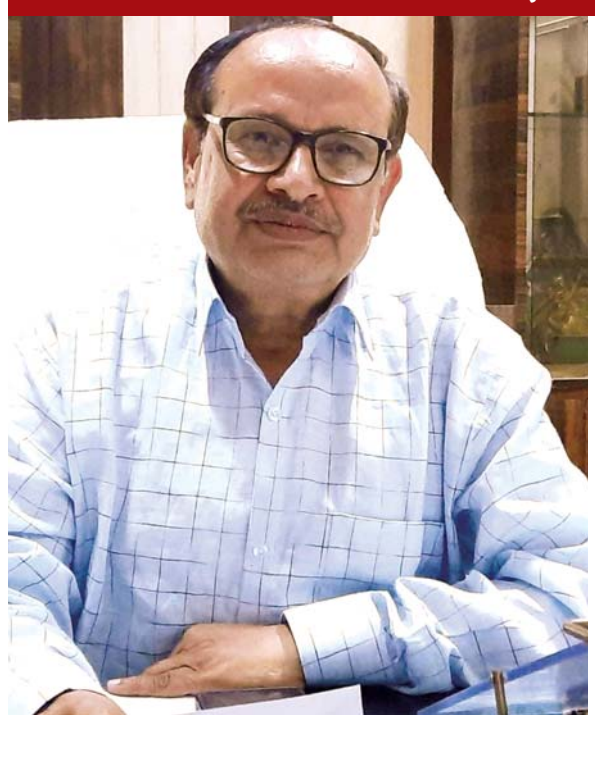

कार्यपरिषद की बैठक 18 अप्रैल 2023 को कार्यपरिषद एवं कार्यपरिषद द्वारा बनाई गई 7 सदस्यीय समिति द्वारा जारी है। इसमें कुलसचिव का कोई भी स्वतंत्र निर्णय नहीं है। आज दिनांक तक भर्ती हुई ही नहीं की गई है, तो फिर घोटाला कैसे हो गया? कार्य परिषद के द्वारा लिए गए निर्णय में चयन प्रक्रिया में केवल साक्षात्कार के आधार पर चयन करने का निर्णय लिया गया था तथा यह यह भी निर्णय लिया गया था कि यदि 16 पदों के लिए 160 से अधिक आवेदन आते हैं, तो लिखित परीक्षा के माध्यम से परीक्षार्थियों की संख्या कम करके के साक्षात्कार के द्वारा भर्ती की जाएगी। भर्ती के संबंध में विज्ञापन की शर्त 4 में यह यह प्रावधान किया गया कि कुलसचिव के पास भर्ती प्रक्रिया को किसी भी स्तर पर बिना किसी कारण के निरस्त करने का अधिकार सुरक्षित रहेगा। वर्तमान परिपेक्ष्य में माननीया कुलपति प्रो शुभा तिवारी द्वारा एक तटस्थ जांच कमेटी बना दी गई है, जो मीडिया अथवा सोशल मीडिया में फैल रही अफवाहों एवं शिकायतों की जांच करेगी। उच्च स्तरीय जांच के आधार पर चयन प्रक्रिया जारी रखने अथवा उसको निरस्त करने का निर्णय कार्यपरिषद के माध्यम से कुलसचिव द्वारा लिया जाएगा। यहां यह बताना उचित होगा कि यह प्रक्रिया माननीय उच्च न्यायालय में विचाराधीन याचिकाओं के अंतिम निर्णय के भी अधीन है। अतः आज की तिथि में कोई भी नियुक्ति नहीं हुई है तो फिर भर्ती में घोटाला कैसे हो गया? कुलसचिव प्रो. एसडी चतुवेर्दी ने यह भी कहा कि जब तक इस पद पर कार्य करेंगे तब तक ना गलत काम करेंगे और ना ही करने देंगे।

धार जिला न्यायालय से पेशी के दौरान पुलिस को चकमा देकर फरार हुआ आरोप गोलु भुरिया को सायबर क्राईम ब्रांच धार ने किया गिरफ्तार

फतवा समाचार ◈ धार

दिनांक 21.06.2023 को थाना तिरला के अपराध क्रमांक 149/23 धारा 363,366(क),376,376(2)(एन) भादवि व 3/4, 5एल/6 पाक्सो एक्ट मे आरोपी गोलु पिता कैलाश भुरिया जाति भील उम्र 32 साल निवासी ग्राम जुलवानिया थाना मानपुर जिला इंदौर को थाना तिरला द्वारा गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय धार पेश किया जा रहा था, तब आरोपी गोलु भुरिया न्यायालय परिसर धार से पुलिस को चकमा देकर हथकडी व जंजीर सहित फरार हो गया था। जिस पर से थाना नौगांव पर अपराध क्रमांक 269/23 धारा 224 भादवि का पंजीबद् किया गया था। उक्त प्रकरण मे फरार आरोपी गोलु भुरिया की धरपकड हेतु पुलिस अधीक्षक धार श्री मनोज कुमार सिंह द्वारा थाना नौगावं , थाना तिरला , थाना कोतवाली के साथ साथ सायबर क्राईम ब्राच टीम को भी लगाया गया था। तथा उक्त फरार आरोपी गोलु भुरिया की गिरफ्तारी पर पॉच हजार रू नगद पुरूस्कार की उदघोषणा की गई। प्रकरण मे पुलिस अधीक्षक धार श्री मनोज कुमार सिंह के मार्गदर्शन मे , अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री दैवेन्द्र पाटीदार व नगर पुलिस अधीक्षक धार श्री देवेन्द्र धुर्वे के निर्देशन में कार्य करते हुए आज दिनांक 26.06.23 को सायबर क्राईम ब्रांच प्रभारी निरीक्षक दिनेश शर्मा को मुखबिर द्वारा सूचना प्राप्त हुई कि उक्त फरार आरोपी गोलु भुरिया मानपुर होते हुए अपने घर जुलवानिया जाने वाला है। बाद निरीक्षक दिनेश शर्मा द्वारा अपनी सायबर क्राईम ब्रांच टीम प्र.आर राजेश, आर बलराम , प्रशांत सिंह चौहान के साथ मानपुर जाकर मानपुर बस स्टेण्ड से उक्त फरार आरोपी गोलु भुरिया को हिरासत मे लिया गया। बाद थाना नौगांव द्वारा कार्यवाही करते हुए आरोपी गोलु भुरिया के कब्जे से तिरला थाने की हथकडी व जंजीर को कोर्ट परिसर धार के पीछे स्थित सिंचाई विभाग के कंडम डम्फर के अंदर से बरामद की गई।

आरोपी गोलु भुरिया की धरपकड मे थाना तिरला के निरीक्षक जयराज सोलंकी , निलंबित उनि मनोज पाटीदार, निलंबित प्रआर प्रकाश भाबर व निलंबित आर महेन्द्र राजपुत व थाना नौगावं के पुलिस बल का भी योगदान रहा।

देरी से आई ट्रेन तो यात्रियों ने किया हंगामा:उतर गए रेलवे ट्रेक पर पैसेंजर

आरपीएफ ने किया हल्का बल प्रयोग

फतवा समाचार◈ जबलपुर

बारिश आते ही ट्रेन की रफ्तार धीमी हों जाती है, ऐसे में ट्रेनें एक- दो नहीं बल्कि कई घंटे देरी से चलती है। जबलपुर में देरी से आई ट्रेन पर भी यात्रियों का गुस्सा इस कदर फूटा कि लोग रेलवे ट्रैक में आ गए और जमकर हंगामा किया, इस दौरान नाराज यात्रियों को हटाने के लिए आरपीएफ को भी आकर मोर्चा संभालना पड़ा। ट्रेन नंबर 06509 बेंगलुरु-दानापुर क्लोन स्पेशल के 9 घंटे 17 मिनट देरी से आने और जगह जगह रुकने से परेशान यात्रियों ने जमकर हंगामा कर दिया। इस ट्रेन का समय जबलपुर आने का शाम 4:40 था जो कि रात 01:57 पर जबलपुर पहुंची। ट्रेन के जबलपुर पहुंचते ही यात्री नीचे उतर आए और रेलवे के खिलाफ जमकर प्रदर्शन किया। रात दो बजे स्टेशन में यात्रियों के बरसते पानी में पटरी पर बैठकर हंगामे सूचना मिलते ही आरपीएफ और जीआरपीएफ का बल आ गया और यात्रियों को ट्रैक से हटाया। यात्री को कहना था कि कहने को तो यह ट्रेन सुपरफास्ट है लेकिन पैसेंजर से कम नहीं थी, हर छोटे-बड़े स्टेशन में रुकना और धीमी रफ्तार से चलना ऐसा लग रहा था जैसे कि रेलवे यात्रियों के साथ ठगी कर रहा है। यात्री अभिषेक कुमार ने बताया कि ट्रेन का 1-2 घंटे लेट होना तो ठीक है लेकिन जिस ट्रेन को दोपहर को जबलपुर पहुंचना था वह देर रात पहुंच रही है।

हंगामें की सूचना पाकर मौके पर आरपीएफ और जीआरपीएफ का बल प्लेटफार्म नंबर चार पर पहुंच गया और पटरी पर हंगामा कर रहें यात्रियों पर हल्का बल प्रयोग कर रेल ट्रैक खाली हटाया, और यात्रियों को समझाइश दी तब जाकर यात्री वापस ट्रेन में बैठे, और ट्रेन आगे की ओर रवाना हुई ।

उत्तर की ओर जाने वाली 06509 दानापुर क्लोन स्पेशल 9 घंटे 17 मिनट, 01752 पनवेल- रीवा समर स्पेशल सुपरफास्ट 10 घंटे 47 मिनट, 03246 बेंगलुरु- दानापुर सुपरफास्ट स्पेशल 17 घंटे 4 मिनट, 11061 एलटीटी- जयनगर पवन एक्सप्रेस 10 घंटे 50 मिनट, 12390 चेन्नई- सेंट्रल गया वीकली 2 घंटे 46 मिनट, 11059 छपरा एक्सप्रेस 1 घंटे 22 मिनट, 11273 इटारसी-प्रयागराज छिवकी एक्सप्रेस 3 घंटे 42 मिनट देरी से चल रही है। इसी तरह दक्षिण की ओर जाने वाली ट्रेन नंबर 09026 दानापुर -वलसाड समर स्पेशल 6 घंटे 30 मिनट देर, 12335 भागलपुर- एलटीटी सुपरफास्ट 3 घंटे 35 मिनट देर, 19046 छपरा सूरत ताप्ती गंगा 3 घंटे 47 मिनट, 06076 दानापुर -चेन्नई सेंट्रल सुपरफास्ट स्पेशल 3 घंटे 9 मिनट, 12166 गोरखपुर-8 एलटीटी सुपरफास्ट 4 घंटे 56 मिनट देरी से चल रही हैं।

जिले में अब तक 114.9 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज पिछले साल की तुलना में इस वर्ष हुई अधिक बारिश

कमलेन्द्र पटेल ◈ कटनी

जिले में इस वर्ष 1 जून से 27 जून की प्रातः की अवधि तक कुल 114.9 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज की गई है। जबकि बीते वर्ष इसी अवधि के दौरान 96.9 मिलीमीटर वर्षा दर्ज की गई थी। इस प्रकार इस साल पिछले वर्ष की तुलना में 18.0 मिलीमीटर अधिक वर्षा दर्ज की गई है। अधीक्षक भू-अभिलेख मुन्ना लाल तिवारी से प्राप्त जानकारी के अनुसार इस साल अलोच्य अवधि तक वर्षा मापी केंद्र कटनी में 87.8 मिलीमीटर, रीठी में 85.8 मिली मीटर, बड़वारा में 125.4 मिलीमीटर, बरही में 90.0 मिलीमीटर, विजयराघवगढ़ में 72.1 मिलीमीटर, बहोरीबंद में 82.9 मिलीमीटर वर्षा दर्ज की गई। इसी प्रकार स्लीमनाबाद में 164.4 मिलीमीटर एवं ढीमरखेड़ा में 209.6 मिलीमीटर वास्तविक वर्षा दर्ज की गई।

डिंडोरी सिटी कोतवाली पुलिस की बड़ी कार्रवाई अवैध शराब तस्करी करते शराब के साथ तीन गिरफ्तार, एक फरार

फतवा समाचार ◈ डिंडौरी

छोटा हांथी पिकप वाहन से अवैध शराब की तस्करी

जिला मुख्यालय अबैध शराब करोवार को रोकने निरंतर प्रयास मे जिला प्रशासन द्वारा लगातार मुहिम चलाया जा रहा है।ओर रण नीति बनकर सफलता भी हाशिल कर रही है।मंगलवार की सुबह सिटी कोतवाली पुलिस ने मुखबिर की सूचना मिलने पर घेराबंदी कर एक पिकप वाहन से 21 पेटी अंग्रेजी अवैध शराब और एक बाइक जप्त की है । पुलिस ने अवैध शराब के कारोबार में लिप्त तीन युवकों को गिरफ्तार कर लिया है जबकि एक युवक फरार है। सिटी कोतवाली में पदस्थ सब इंस्पेक्टर मनोज त्रिपाठी ने बताया कि देर रात मुखबिर से सूचना मिली कि पिकप वाहन से शराब आ रही है। इसके बाद टीम गठित कर ऊपर टोला देवरा गांव में घेरा बंदी कर पिकप वाहन क्रमांक एम पी 20 एल बी 3929 को रोका वाहन में चार पेटी रम,05 पेटी बियर और 12 पेटी विस्की रखी हुई थी। एक बाइक क्रमांक एम पी 52 एम ई 2544 पिकप के आगे आगे चल रही थी। तीन आरोपी मुजीब पिता मोहम्मद वहीद खान, वार्ड क्रमांक 06, अक्षय कोरी पिता अजीव कुमार, अंकुश चौकसे पिता राम बिहारी चौकसे को गिरफ्तार कर लिया गया है।

एक आरोपी गौरव दुबे पिता प्रमोद दुबे गाड़ी छोड़कर फरार हो गया। पुलिस आबकारी एक्ट 34 (2) के तहत अपराध दर्ज कर लिया है। कार्यवाही में सब इंस्पेक्टर मनोज त्रिपाठी, ए एस आई सुधीर पटेल, राकेश यादव, प्रधान आरक्षक कृष्णपाल सिंह कोदू जोगी, हनुमान सिंह, राघवेंद्र सिंह, आरक्षक सुनील गुजर शामिल रहे।

भारतीय किसान संघ का ग्राम चौपाल में बनी धरना की रणनिति

30 जून 2023 से अनिश्चित कालीन हड़ताल करेगा किसान संघ

फतवा समाचार◈ डिंडोरी

शहपुरा किसानों की समस्या को लेकर भारतीय किसान संघ राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर पर लगातार कार्य कर रही है,समस्याओं का समाधान नहीं होने पर किसान संघ आंदोलन धरना प्रदर्शन हड़ताल करती है और शासन-प्रशासन को समस्याओ से रूबरू करवाती है जिससे समस्या का निराकरण हो सके । ज्ञात हो कि जिला डिण्डोरी आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र है जिनका जीवन खेती किसानी में निर्भर है, जिला में बार-बार किसानों के मुद्दे को मुख्यमंत्री के सामने उठाने के बाद भी समस्याओं का समाधान नहीं हो रहा है। बल्कि प्रशासन के द्वारा किसानों के रैली धरना प्रदर्शन ज्ञापन को राजनीतिक कहा जा रहा है।

जिस पर संघ नाराज होकर 30 जून 2023 से अनिश्चित कालीन हड़ताल करेगा

इसी कि रणनीति बनाने व किसान बंधुओ की समस्या को जानने के लिए विकासखंड शहपुरा के ग्राम मंझगांव पहुंचकर किसानों के साथ चौपाल लगाई जिसमें जानकारी लगी की चौरा बाँध का पानी ग्राम लालपुर तक पहुचने का है परन्तु ग्राम लालपुर तक पानी नही पहुँच पाता है और किसानों को केनाँल से पानी नही मिल पाता है जिससे किसान गेंहू की पैदावार नही ले पाते है ऐसे हालात में किसान गांव छोड़कर पलायन होने में मजबूर होते है । आज के इस चौपाल में भारतीय किसान संघ जिलाध्यक्ष बिहारीलाल साहू ने कहा की जब-तक किसानों की समस्याओ का निराकरण नही होता तब-तक किसान हड़ताल में रहेगा ।

इसी प्रकार जिलामंत्री एडवोकेट निर्मल कुमार साहू ने शासन-प्रशासन को चेतावनी दी है कि किसान आनाज देना जानता है तो समय आने में पानी भी पिलाना जानता है किसान हित में शासन-प्रशासन को कार्य करना पडेगा । इस चौपाल में भारतीय किसान संघ जिलाध्यक्ष बिहारीलाल साहू, जिलामंत्री एडवोकेट निर्मल कुमार, जिला सदस्य उदय सिंह, राजेन्द्र सिंह,

मंडला में 80 वर्ष की उम्र में लिख दिया 510 पन्नों का ग्रंथ मानस के मोती

फतवा समाचार ◈ मंडला

ग्राम अंजनिया निवासी सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक यदुनंदन सिंह पटेल ने 80 वर्ष की उम्र में युवाओं जैसा जोश दिखाते हुए 510 पन्ने के ग्रंथ मानस के मोती की अपनी हस्तलिपि में रचना की है। सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक यदुनंदन सिंह पटेल ने बताया कि युवा अवस्था से ही उनकी रूचि अध्यात्म की ओर रही है। शासकीय सेवा से निवृत्त होने के पश्चात जब उन्होंने अध्यात्मिक ग्रंथों के पठन की ओर कदम बढ़ाया तभी से कि मानस के मोती नाम का उनका यह मन में भाव आया कि आने वाली पीढ़ी के लिए कुछ ऐसा दस्तावेज तैयार किए जाएं जो उनके लिए हितकर साबित हो।

रामायण से की 500 शब्दों की खोज

यदुनंदन सिंह पटेल ने बताया मानस के मोती हस्तलिखित ग्रंथ श्रीरामचरितमानस पर आधारित एक शोध ग्रबंध है। उन्होंने तुलसीदास जी द्वारा रचित श्रीरामचरित मानस से उद्धृत शब्दावली से लगभग 500 शब्दों की खोज की गई है और अपनी कृति मानस के मोती में उन शब्दों से जुड़ी पंक्तियों का उल्लेख किया गया। कौन सा शब्द किस कांड के अंतर्गत किस दोहे का है इसका उल्लेख भी विशेष रूप किया गया है। ताकि समझने में आसानी हो। श्री पटेल ने इस ग्रंथ में मर्यादा पुरुषोतम श्रीराम के जीवन से जुड़े अनेक पहलुओं को रेखांकित करने का प्रयास किया है। उनका मानना है कि भगवान श्रीराम के जीवन चरित्र का अनुसरण कर मनुष्य अपनी जीवन यात्रा को सुगम बना सकता है।

अंतर्राष्ट्रीय नशा निरोधक दिवस पर ग्राम-देवरी हटाई में विधिक साक्षरता शिविर का हुआ आयोजन

कमलेन्द्र पटेल ◈ कटनी

मध्यप्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर के निदेर्शानुसार माननीय प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश एवं अध्यक्ष धरमिन्दर सिंह राठौड़ के मार्गदर्शन एवं सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, निलेश कुमार जिरेती के निर्देशन में अंतर्राष्ट्रीय नशा निरोधक दिवस पर ग्राम-देवरी हटाई जिला कटनी में विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सामाजिक कार्यकर्ता रवि नामदेव द्वारा ग्राम देवरी हटाई के ग्राम वासियों को नशे की रोकथाम तथा नशा से होने वाले दुष्प्रभाव के बारे में नालसा की योजना नशा उन्मूलन योजना विषय पर विस्तार पूर्वक जानकारी प्रदान की गई। साथ ही विधिक सलाह एवं निःशुल्क विधिक सहायता के संबंध में विस्तार पूर्वक जानकारी प्रदान की गई।

प्रसव के रेफरल मामलों पर लापरवाही करना 12 स्वास्थ्य कर्मियों को पड़ी मंहगी

दो चिकित्सा अधिकारी,दो नर्सिंग आफिसर सहित तीन सी.एच.ओ एवं तीन एएनएम को जारी हुआ कारण बताओ नोटिस

फतवा समाचार◈ कटनी

कलेक्टर अवि प्रसाद ने स्वास्थ्य महकमें को प्रसव के रेफरल प्रकरणों में लापरवाही बर्दाश्त नहीं किये जाने के निर्देश दिए है। उन्होंने स्वास्थ्य अमले को स्पष्ट निर्देश दिए है कि संस्थागत प्रसव कराये जायें, अनावश्यक रूप से सामान्य प्रसव के मामलों को रेफर नहीं किया जाये। साथ ही गर्भवती महिला की एएनसी के दौरान निर्धारित प्रोटोकॉल के तहत सभी जांचें कराई जायें। इन सब मामलों में कोताही बरतने पर कड़ी कार्यवाही की जायेगी। विगत दिवस स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा के दौरान दो दिवस पूर्व जिले के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र एवं उपस्वास्थ केन्द्र में पदस्थ दो चिकित्सा अधिकारी, दो नर्सिंग आफिसर सहित तीन सी.एच.ओ एवं तीन ए.एन.एम द्वारा गर्भवती महिला को प्रसव हेतु जिला चिकित्सालय रिफर करना सही नहीं पाये जाने तथा गर्भवती महिलाओं की एएनसी के दौरान नियमानुसार जांचें नही किये जाने पर कलेक्टर श्री प्रसाद द्वारा नाराजगी व्यक्त करते हुए संबंधितों को नोटिस जारी करनें के निर्देश मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी को दिए गए थे।

इन्हे हुआ कारण बताओ नोटिस जारी

कलेक्टर श्री प्रसाद के निर्देश के बाद मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी द्वारा 12 स्वास्थ्य कर्मियों को नोटिस जारी कर दो दिनों के भीतर जवाब तलब किया गया है।

जिन स्वास्थ्य कर्मचारियों को नोटिस जारी किया गया है उनमें सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र रीठी जिला कटनी के चिकित्सा अधिकारी डॉ प्रमोद नाहर, नर्सिंग आफिसर चेतना तुरकर तथा विनीता पटेल का नाम शामिल है इनके द्वारा गर्भवती महिला को जिला चिकित्सालय प्रसव हेतु रेफर किया जाना सही नहीं पाया गया। इसके अतिरिक्त सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र बरही जिला कटनी की चिकित्सा अधिकारी डॉ भारती सिह, उपस्वास्थ्य केन्द्र चरी ब्लॉक विजयराघवगढ़ की ए.एन.एम नीलू सूर्यवंशी एवं सी.एच.ओ ताराचंद पालीवाल, उपस्वास्थ्य केन्द्र धूरी ब्लॉक बहोरीबंद की ए.एन.एम आराधना पटेल एवं सी.एच.ओ रीता तिवारी, उपस्थ्वास्थ्य केन्द्र इमलिया ब्लॉक बहोरीबंद की ए.एन.एम राजुल जैन तथा सी.एच.ओ प्रियंका दुबे का नाम शामिल है इन्होनें ए.एन.सी के दौरान गर्भवती महिलाओं की एक भी जांचें नहीं की थी तथा जिला चिकित्सालय द्वारा गर्भवती महिलाओं को प्रसव हेतु रेफर किया जाना सही नहीं बताया गया।

कार्यालय कलेक्ट्रेट के कक्ष क्रमांक 99 में बाढ़ आपदा नियंत्रण कक्ष

कटनी - अपर कलेक्टर श्री रोमानुस टोप्पो ने आपदा प्रबंधन अधिनियम 2005 की धारा 30 के तहत जिला प्राधिकरण की शक्तियों के तहत जिला कार्यालय में स्थापित आपदा नियंत्रण कक्ष (बाढ़ आपदा) कक्ष की स्थापना की है। जारी आदेशानुसार स्थापित आपदा नियंत्रण कक्ष क्रमांक-99 में श्री रोमानुस टोप्पो अपर कलेक्टर (नोडल अधिकारी) एवं दिनेश कुमार विश्वकर्मा जिला प्रबंधक लोक सेवा प्रबंधन विभाग को सहायक नोडल अधिकारी नियुक्त किया जाकर इनके मार्गदर्शन में कर्मचारियों की आगामी आदेश पर्यन्त तक डयूटी लगाई जाकर निर्धारित दिवस व समय अनुसार डयूटी में उपस्थित रहने हेतु आदेशित किया गया है। आपदा नियंत्रण कक्ष में सोमवार से रविवार तक प्रातः 6 बजे से 3 शिफ्ट में 12 कर्मचारियों सहित अतिरिक्त दल में 4 कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई जाकर कर्मचारियों को नियमित रूप से निर्धारित दिन एवं समय में डयूटी पर उपस्थित रहनें तथा ड्यूटी पर बिना पूर्व सूचना के अनुपस्थित पाये जाने पर संबंधित कि विरूद्ध नियमानुसार कठोर कार्यवाही करनें हेतु निर्देशित किया गया है। संबंधित कर्मचारियों को निर्धारित समयानुसार अगले पाली के दल को रजिस्टर पंजी एवं अन्य जानकारी से सूचित करने के बाद भी आपदा नियंत्रण कक्ष छोडनें, बाढ़ आपदा की समस्त जानकारी दिनेश कुमार विश्वकर्मा जिला प्रबंधक सहायक नोडल अधिकारी लोक सेवा प्रबंधन विभाग को सूचित करेंगे तथा समय-समय पर डीसीसीसी सुपरवाईजर को भी अवगत करानें हेतु निर्देशित किया गया है।

मुख्यमंत्री कन्या विवाह में एक दूजे के हुए 436 जोड़े, आर्थिक रूप से कमजोर कन्याओं का हुआ विवाह

गसामुदयिक भवन बिलौजी में आयोजित समारोह में 49 जोड़े अग्नि को सांक्षी मानकर बधे विवाह बंधन में

फतवा समाचार◈ सिंगरौली

मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना के तहत आज जिले के सभी जनपदो में आयोजित विवाह समारोह में 626 जाड़ो को विवाह सम्पन्न कराया गया। वही अटल सामुदायिक भवन बिलौजी में आयोजित विवाह सामरोह में नगरीय क्षेत्र के 27 तथा जनपद पंचायत बैढ़न क्षेत्र के 24 जोड़ो का विवाह सम्पन्न कराया गया। समारोह में नगर निगम अध्यक्ष देवेश पाण्डेय, भाजपा जिलाध्यक्ष रामसुमिरन गुप्ता, जनपद पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी अशोक मिश्रा के द्वारा नव विवाहित जोड़ो को अपना आशिर्वाद दिया गया।

एकलव्य आदर्श आवसीय विद्यालय बरगवा में आयोजित सामूहिक विवाह कार्यक्रम में 168 जोड़े विवाह बंधन में बधे समारोह के दौरान देवसर विधानसभा के विधायक श्री सुभाष रामचरित बर्मा, कलेक्टर श्री अरूण परमार, जनपद अध्यक्ष देवसर प्रणव पाठक, नगर परिषद अध्यक्ष बरगवा श्रीमती प्रमिला बर्मा, एसडीएम विकास सिंह, अतिरिक्त मुख्य कार्यपालन अधिकारी

जिला पंचायत अनुराग मोदी, पार्षद श्रीमती अर्चन, जनपद सदस्य रामधनी यादव, मानिका राम पनिका, बबोल सिंह, के द्वारा विवाह बंधन मे बधे जोड़ो को आशीष स्वरूप 49 हजार रुपए का चेक एवं अपनी सुभकामाना दी गई।

इस अवसर पर विधायक श्री बर्मा ने कहा कि हमारे हिंदू धर्म मे बताया गया है कि एक कन्या का विवाह भी यदि जीवन में न कर पाए तो जीवन व्यर्थ हो जाता है. जिसकी बेटी नही होती वह किसी की बेटी को गोद लेकर कन्यादान करता है. हमारे मुख्यमंत्री जी कितने सौभाग्यशाली हैं, जो लाखों कन्याओं का विवाह करवा चुके हैं. यह हमारे जीवन की सफलता और सार्थकता है. मै मुख्यमंत्री जी का अभिनंदन करता हूं. हमारे देश में गरीब व्यक्ति विवाह करने में कर्ज में डूब जाते थे, गरीबों की कोई सहायता नही करता था, आज मुख्यमंत्री कन्यादान से गरीब आदमी कर्ज मुक्त हो गया पहले लड़की अभिश्राप थी अब वरदान बन गई. सारी जिम्मेदारी सरकार ने ले ली है। उन्होने विवाह बंधन में बधे जोडो से कहा कि आप खुशहाल रहे यही मेरी भगवान से प्रार्थना है। वही चितरंगी में आयोजित समारोह में 219 जोड़े विवाह बंधन में बधे।

नगर निगम अध्यक्ष सहित जन प्रतिनधि बने विवाह के सांक्षी जोड़ो को दी अपनी सुभकामना वा आशिर्वाद

वही सामुदायिक भवन बिलौजी में आयोजित समारोह में निगम अध्यक्ष श्री देवेश पाण्डेय ने कहा कि मै सभी बेटियों को बधाई देते हुए जीवन स्वस्थ रहने और फूलो तरह की तरह हमेशा खिले रहने कमना करता हू। उन्होने कहा कि पहले कन्याओं का विवाह करने में पिता को रात में नींद नहीं आती थी, किंतु राज्य सरकार ने मुख्यमंत्री कन्या विवाह/निकाय योजना प्रारंभ कर सभी कन्याओं के माता-पिता की चिंता दूर करने का कार्य किया है। योजना में सरकार द्वारा कन्या को 49 हजार रुपए का चेक दिया जाता है। इससे वे अपने नए परिवार में जाकर मर्जी से सुविधानुसार गृहस्थी का सामान खरीद सकेंगी। एक समय ऐसा था जब गरीब परिवार कर्ज में डूबे रहते थे, अपनी जमीन गिरवी रख कर बेटियों का विवाह करते थे। आज सभी गरीब बेटियों की शादी राज्य सरकार करवा रही है। जो बड़े पुण्य का कार्य है। उन्होने उपस्थित वर वधुओ को अपना आशिर्वाद दिया एवं भावी जीवन के सुखमय होने की कामाना की। इस असवर पर नगर पालिक निगम सिंगरौली के पार्षद गण, जिला पंचायत के सदस्य गण, जनपद पंचायतो के सदस्य गण, ग्राम पंचायतो के सरपंच सहित वर वधुओ के माता पिता एवं उन रिश्तेदार उपस्थित रहे।

कोटर जेई के साथ हुई मारपीट थाना में दर्ज कराई शिकायत

श्रीधर सिंह ◈ सतना

कोटर विघुत विभाग के जेई आर के तिवारी के साथ गोलाहटा में हुई मारपीट कोटर थाना में दर्ज कराई शिकायत पिडित जेई ने बताया की गोलाहटा से आ रहे थे तभी एक व्यक्ति गाडी के सामने मोटरसाइकिल लगा कर कोटर जेई से गाली गलौज करने लगा जब वह गाली देने से मना किये तो डन्डा लेकर मारपीट करने लगा जिससे जेई के हाथ में और पीठ पर चोट भी लगी है। कोटर जेई के साथ मारपीट करने वाले आरोपी

के खिलाफ कोटर पुलिस ने 294.353.352.506 के तहत कार्यवाही की गई है।

मॉडल हायर सेकेंडरी मझौली में प्रवेश हेतु अंतिम तिथि 30 जून

सीधी। शसाकी मॉडल हायर सेकेंडरी मझौली में प्रवेश हेतु अंतिम तिथि 30 जून 2023 है। प्रचार्य मॉडल हायर सेकेंडरी स्कूल मझौली ने जानकारी देकर बताया है कि मॉडल स्कूल मझौली में कक्षा 6, कक्षा 9, और कक्षा 11 वी में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राएं प्रवेश हेतु 30 जून तक समस्त दस्तावेज लेकर मॉडल स्कूल मझौली में एडमिशन करा सकते हैं।

16 वर्ष की बालिका ने फांसी लगाकर की आत्महत्या

सिंगरौली । सरई थाना क्षेत्र के झुरहानार गांव निवासी एक नाबालिग का शव संदिग्धहाल में फांसी के फंदे से लटकता मिला है। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पीएम कराया है। मृतका सावित्री सिंह गोड़ पिता जगजीवन सिंह गोड़ 16 वर्ष निवासी झुहरानार कक्षा 10वीं पढ़ रही थी। बताया गया है कि सोमवार को उसका शव घर के कमरे में लटकता हुआ देख परिजन रोने चिल्लाने लगे थे, शोर-गुल सुनकर पहुंचे आसपास के लोगों ने घटना की जानकारी पुलिस को दी।पुलिस ने पंचनामा तैयार करने से पहले लटकते शव का फोटो खींचते हुए जांच की। बताया जाता है कि शव जमीन से सटा हुआ था, जिससे मौत को लेकर आशंका व्यक्त की जा रही थी।

मस्जिद ए आयशा में ईदुल अजहा की नमाज 29 को

सिंगरौली। कुर्बानी का पर्व ईदुल अजहा का पर्व जुमेरात के दिन 29 जून को मनाया जायेगा। ईदुल अजहा पर्व को लेकर शहर भर में हर्ष उल्लास के साथ तैयारियां चल रही हैं। जिला मुख्यालय के मुस्तफा नगर बलियरी रोड वैढ़न स्थित मस्जिदे आइशा की सदर हज्जिन शमां भारती ने बताया कि जुमेरात के दिन 29 जून को सुबह 7.45 बजे ईदुल अजहा की नमाज अदा की जायेगी। उन्होने तमाम मुस्लिम धर्मावलम्बियों से गुजारिश की है कि अहले इस्लाम शिरकत फरमा कर दारैन की बरकात हासिल करें। उन्होने बताया कि मस्जिद में नमाज अदा करने हेतु सारी तैयारियां पूर्ण कर ली गयी हैं। नमाज के दौरान महिला तथा पुरूष मस्जिद में उपस्थित होकर देश में अमन चैन व तरक्की की दुआ मांगेंगे।

पुलिस अधीक्षक ने शिकायतों पर की जनसुनवाई

सिंगरौली। पुलिस अधीक्षक जिला सिंगरौली मो. यूसुफ कुरैशी (भा.पु.से.) के निर्देशन में आज दिनांक 27 जून दिन-मंगलवार को पुलिस अधीक्षक कार्यालय परिसर में बने रूस्तम जी कॉनफ्रेन्स हॉल में जनसुनवाई की गई। जनसुनवाई में नगर पुलिस अधीक्षक विंध्यनगर, देवेश कुमार पाठक, निरीक्षक अर्चना द्विवेदी, महिला थाना प्रभारी, उपनिरीक्षक उदय सिंह करिहार थाना वैढ़न एंव शहरी थाना व पु.अ. कार्यालय के अधिकारी/कर्मचारीगण उपस्थित रहे। नगर पुलिस पुलिस अधीक्षक द्वारा विभिन्न थाना क्षेत्रों से आए करीबन प्रत्येक आवेदकों की शिकायतो को जनसुनवाई के माध्यम से गंभीरतापूर्वक सुना जाकर एवं संबंधित थाना प्रभारी एवं चौकी प्रभारी से बात कर त्वरित जॉच कर आवेदक की शिकायत का निराकरण किये जाने के निर्देश दिये गये।

बैंकों में लंबित स्वरोजगार के प्रकरण स्वीकृत और वितरित करायें : कलेक्टर

फतवा समाचार◈ रीवा

कलेक्ट्रेट सभागार में जिला स्तरीय बैंकर्स सलाहकार समिति की विशेष बैठक आयोजित की गयी। बैठक मे कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने कहा कि सभी बैंक शाखा प्रबंधक बैंकों में लंबित स्वरोजगार के प्रकरण स्वीकृत और वितरित करायें। आगामी 30 जून को रोजगार दिवस का आयोजन किया जा रहा है। इसमें अधिक से अधिक प्रकरणों का वितरण सुनिश्चित करें। मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजना में इस वर्ष 2100 प्रकरणों का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। वर्तमान वित्तीय वर्ष में योजना की प्रगति बहुत कम है। अग्रणी बैंक प्रबंधक लंबित प्रकरणों के निराकरण की नियमित मानीटरिंग करें। स्वरोजगार योजनाओं में प्रकरणों के निराकरण के लिए श्रेष्ठ कार्य करने वाले बैंक मैनेजरों को सम्मानित किया जायेगा।

कलेक्टर ने कहा कि विभागीय अधिकारी लक्ष्य के अनुरूप बैंकों में प्रकरण दर्ज करायें। शाखा प्रबंधक यदि कोई प्रकरण निरस्त करते हैं तो उसके कारण का उल्लेख करें। राष्ट्रीय आजीविका मिशन के पंजाब नेशनल बैंक में लंबित 50 प्रकरण स्वीकृत

करायें। स्वनिधि योजना से भी 300 से अधिक प्रकरण लंबित हैं। इनका निराकरण करें। उद्यानिकी विभाग की योजनाओं में 105 प्रकरणों के विरूद्ध केवल 20 प्रकरण अब तक दर्ज हुये हैं। लक्ष्य के अनुसार प्रकरणों में दर्ज करायें। उद्यानिकी विभाग की योजनाओं में स्वीकृत एक करोड़ 33 लाख के सात प्रकरणों का वितरण करायें। जिला समन्वयक आजीविका मिशन महिला स्वसहायता समूहों के बैंक खाते प्राथमिकता से खुलवाकर 137 प्रकरणों में ऋण एवं अनुदान का वितरण करायें।

बैठक में जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी सौरभ सोनवणे ने कहा कि पशुपालन विभाग और उद्यानिकी विभाग द्वारा दर्ज प्रकरण बैंकर्स आनलाइन दर्ज करें। नगर निगम के सभागार में 30 जून दोपहर 12 बजे से रोजगार दिवस का आयोजन किया जा रहा है। इसमें विभिन्न योजनाओं के हितग्राहियों को ऋण एवं अनुदान का वितरण करायें। बैठक में प्रभारी महाप्रबंधक जिला उद्योग केन्द्र जेपी तिवारी ने मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजना की जानकारी दी। अग्रणी बैंक प्रबंधक एसके निगम ने कहा कि बैंक शाखा प्रबंधक मुद्रा योजना के हितग्राहियों को उद्यम क्रांति योजना से जोड़ देंगे तो उन्हें दोहरा लाभ मिलेगा। बैठक में बैंक शाखा प्रबंधक तथा सभी विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

पहली बारिश में ही चुरहट की दुकानों एवं घरों में भरा पानी, हुआ नुकसान

सीधी। चुरहट क्षेत्र में शनिवार की रात झमाझम बारिश होने के कारण कई दुकानों एवं घरों में भी पानी घर जाने से लोगों का काफी नुकसान भी हुआ है। जानकारी के मुताबिक नगर पालिका परिषद अंतर्गत चुरहट तहसील के सामने नाली ना होने के कारण पहाड़ का पूरी तरह से पानी सूरज आरा मशीन की दुकान में पानी भर जाने के कारण मशीन एवं अन्य प्रकार की सामग्री का नुकसान हुआ है। वही चर्चा के दौरान सूरज कुमार गुप्ता ने बताया है कि शनिवार की रात जोरदार बारिश होने के कारण हमारे आरा मशीन की दुकान में पानी बाहर जाने के कारण लाखों का नुकसान हुआ है ।सूरज गुप्ता ने बताया कि नाली आधी अधूरी होने के कारण सीधे पहाड़ का पानी हमारे दुकान के अंदर घुस जाता है और हर बार की तरह इस बार भी हमें पानी की मार झेलना पड़ा है। वही सुरेश गुप्ता द्वारा नगर परिषद में विगत कई वर्षों से शिकायत की जा रही है कि बारिश के कारण हमेशा हमारे आराम मिल मशीन में पानी घुस जाता है। कई बार नुकसान हुआ परंतु इसको सुनने वाला कोई आला अधिकारी तैयार नहीं है। सूरज शामिल का कहना है कि नाली ना होने के कारण पूरे पहाड़ी का पानी हमारे घर में एवं मशीन के अंदर घुस जाता है जिसमें हर बरसात में हमको लाखों रुपए का नुकसान उठाना पड़ता है जिसकी शिकायत नगर परिषद में कई बार दे चुके हैं। कुछ महीने पहले नाली बनने का आदेश पारित हुआ था उस समय भी हमने कहा था कि यहां पर नाली निर्माण जरूरी है परंतु नगर पंचायत के आला अधिकारी हमारी बात को सुनने के लिए तैयार नहीं जिसके चलते हर बरसात में हमको यह पानी बरसने से नुकसान उठाना पड़ता है।

सीधी विधायक के प्रयासों से सेमरिया को मिलेगी नगर परिषद की सौगात

आवश्यक कार्यवाही हुई प्रारंभ

सीधी। विधायक केदारनाथ शुक्ला का एक और प्रयास शीघ्र मूर्त रूप लेने जा रहा है। जिले के सेमरिया कस्बे को अब जल्दी नगर परिषद की सौगात हासिल होगी। सेमरिया क्षेत्र के करीब दर्जन भर गांवों को शामिल कर सेमरिया को नगर परिषद का गठन करने सीधी कलेक्टर ने हरी झण्डी दे दी है । देवनार से पश्चिमी इलाके की तासीर भले ही भिन्न रही हो विधायक के अनुकूल नही रही किंतु वह अपने दायित्वों से कभी विमुख नही रहे।यही कारण है कि सेमरिया थाना व नगर परिषद बनने जा रही है ।इस क्षेत्र के लिये यह दो काम उल्लेखनीय रहेंगें । गौरतलब है कि सीधी विधायक केदारनाथ शुक्ला लोगों की बार-बार उठ रही मांग को

मद्देनजर रखते हुए सेमरिया को नगर परिषद का दर्जा दिलाने के लिए निरंतर प्रयासरत रहे हैं और मुख्यमंत्री द्वारा भी विधायक की इस मांग को स्वीकृति प्रदान करते हुए सेमरिया को नगर परिषद एवं चौकी सेमरिया को थाना बनाए जाने की घोषणा की गई थी। अब इसको मूर्त रूप देने के लिए प्रशासकीय प्रक्रिया शुरू हो गई है। शहरी विकास अभिकरण द्वारा एसडीएम गोपद बनास से सेमरिया के संबंध में जानकारी मांगी गई है। शहरी विकास अभिकरण द्वारा एसडीएम गोपद बनास को पत्र जारी करते हुए कहा गया है कि मुख्यमंत्री की घोषणा क्र. सी2186- ग्राम पंचायत सेमरिया को नगर परिषद बनाया जायेगा के संबंध में ग्राम पंचायत सेमरिया जिला सीधी को नगर परिषद बनाये जानें हेतु मध्यप्रदेश नगर पालिका अधिनियम 1961 की धारा 5 में निहित प्रावधानों के अन्तर्गत विभागीय अधिसूचना क्र. 64 एफ-1-19-2009 अठारह-3 दिनांक 27 दिसम्बर 2011 के अनुसार 09 बिन्दुओं की जानकारी एवं नगरीय विकास एवं आवास विभाग के पत्र क्र. एफ 118 2021 / 18-3 दिनांक 06.09.2021 के अनुसार समस्त क्षेत्र / ग्राम / ग्राम पंचायतों को दर्शाते हुये प्रस्तावित नगर पालिका का मानचित्र, आपस में दूरी एवं गूगल इमेज सहित राजस्व मानचित्र पर चिन्हित कर स्पष्ट अभिमत के साथ निर्धारित बिन्दुओं की रिपोर्ट शीघ्र भेजी जानी है। इसमें ग्राम पंचायत में सम्मिलित ग्रामों की जनसंख्या एवं सघनता (संलग्न निर्धारित प्रपत्र-1 में),ग्राम पंचायत में गत तीन वर्ष के आय व्यय के आंकड़े (संलग्न निर्धारित प्रपत्र -02 में) ग्राम पंचायत में चल अचल सम्पत्ति (संलग्न निर्धारित प्रपत्र- 3 में) ग्राम पंचायत में शहरी क्षेत्र की सुविधायें (संलग्न निर्धारित प्रपत्र-4 में), ग्राम पंचायत में अधिरोपित कर एवं विगत तीन वर्ष की वसूली (संलग्न निर्धारित प्रपत्र-05 में), ग्राम पंचायत में स्थित भवन (संलग्न निर्धारित प्रपत्र-6 में),ग्राम पंचायत में जल प्रदाय की स्थिति (संलग्न निर्धारित प्रपत्र-6 में), ग्राम पंचायत में लगने वाले बाजार, पशु बाजार (संलग्न निर्धारित प्रपत्र-6 में) ग्राम पंचायत में स्थित भवन एवं भवन की बैठक क्षमता (संलग्न निर्धारित प्रपत्र 6 में) भेजना सुनिश्चित किया गया है ।

विहिप एवं बजरंग दल गौ रक्षा विभाग ने राज्यपाल के नाम कलेक्टर को सौंपा ज्ञापन

सीधी। विश्व हिंदू परिषद गोरक्षा प्रमुख उदय शंकर मिश्रा बजरंग दल गोरक्षा प्रमुख सतीश द्विवेदी नेतृत्व में जिला प्रशासन से गौ हत्यारों पर कड़ी से कड़ी कार्यवाही की मांग की। जहा पर मुसलमानों के त्यौहार ईदउलजुहा पर देशभर में लाखों पशुओं की हत्याएँ होती हैं लेकिन, सुनने में आया है कि इस बार 29 जून को मनाए जाने वाले ईद-उल-जुहा पर भारत के स्थान-स्थान में लाखों गौवंश को काटने के लिए उन्हें पहले से ही लाकर रखा गया है।

हालांकि, दुनियाभर के अन्य देशों में ईद पर गौवंश नहीं काटा जाता तो, भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश में ही गौवंश को काटने का षडयन्त्र और हठ क्यों किया जाता है, निश्चित ही, ईद के नाम पर हिन्दुओं की आस्था को चोट पहुंचाने के लिए गौवंश की दुर्दान्त हत्याएं की जाती हैं और इस बार भी उनकी योजना है जो कि हिन्दू समाज को किसी भी परिस्थिति में स्वीकार्य नहीं है।

सामान्य सभा की बैठक न बुलाने से जिला पंचायत अध्यक्ष खफा

सिंगरौली। जिला पंचायत सिंगरौली में इन दिनों सब कुछ ठीक -ठाक नहीं चल रहा है। जिसके चलते लगातार जिला पंचायत सुर्खियों में बना हुआ है। सीईओ की मनमानी से अब जिला पंचायत के कई सदस्य एवं अध्यक्ष, उपाध्यक्ष भी खफा हैं। वहीं करीब दो महीने से सामान्य सभा एवं सामान्य प्रशासन बैठक की तारीख तय नहीं हो पा रही है। दरअसल जिला पंचायत सिंगरौली सामान्य सभा एवं सामान्य प्रशासन की बैठक तकरीबन दो महीने से नहीं आयोजित की गयी है। जबकि सूत्र बताते हैं कि जिला पंचायत अध्यक्ष सोनम सिंह ने सामान्य सभा की बैठक बुलाने के लिए कई बार मंशा जाहिर कर चुकी हैं, किन्तु जिला पंचायत

के मुख्य कार्यपालन अधिकारी तारीख ही नहीं तय कर पा रहे हैं। चर्चाएं यहां तक हैं कि जिला पंचायत सीईओ सामान्य सभा की बैठक बुलाने के इच्छुक नहीं हैं और इसे टालना चाहते हैं। इसके पीछे कारण यह बताया जा रहा है कि पंचायतों में मची भर्रेशाही जांच एवं कार्रवाई के नाम पर लीपापोती व पिछले शैक्षणिक सत्र में गणवेश की खरीदी में राशि की हुई बंदरबांट सहित कई मुद्दों को लेकर जिला पंचायत के सदस्य सवाल उठाकर घेरने का मन बनाया है। जिला पंचायत के अधिकारी, कर्मचारियों को डर है कि यदि यह मुद्दा उठा तो हंगामा होने के पूरे आसार हैं। इस हंगामे से बचने के लिए सामान्य सभा एवं सामान्य प्रशासन की बैठक टाली जा रही है। ताकि धीरे-धीरे समय कट जाय और सितम्बर, अक्टूबर महीने में विधानसभा चुनाव के लिए आचार संहिता लग जायेगी तो कुछ महीने के लिए राहत मिल जायेगी। हालांकि यह तो केवल चर्चा है, लेकिन इन चर्चाओं एवं बातों में कितना दम है यह तो केवल जिला पंचायत के अधिकारी ही अपना मंशा जाहिर कर सकते हैं।

जनसुनवाई में 263 आवेदन पत्र प्राप्त

फतवा समाचार◈ रीवा

कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने आज हुई जनसुनवाई में 263 आवेदन पत्रों की सुनवाई कर संबंधित अधिकारियों को आवेदन पत्रों का निराकरण करने के निर्देश दिये। जनसुनवाई में बटवारा, सीमांकन, नक्शा तरमीम करवाने, रास्ते का अतिक्रमण हटवाने के आवेदन प्राप्त हुए। कलेक्ट्रेट के मोहन सभागार में आयोजित जनसुनवाई में जिला पंचायत के सीईओ सौरभ सोनवणे, अपर कलेक्टर नीलमणि अग्निहोत्री तथा संयुक्त कलेक्टर संजीव पाण्डेय ने भी आवेदकों की कठिनाईयों का निराकरण किया। दुआरी के रामकरण सोनी ने आवेदन दिया कि उनके घर के सामने शासकीय निस्तार की जमीन खसरा नंबर 477 मुख्य रोड से मिलती है। शासकीय जमीन में रास्ता है वह आराजी क्रमांक 468 है। मुख्य रोड में पानी, गदगी एवं वर्षा के पानी की निकासी के लिये नाली का निर्माण न करने से रास्ते में ही पानी भरा रहता है। उक्त रास्ते में सड़क एवं नाली का निर्माण कराया जाय। कलेक्टर ने नाली का निर्माण कराने के लिये जिला पंचायत के सीईओ को निर्देश दिये हैं। ग्राम बरूआ के सूरज शुक्ला ने आम रास्ता खुलवाने एवं अवैध अतिक्रमण हटवाने के लिये आवेदन दिया है। सिरमौर के ग्राम पल्हान के आशीष सिंह ने आवेदन दिया कि घर के पास की शासकीय जमीन में अतिक्रमण कर रास्ता अवरूद्ध किया गया है। शासकीय जमीन में सड़क का निर्माण कराया जाय। कलेक्टर ने तहसीलदार को आवेदनों का निराकरण करने के निर्देश दिये हैं। डिहिया ग्राम में हीरालाल द्विवेदी ने आवेदन दिया कि ग्राम मझपटिया से मड़फा डिहिया तक सड़क निर्माण के लिये कास्तकारों ने अपनी जमीन दान में दी है जिसकी आराजी नंबर 163, 164, 148, 147, 52, 53, 54, 55, 169 एवं 171 है। लेकिन सड़क का निर्माण नहीं कराया गया। सड़क का निर्माण कार्य कराया जाय। कलेक्टर ने तहसीलदार सिरमौर को निराकरण करने के निर्देश दिये। जवा के मनिगवां ग्राम के मुन्नालाल तिवारी ने आवेदन दिया कि तहसीलदार एवं रीडर ने कूटरचित हेराफेरी कर आराजी नंबर 1304 रकवई 8.94 एकड़ भूमि का हेरफेर किया है। जवा के तहसीलदार चन्द्रमणि सोनी एवं रीडर देवेन्द्र पाण्डेय ने प्रार्थी की खेती की जमीन परिवर्तित कर दी है। कम्प्यूटर से देखने में पता चला कि राजस्व प्रकरण क्रमांक 0039/अ.6/23-24 में कूटरचित्र व हेराफेरी की गई है। तहसीलदार ने कहा कि धारा 32 (भू-राजव संघिता) के तहत आवेदन दो। कलेक्टर ने तहसीलदार जवा को प्रकरण का निराकरण करने के निर्देश दिये है। मनगवां के रघुनाथ कहार ने आवेदन दिया कि उसकी भूमि का सीमांकन राजस्व अमले द्वारा किया गया। सीमांकन के उपरांत भूमि का रकवा अधिक दिखाया गया सीमांकन प्रतिवेदन में कम रकवा का नक्शा बनाया गया, तैयार सीमांकन प्रतिवेदन का सत्यापन नहीं कराया गया इससे मेरी स्वामित्व की भूमि में प्रधानमंत्री आवास का निर्माण नहीं कर पा रहा हूं। कलेक्टर ने मनगवां के एसडीएम को निराकरण करने के निर्देश दिये।

सलैया ग्राम के राधेश्याम सिंह ने आवेदन दिया कि उसकी भूमि क्रमांक 718 में सूर्यमणि सिंह के पुत्रों द्वारा जेसीबी से नाला खोदकर आवागमन अवरूद्ध कर दिया गया है रास्ता खुलवाया जाय। कलेक्टर ने मनगवां के तहसीलदार को आवेदन का निराकरण करने के निर्देश दिये। हनुमना के ग्राम बरौही के देवेन्द्र प्रसाद ने आवेदन दिया कि खसरा क्रमांक 214/1/1/1/1/1 रकवा 1.599, 214/1/7 रकवा 0.254, 214/8 रकवा 0.405 के अंश रकवा पर अतिक्रमणकारियों द्वारा अतिक्रमण कर लिया गया है। इसे मुक्त कराया जाय। कलेक्टर ने हनुमना के तहसीलदार को आवेदन का निराकरण करने के निर्देश दिये। पन्नी ग्राम के रामसुखद तिवारी ने सीमांकन व नक्शा तरमीम कराने का आवेदन दिया ग्राम दूबी के मोहन सेन ने आराजी नंबर 343/2 का सीमांकन एवं नक्शा तरमीम कराने का आवेदन दिया। सेमरिया के ग्राम शाहपुर के पंडितान टोला वार्ड क्रमांक एक के रामकृपाल मिश्र ने आवेदन दिया कि उनके पुस्तैनी रास्ते पर रामगुलाब मिश्र, विजय कुमार मिश्र, अजय कुमार मिश्र एवं अमर मिश्र द्वारा अतिक्रमण कर लिया गया है इसे मुक्त कराया जाय। कलेक्टर ने तहसीलदार को आवेदन का निराकरण करने के निर्देश दिये। सेमरिया के ग्राम मोहरबा 441 के अशुतोष पाण्डेय, पड़ोखर के सुरेन्द्र कुमार विश्वकर्मा, ग्राम नाउनखुर्द के सदाशिवधर द्विवेदी ने सीमांकन एवं नक्शा कराने के लिए आवेदन दिया। मऊगंज के ग्राम धूरेहटा के वार्ड नंबर 12 के रामजी सोंधिया ने प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास की तीसरी किस्त दिलवाने तथा बरौ के लल्ला प्रसाद मिश्र ने बटवारा कराने के लिए आवेदन दिया।

विधानसभा चुनाव के लिए एक्टिव हुई बसपा

विंध्य, बुंदेलखंड और चंबल में खोया जनाधार पाने के लिए बना रही रणनीति

भोपाल नप्र। मायावती की बहुजन समाज पार्टी मध्य प्रदेश में इस साल के अंत में होने वाले विधानसभा चुनावों के लिए तैयारियों में जुटी है। कभी विंध्य और बुंदेलखंड क्षेत्र में काफी मजबूत रही बसपा लंबे समय से अलग-थलग पड़ी है। पिछले दो दिनों में रीवा और सतना के तीन बड़े नेताओं ने बसपा का दामन थामा है। चुनाव से पहले पार्टी के लिए यह बड़ी उपलब्धि है। इससे विंध्य क्षेत्र में पार्टी की ताकत बढ़ेगी, लेकिन दो दशक पहले तक एमपी में तीसरी बड़ी ताकत बनने का सपना देखने वाली बसपा के लिए अभी रास्ता काफी लंबा है।

1993 और 1998 के विधानसभा चुनावों के बाद बसपा मध्य प्रदेश की सियासत में बड़ी ताकत के रूप में उभरी थी। साल 1993 के विधानसभा में बसपा के 11 विधायक थे। साल 1998 में भी पार्टी के 11 विधायकों ने जीत दर्ज की थी। इसके बाद बसपा प्रदेश की सियासत में निष्क्रिय होती चली गई। 2018 में बसपा के महज दो विधायक चुने गए थे। इनमें से भी एक संजीव कुशवाहा बीजेपी में शामिल हो चुके हैं। 2003 के विधानसभा चुनाव में पार्टी के दो विधायक जीते थे लेकिन उसे 7.26 प्रतिशत वोट मिले थे। 2008 में उसे 8.97 प्रतिशत मत मिले और सात विधायक जीते थे। 2013 में 6.29 प्रतिशत वोटों के साथ चार विधायक बसपा के टिकट पर विधानसभा पहुंचने में सफल रहे थे। 2018 में वोट का आंकड़ा कम होकर 5.1 फीसदी रह गया। 2022 में उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में करारी हार के बाद बसपा नेतृत्व मध्य प्रदेश में फिर से एक्टिव हुआ। स्थानीय निकाय चुनावों में पार्टी ने बड़ी संख्या में अपने उम्मीदवार उतारे।

हालांकि, पार्टी को ज्यादा कामयाबी नहीं मिली। इसके बाद पार्टी ने ग्वालियर, चंबल, विंध्य और बुंदेलखंड क्षेत्र में ताकत बढ़ाने की रणनीति बनाई। इसके लिए जिला और विधानसभा स्तर पर कार्यकर्ता सम्मेलनों की शुरुआत हुई। निष्क्रिय पड़े संगठन में जान फूंकने के लिए नए पदाधिकारी नियुक्त किए गए। इस साल 26 अप्रैल से ग्वालियर से बहुजनराज अधिकार यात्रा की शुरुआत हुई।

कमजोर और दिशाहीन नेतृत्व

एमपी में बसपा के कमजोर होने का सबसे बड़ा कारण मजबूत नेतृत्व का अभाव है। दूसरे दलों से आए नेताओं की लोकप्रियता का फायदा उठाकर पार्टी विधानसभा में सदस्यों की संख्या बढ़ाने में सफल रही, लेकिन उन्हें अपने साथ बनाए रखने में नाकामयाब रही। मौका मिलते ही इसके विधायक दूसरी पार्टियों में शामिल हो गए। पार्टी नेतृत्व की भी इसमें अहम भूमिका रही। चुनाव जीतने के बाद बीजेपी और कांग्रेस से अलग रहने की बजाय पार्टी नेतृत्व उन्हीं को अपना समर्थन देता रहा।

2023 के लिए है ये रणनीति

2023 के विधानसभा चुनावों के लिए बसपा की एक ही रणनीति है कि किसी भी दल की सरकार उसक समर्थन के बिना नहीं बने। उसकी नजर बीजेपी और कांग्रेस के वैसे नेताओं पर है जो अपनी पार्टियों से असंतुष्ट हैं। एमपी में अनुसूचित जाति के लिए 35 और अनुसूचित जनजाति के लिए 47 सीटें आरक्षित हैं। उसकी सारी रणनीति इन्हीं 82 सीटों पर केंद्रित है। यदि इन सीटों पर उसे उम्मीदों के अनुरूप कामयाबी मिली तो वह फिर से तीसरी ताकत के रूप में उभर सकती है।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने कहा

मप्र के मन में मोदी, मोदी के मन में मप्र

भोपाल नप्र। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में 'मेरा बूथ-सबसे मजबूत' अभियान कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस दौरान भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने नारा देते हुए कहा कि एमपी के मन में मोदी जी और मोदी जी के मन में मध्य प्रदेश हैं। पीएम मोदी ने मेरा बूथ सबसे मजबूत अभियान के लिए मध्य प्रदेश की धरती को चुना, इसके लिए एमपी भाजपा और कार्यकर्ताओं की ओर से आपका स्वागत और अभिनंदन करता हूं। वीडी शर्मा ने अपने संबोधन में कहा कि मध्य प्रदेश की भारतीय जनता पार्टी ने आपकी भावना के अनुरूप कुशाभाऊ ठाकरे के जन्म शताब्दी वर्ष पर हम सब लोगों ने मिलकर 10 दिन में 100 घंटे का समर्पण कर बूथ विस्तारक अभियान चलाया। भाजपा के सभी कार्यकर्ताओं और नेताओं ने मिलकर प्रत्येक बूथ को डिजीटल बनाने का अभियान चलाया था। आज मध्य प्रदेश में 39 लाख 15 हजार 327 कार्यकर्ता, पन्ना प्रमुख, पन्ना समिति तक और प्रत्येक बूथ 64 हजार 100 बूथों का डिजीटलकरण कर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सभी कार्यकर्ताओं ने मिलकर 10 हजार 906 शक्ति केंद्र पर पूरे मध्य प्रदेश के अंदर 'बूथ विजय संकल्प' का अभियान लिया है। संगठन एप के माध्यम से 64100 बूथों पर ऑनलाइन 'मन की बात' कार्यक्रम का आयोजन किया। 25 हजार 923 बूथों तक मध्य प्रदेश की भारतीय जनता पार्टी की ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन हुआ और बाद में लगभग 51 लाख बूथों तक एमपी भाजपा कार्यकर्ताओं ने ऑफलाइन 'मन की बात' कार्यक्रम को पूरे मध्य प्रदेश में करने का प्रयास किया हैं।

पूरी रात हार्न बजाया, कांच फोड़े, युवती ने खाया जहर, मनचला रात में ही कर रहा था मिलने की जिद

भोपाल नप्र। प्रदेश के इंदौर शहर में एक मनचले की हरकतों से परेशान होकर युवती ने जहर खाकर आत्महत्या करने की कोशिश की। आरोपी ने युवती के घर के सामने पूरी रात हार्न बजाया, खिडकी के कांच फोड दिए। परेशान युवती ने जहर खाकर जान देने की कोशिश की। शराब के नशे में आरोपी युवक युवती से रात में ही मिलने की जिद कर रहा था। केस दर्ज होने के बाद आरोपितों के साथी ने काल कर धमकाना शुरू कर दिया। घटना द्वारकापुरी थाना क्षेत्र की है। 22 वर्षीय युवती की शिकायत पर पुलिस ने केस दर्ज किया है। टीआई अल्का मेनिया उपाध्ये के मुताबिक, आरोपित के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। आरोपित पहले भी हरकतें कर चुका है। आरोपित मयंक उर्फ मंकू बुधलानी युवती से करीब 4 साल से सामान्य बातचीत करता था। उसके द्वारा प्रेम का इजहार करने पर युवती ने बात करने से मना कर दिया। रविवार रात मंकू ने कहा कि उसको हिचकियां आ रही है और युवती से बात करने की जीद करने लगा। युवती द्वारा फोन बंद करने पर आरोपित कार लेकर घर आया और रात 2 बजे से 5 बजे तक हार्न बताया। बाद में पथराव कर घर के कांच फोड़ दिए। मंकू शराब के नशे में आया था। उसने बाहर खड़ी गाड़ियों को भी टक्कर मार दी। सुबह युवती की मां और जीजा समझाने गए तो मंकू ने धमकाया और युवती के जीजा से कहा कि अब तेरी बेटी को भी ले जाउंगा। युवती ने उसकी धमकी के कारण जहर खा लिया।

भाजपा नेता ने 12 बोर बदूंक से पत्नी की गोली मारकर हत्या की

भोपाल नप्र। शहर के रातीबड़ थाना इलाके में भाजपा नेता द्वारा पत्नि की 12 बोर की बंदूक से गोली मारकर हत्या किये जाने का सनसनीखेज मामला सामने आया है। आरोपी पति को शराब के नशे की लत थी, लेकिन इन दिनो वो काफी अधिक शराब पी रहा था, जिसे लेकर बीती रात सवा 12 बजे उसका पत्नि से विवाद हो गया था। पत्नि की हत्या के बाद आरोपी भाजपा नेता फरार हो गया जिसकी पुलिस तलाश कर रही है। मिली जानकारी के अनुसार नीलबड़ में स्थित साई नगर कालोनी में रहने वाला राजेंद्र पांडे भाजपा का टीटीनगर मंडल का उपाध्यक्ष है। उसकी पत्नि 55 वर्षीय शीला पांडे भी भारतीय जनता पार्टी की सक्रिय कार्यकर्ता थी, और रातीबड़ मंडल की उपाध्यक्ष थी। राजेंद्र पांडे को शराब के नशे की लत थी, जिसका विरोध करने पर पत्नी शीला पांडे से आये दिन उसका विवाद होता था। बताया गया है, राजेंद्र पांडे सोमवार को दिन से ही शराब पी रहा था। रात को भी शराब पीने पर पत्नि ने उसे मना किया जिसे लेकर एक बार फिर रात करीब 12 बजे उनके बीच विवाद शुरु हो गया। बढ़ते विवाद के दौरान गुस्साये राजेंद्र ने अपनी 12 बोर की बंदूक से पत्नी को गोली मारकर उसकी हत्या कर दी। आसपास के लोगो ने बताया कि राजेंद्र पांडे और शीला की दो बेटियां हैं। दोनों की शादी हो चुकी है। इन दिनो छोटी बेटी गर्भवती होने के कारण प्रसव के लिए माता-पिता के पास आई हुई थी। बताया गया है कि आरोपी भाजपा नेता राजेंद्र अपनी बंदूक से अक्सर फायर करता रहता था। रात सवा 12 बजे भी जब उसने फायर किया तो आसपास के लोगो को लगा कि इस बार भी उसने नशे में हवाई फायर किया होगा। गोली की आवाज सुनकर पड़ोसी घर से बाहर आये तब उन्हें पता चला कि राजेंद्र ने पत्नी की गोली मारकर हत्या कर दी है।

27 साल का युवक रचा रहा था 12 साल की मासूम से विवाह

भोपाल नप्र। गुनगा थाना इलाके में स्थित रतुआ में 27 साल का युवक 12 साल की किशोरी के साथ विवाह रचाने की तैयारी में था, गनीमत रहीं की उसके विवाह करने से पहले ही इसकी सूचना चाइल्ड लाइन को मिल गई और चाइल्ड लाइन टीम मौके पर जा धमकी। बाद में सूचना मिलने पर पहुंची पुलिस युवक और मासूम किशोरी के परिजनो को पुलिस थाने लेकर आई। शुरुआती जॉच में सामने आया की यूवक ने बच्ची के परिजनो को शादी करने के लिये रकम दी थी। इसके बाद पुलिस ने किशोरी और युवक के परिजनो के खिलाफ किशोर न्याय अधिनियम समेत अन्य धाराओं में प्रकरण दर्ज किया है। थाना पुलिस ने बताया कि लालघाटी रतुआ गांव में रहने वाली 12 साल की किशोरी का परिवार बीते तीन साल से क्रेशर में काम करते हुए यहीं रह रहा है। वहीं दुपाड़िया में रहने वाले सुरेंद्र जाट से किशोरी के परिवार वालो की जान पहचान थी। 27 साल का सुरेंद्र जाट उनकी 12 साल की बेटी से शादी करना चाहता था। दोनो पक्षो में हुई बातचीत के बाद लालघाटी रतुआ में सोमवार को शादी का आयोजन रखा गया था। तय शर्तों के अनुसार किशोरी के परिवार वालो को सुरेंद्र ने शादी करने के बदले बीस हजार की रकम दी थी। लेकिन बाल विवाह की जानकारी लगते ही चाइल्ड लाइन की टीम मौके पर जा पहुंची। घटना की पुष्टि होने पर पुलिस को घटना की जानकारी दी।

देश को विश्व पटल पर पहुंचाने का लक्ष्य रखा पीएम मोदी नेः सिंधिया

भोपाल नप्र। नागरिक उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारत को विश्व पटल पर पहुंचाने का लक्ष्य रखा है। उनकी अमेरिका यात्रा भी इसी लक्ष्य का हिस्सा है। इतिहास में पहली बार 130 देशों ने प्रधानमंत्री के कार्यक्रम में भागीदारी की। यह बात उन्होंने सोमवार को इंदौर में कही। श्री सिंधिया यहां भाजपा नेता और प्रदेश के पूर्व मंत्री सुरेन्द्र पटवा के यहां विवाह समारोह में शामिल होने आए थे। श्री सिंधिया ने पटना में विपक्षी दलों की बैठक पर भी तंज कसा। उन्होंने कहा कि लालूप्रसाद ने अपने दिल की बात कहकर यह साबित कर दिया कि बैठक का मूलमंत्र राहुल गांधी की शादी ही था। सब एकता का पाठ पढ़ाने के लिए एकजुट हुए थे लेकिन वहां ऐसा कुछ नहीं हुआ। इससे पूर्व एयरपोर्ट पर श्री सिंधिया का स्वागत मंत्री तुलसीराम सिलावट, संसद सदस्य शंकर लालवानी, भाजपा नेता सुदर्शन गुप्ता , मधु वर्मा ,विधायक मालिनी गौड़, विधायक मनोज चौधरी खातेगांव,पूर्व विधायक जीतू जिराती, प्रमोद टंडन, मोहन सेंगर, राजू चौहान सहित भाजपा कार्यकर्ताओं ने किया । विमानतल पर मीडिया से बातचीत में उन्होंने कहा कि पीएम ने नया इतिहास बनाने का लक्ष्य रखा है। सबने उनकी प्रशंसा की है। संयुक्त राष्ट्र में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। उनका इजिप्त दौरा भी ऐतिहासिक रहा।सिंधिया ने कहा कि आज भारत सोच और विचारधारा के साथ विकास के पथ पर अग्रसर हो रहा है। भारत की प्रगति अकेले नहीं संपूर्ण विश्व की प्रगति है।

मुख्यमंत्री ने दी भाजपा अध्यक्ष नड्डा को विदाई

भोपाल। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने आज राज्यसभा सांसद और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी. नड्डा को भोपाल से वापस नई दिल्ली रवाना होने पर स्टेट हैंगर पर विदाई दी। नड्डा दो दिवसीय प्रवास पर भोपाल आए थे। सांसद वी.डी. शर्मा और अन्य कई जन-प्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

महाकाल सवारी में नई भजन मंडलियां नहीं होगी शामिल अधिक मास होने से इस बार निकलेगी दस सवारी

भोपाल नप्र। प्रदेश की धार्मिक नगरी उज्जैन में श्रावण-भादौ मास में निकलने वाली भगवान महाकाल की सवारी में इस बार नए भजन मंडलों को शामिल नहीं किया जाएगा। इनकी सदस्य संख्या भी सीमित की जाएगी। इस निर्णय रविवार को हुई प्रबंध समिति की बैठक में लिया गया। इस बार श्रावण अधिक मास होने से श्रावण-भादौ मास में भगवान महाकाल की दस सवारी निकलेगी।

कलेक्टर कुमार पुरुषोत्तम की अध्यक्षता में हुई प्रबंध समिति की बैठक में सवारियों की व्यवस्था व भीड़ नियंत्रण पर भी मंथन हुआ इसमें इस बार किसी भी नए भजन मंडल या दल को सवारी में शामिल नहीं करने का निर्णय लिया गया। मंदिर समिति सवारी में भीड़ नियंत्रण के लिए

व्यापक कदम उठाने जा रही है। सवारी को कारवां भी छोटा किया जाएगा। ताकि भक्तों को कम समय में सुविधा से भगवान महाकाल के दर्शन हो सके। पारंपरिक भजन मंडलियां, जो अब तक सवारी में शामिल होती आई हैं उन्हें ही अनुमति दी जाएगी।इन भजन मंडलियों को भी सदस्य संख्या समिति करना पड़ेगी।

मंडल के सदस्यों को समिति द्वारा जारी आईडी कार्ड लगाना तथा ड्रेस कोड का पालन करना अनिवार्य रहेगा। इससे सदस्यों की संख्या सिमित करने में सहायता मिलेगी। प्रबंध समिति द्वारा लागू निर्देशों का पालन नहीं करने वाली भजन मंडलियों को अगली सवारी में शामिल नहीं होने दिया जाएगा।

सवारी में शामिल भजन मंडलियां अपने वाहनों पर भगवान के विभिन्न मुखारविंद रखकर निकलती है। वाहनों पर बड़े बडे डीजे साउंड भी रखे जाते हैं। समिति बीते कई वर्षों से इस पर रोक लगाने के निर्देश जारी करती आ रही है। लेकिन नियमों का पालन होता नजर नहीं आ रहा है। इस बार बैठक में कलेक्टर ने इन दोनों नियमों का संख्ती से पालन कराने के निर्देश जारी किए हैं।

आदेश पर अमल नहीं करने वाले मंडल के विरुद्ध कार्रवाई होगी। बताया जाता है सवारी में व्यवस्था बनाने के लिए मंदिर समिति को एक प्रस्ताव प्राप्त हुआ है। इसमें सवारी में शामिल होने वाली भजन मंडलियां व झांझ डमरू दल को सवारी में शामिल करने के बजाय, संपूर्ण सवारी मार्ग पर मंच लगाकर प्रस्तुति देने की व्यवस्था की जाए। इससे सवारी में भीड़ भी नहीं होगी तथा देश विदेश से आने वाले भक्त कम समय में सुविधा से भगवान महाकाल के दर्शन कर सकेंगे।

अगले तीन दिनों तक जारी रहेगा जोरदार वर्षा का दौर मप्र के अधिकतर जिलों में अच्छी वर्षा की सौगात

सबसे ज्यादा वर्षा प्रदेश के पूर्वी हिस्सों में दर्ज की गई

भोपाल नप्र। बंगाल की खाड़ी से लगातार नमी आ रही है, जिसके चलते प्रदेशभर में अगले तीन दिनों तक जोरदार वर्षा का दौर जारी रहेगा। पूरे मध्य प्रदेश पर छा चुके दक्षिण-पश्चिमी मानसून ने सोमवार को अधिकतर जिलों में गरज-चमक के साथ अच्छी वर्षा की सौगात दी। सबसे ज्यादा वर्षा प्रदेश के पूर्वी हिस्सों में दर्ज की गई। सोमवार सुबह से शाम 5.30 बजे के बीच मात्र नौ घंटों में उमरिया में सबसे ज्यादा 132.0 मिमी, जबकि मंडला में 63.0 मिमी तो जबलपुर में 28.1 मिमी वर्षा दर्ज की गई।

पूर्व विज्ञानी अजय शुक्ला ने बताया कि वर्तमान में एक साथ कई प्रणालियां सक्रिय हैं। एक तरफ बंगाल की खाड़ी के उत्तर-पश्चिमी हिस्से एवं उससे लगे ओडिशा एवं बंगाल पर कम दबाव का क्षेत्र बन गया है।चक्रवात बिपर्जय कमजोर पड़ने के बाद हवा के ऊपरी भाग में चक्रवात के रूप में अब भी दक्षिणी उत्तर प्रदेश

पर बना हुआ है। पूर्व-पश्चिम द्रोणिका उत्तरी पंजाब से ओडिशा के आसपास कम दबाव के क्षेत्र तक बनी है, जो उत्तर प्रदेश, उत्तर-पश्चिमी मप्र और छत्तीसगढ़ से होकर ओडिशा तक जा रही है। अरब सागर एवं उससे लगे गुजरात पर हवा के ऊपरी भाग में चक्रवात बना हुआ है। मौसम विभाग के मुताबिक 29 जून तक कई स्थानों पर भारी वर्षा तो कुछ स्थानों पर अतिभारी वर्षा का अनुमान है।

भोपाल, विदिशा, रायसेन, सीहोर, राजगढ़, नर्मदापुरम, बैतूल, हरदा, जबलपुर, नरसिंहपुर, छिंदवाड़ा, मंडला समेत कई जिलों में लगातार तीन से चार दिन भारी वर्षा हो सकती है। इसके अलावा 29 जून के बीच सीहोर, नर्मदापुरम, बैतूल, हरदा, उज्जैन, देवास, शाजापुर, आगर-मालवा, मंदसौर, जबलपुर, नरसिंहपुर, छिंदवाड़ा, सिवनी, मंडला, बालाघाट में भारी वर्षा हो सकती है।

इ्रग केस में भाजपा नेता का बेटा गिरफ्तार

70 करोड़ रुपये के एमडीएमए केस में हुई कार्रवाई

भोपाल। प्रदेश के इंदौर शहर में ड्रग केस में फरार चल रहे एक भाजपा नेता के बेटे को क्राइम ब्रांच ने गिरफ्तार किया है। आरोपी की 70 करोड़ रुपये कीमती मिथाइनडाइआक्सी मैथे मफेटामाइन (एमडीएमए) केस में क्राइम ब्रांच को लंबे समय से तलाश थी। प्राप्त जानकारी के अनुसार, भाजपा नेता कमाल खान के बेटे बिलाल खान को गिरफ्तार किया है। क्राइम ब्रांच को बिलाल की ढाई साल से तलाश थी। बिलाल की गिरफ्तारी नहीं होने पर 15 जून की रात बजरंग दल ने प्रदर्शन किया था। इस दौरान पुलिस ने लाठीचार्ज भी किया था। अतिरिक्त पुलिस आयुक्त (अपराध) राजेश हिंगणकर के मुताबिक मरियम अपार्टमेंट अहिल्यापुरा (मेन रोड) निवासी बिलाल कुख्यात तस्कर रईस खान के संपर्क में था।रईस की गिरफ्तारी के वक्त बिलाल पुलिस को चकमा देकर भाग गया। क्राइम ब्रांच डीसीपी निमिष अग्रवाल ने उसकी गिरफ्तारी पर चार हजार रुपये का इनाम घोषित कर कोर्ट से गिरफ्तारी वारंट जारी करवा दिया था। सोमवार को पुलिस ने बिलाल को छोटी ग्वालटोली क्षेत्र की एक होटल से गिरफ्तार कर लिया। पुलिस बिलाल से ड्रग सप्लाई से जुड़े अन्य लोगों के बारे में पूछताछ कर रही है। सूत्रों के मुताबिक बिलाल सस्ते दामों पर खरीद कर शहर के विभिन्न हिस्सों में सप्लाई करने लगा। बिलाल का नाम आरोपितों की सूची में जुड़ते ही पुलिस पर गिरफ्तारी न करने का दबाव आने लगा। डीसीपी ने उसके खिलाफ वारंट जारी करवा दिया।

ट्रांसको ने ऊर्जीकृत किया सिवनी मालवा में 40 एम व्ही ए क्षमता का ट्रांसफार्मर, नर्मदापुरम् जिले की पारेषण क्षमता में हुई बढ़ोत्तरी

भोपाल नप्र। एम.पी. ट्रांसको (मध्यप्रदेश पावर ट्रांसमिशन कंपनी) ने नर्मदापुरम जिले में अपनी ट्रांसफारमेशन क्षमता में बढ़ोत्तरी करते हुए 132 के व्ही सबस्टेशन सिवनी मालवा में एक अतिरिक्त 40 एमव्हीए क्षमता का नया पावर ट्रांसफार्मर ऊर्जीकृत किया है। ऊर्जा मंत्री प्रद्युमन सिंह तोमर ने बताया कि इस ट्रांसफार्मर से विद्युत आपूर्ति प्रारंभ हो जाने से क्षेत्र के 198 गांव के तकरीबन 54300 कृषि एवं घरेलू विद्युत उपभोक्ताओं को फायदा पहुँचेगा। अब उन्हें भरोसेमंद उच्च गुणवत्तापूर्ण विद्युत सप्लाई समुचित वोल्टेज पर उपलब्ध रहेगी। नर्मदापुरम जिले के सिवनी मालवा 132 केव्ही सबस्टेशन से 33 केव्ही के 02 नये फीडर निकलने वाले हैं जो तहसील मुख्यालय सिवनी मालवा एवं 8 किलोमीटर दूर स्थित धर्मकुण्डी क्षेत्र के करीब 9000 विद्युत उपभोक्ताओं को विद्युत आपूर्ति करेंगे। इसी की तैयारी के मद्देनजर एमपी ट्रांसको ने मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी की मांग के अनुरूप समय पूर्व इस ट्रांसफार्मर को स्थापित कर ऊर्जीकृत किया है।

33 के व्ही के 06 फीडर से होती है सिवनी मालवा क्षेत्र में विद्युत आपूर्ति

एमपी ट्रांसको नर्मदापुरम् के कार्यपालन अभियंता लक्ष्मण आर्या ने बताया कि 132 के व्ही सबस्टेशन सिवनी मालवा से एम पी ट्रांसको वर्तमान में 33 के व्ही के 6 फीडरों के माध्यम से विद्युत आपूर्ति करती है। इनमें सिवनी मालवा, धर्मकुण्डी, पगधाल, शिवपुर, बावरी एवं सूरजपुर क्षेत्र शामिल हैं। इनकी संख्या बढ़कर भविष्य में 8 हो जायेगी। इस नये 40 एम व्ही ए ट्रांसफार्मर के स्थापित हो जाने से सिवनी मालवा सबस्टेशन की ट्रांसफारमेशन क्षमता बढ़कर 90 एम व्ही ए की हो गई है। नर्मदापुरम् जिले में ट्रांसमिशन कंपनी अपने 220 के व्ही के 3 सबस्टेशन और 132 के व्ही के 6 सबस्टेशन के माध्यम से विद्युत पारेषण करती है। अब नर्मदापुरम् जिले की कुल ट्रांसफारमेशन क्षमता बढ़कर 1925 एम व्ही ए की हो गई है। इसमें 220 के व्ही साइड 1080 एम व्ही ए तथा 132 के व्ही साइड 845 एम व्ही ए की स्थापित क्षमता शामिल है।

संक्षिप्त समाचार

क्रेडिट कार्ड की लिमिट बढ़ाने का झांसा देकर महिला को लगाई एक लाख की चपत

भोपाल नप्र। टीटी नगर थाना इलाके में एक महिला को क्रेडिट कार्ड की लिमिट बढ़ाने का नंबर तलाश कर उसपर संपर्क करना महंगा पड़ गया। दूसरी और से फोन रिसीव करने वाले सायबर ठग ने उसे अपने जाल में फंसाते हुए एक लाख की चतप लगा दी। पुलिस के अनुसार विकास नगर गोविंदपुरा में रहने वाली 35 वर्षीय दीपिका तोमर पति पुष्पेंद्र तोमर ने लिखित शिकायत करते हुए बताया कि वो प्रायवेट काम करती है। साल 2022 में 5 दिसंबर को किसी काम से पति के साथ टीटी नगर इलाके में स्थित आईसीआईसीआई बैंक पहुंची थी। वहॉ उन्होनें गूगल पर क्रेडिट कार्ड की लिमिट बढ़ाने के लिए ऑनलाइन नंबर सर्च किया और उस मोबाइल नंबर पर फोन लगाया। दूसरी और से युवक ने फोन रिसीव करते हुए बातचीत कर उनकी लिमिट बढ़ाने का झांसा दिया। इसके बाद शातिर ने उनके मोबाइल पर एनिडेस्क एप डाउनलोड कराकर उसे लॉगिन कराया और उनको रजिस्ट्रैशन के नाम पर सौ रुपये का भुगतान करने का कहते हुए उसके कार्ड की सारी जानकारी लेते हुए उनके एकांउट से करीब एक लाख की रकम निकाल ली। ठगी का अहसास होने पर महिला ने साइबर क्राइम में शिकायती आवेदन दिया था, जिसकी लंबी जॉच के बाद सायबर क्राइम के प्रतिवेदन पर टीटी नगर पुलिस ने मामला दर्ज कर मोबाइल और एकांउट नंबर के आधार पर उनकी सुरागशी के प्रयास शुरु कर दिये है।

स्कूल से गायब हुई मासूम को पुलिस ने 24 घंटे में हरियाणा के अम्बाला कैंट से किया दस्तयाब

भोपाल नप्र। राजधानी की गोविंदपुरा पुलिस ने स्कूली छात्रा के गायब हो जाने पर तत्काल कार्यवाही करते हुए छात्रा को 24 घण्टे में हरियाणा के अम्बाला कैंट से दस्तयाब करने में सफलता हासिल की है। मामले में जीआरपी पुलिस अम्बाला एवं आरपीएफ पुलिस अम्बाला की अहम मदद रही जिनकी सुझबुझ से नाबालिक बच्ची को बरामद कर लिया गया। बताया गया है कि परिवार वाले छात्रा को बच्ची को आईआईटी की कोचिंग करवा रहे थे। लेकिन दबाब सहन न कर पाने के कारण बच्ची स्कूल से बिना घरवालो को बताए अमृतसर एक्सप्रेस मे बैठकर भोपाल से अमृतसर के लिए रवाना हो गई थी। छात्रा ने सफर के दौरान अपने बचाव के लिए स्कूल ड्रेस बदलकर सिविल कपडे पहन लिए व चेहरे पर मास्क लगा लिया था। इतना ही नहीं रास्ते में आने वाले मुख्य रेल्वे स्टेशन पर पहुँचने से पहले ही वो हर बार अपना मोबाईल फोनस्विच आफ कर लेती थी। वहीं परिवार वालो से सूचना मिलने पर पुलिस मोबाईल लोकेशन के आधार पर लगातार बच्ची की लोकेशन ट्रैक कर रही थी। छात्रा की लगातार सुरागशी के लिये टीम ने 60 सीसीटीवी कैमरो के फुटेज खंगाले। पुलिस के अनुसार एक महिला ने थाना पुलिस को सूचना देते हुए बताया कि 24 जून को सुबह आठ बजे उसकी 16 वर्षीय बेटी रोज की तरह वेन से गोविन्दपुरा स्थित निजी स्कूल गई थी। बाद में दोपहर 3 बजे उसे लाने ले जाने वाले वैन चालक ने फोन कर महिला को फोन कर बताया कि उनकी बेटी स्कूल मे नही मिल रही है।

विश्व कप के पांच वन-डे मैचों की मेजबानी से धर्मशाला के पर्यटन को मिलेगा एक नया आयाम: अरुण धूमल

धर्मशाला। आईपीएल कमेटी के अध्यक्ष अरुण सिंह धूमल ने कहा कि वन-डे वर्ल्ड कप के पांच मैचों की मेजबानी धर्मशाला स्टेडियम को मिलना एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने कहा कि इससे धर्मशाला के पर्यटन को एक नया आयाम मिलेगा। पयर्टन की दृष्टि से धर्मशाला एक महत्वपूर्ण स्थल है, अब उसे ओर अधिक भुनाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि विश्व की सभी बड़ी आठ टीमें धर्मशाला में मैच खेलेंगी, जो सभी देशों के खिलाड़ियों के साथ-साथ उनके दर्शकों की मेजबानी के लिए भी महत्वपूर्ण रहेगा। उन्होंने कहा कि धर्मशाला सहित हिमाचल को पूरे विश्व में ब्रांडिंग करनी होगी। पूरे विश्व के खेल प्रेमियों को हिमाचल के टूरिज्म को आगे बढ़ाने का मौका मिलेगा। अरुण धूमल ने कहा कि इस दौरान अंतरराष्ट्रीय कुल्लू दशहरा भी रहने वाला है। सरकार को टूरिज्म सर्किल के लिए काम करने की जरूरत है, जिससे अन्य जिलों को भी जोड़ा जा सके। उन्होंने कहा कि एचपीसीए ने पहले ही तैयारी जारी रखी है, जिससे आईपीएल के दो मैचों में उसका फायदा देखने को मिला है। अरुण ने कहा कि इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए अब इस मौके का बेहतरीन लाभ उठा सकें। दर्शकों को बेहतरीन अनुवभ करवाने के लिए प्रयास किया जाएगा। हिमाचल की कला व संस्कृति को भी बढ़ाएंगे। मोहाली में इस बार मैचों की मेजबानी न मिलने के सवाल पर कहा कि आठ वेन्यू को ही मैचों की मेजबानी का मौका मिलना है, तो उस पर अधिक टिप्पणी नहीं करना चाहेंगे।

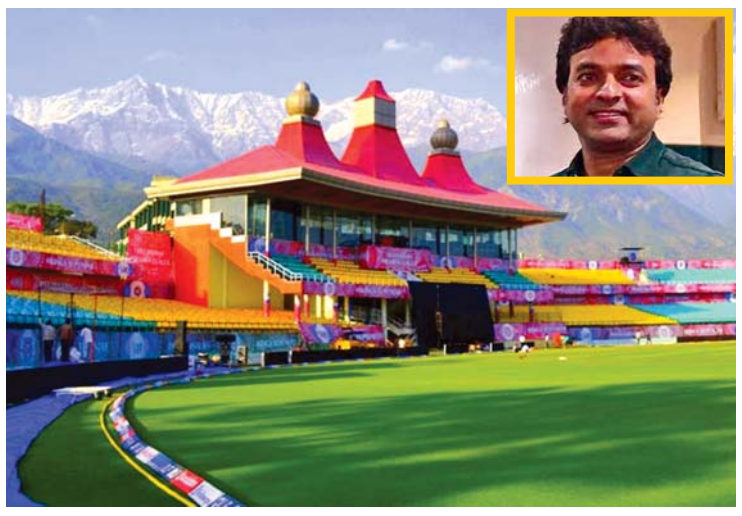

भारतीय महिला जूनियर हॉकी टीम के कोच नियुक्त हुए तुषार खांडकर

नई दिल्ली । हॉकी इंडिया ने मंगलवार को पूर्व भारतीय कप्तान तुषार खांडकर को जूनियर महिला टीम का नया कोच नियुक्त किया। उनकी नियुक्ति जूनियर महिला टीम के लिए एक बड़ी उपलब्धि है क्योंकि वे चिली के सैंटियागो में एफआईएच महिला जूनियर हॉकी विश्व कप 2023 की तैयारी कर रही हैं, जो 29 नवंबर से 10 दिसंबर तक होने वाला है। खांडकर 2014 और 2016 के बीच, कोच के रूप में भारतीय पुरुष टीम का हिस्सा थे। वह लंदन में ऐतिहासिक चैंपियंस ट्रॉफी 2016 रजत पदक, एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी में स्वर्ण, विश्व हॉकी लीग 2015 में कांस्य सहित कई उपलब्धियों का हिस्सा रहे हैं। इसके अलावा वह 2016 रियो ओलंपिक खेलों के लिए टीम के कोचिंग स्टाफ का भी हिस्सा थे। सीनियर महिला टीम की मुख्य कोच जेनेके शोपमैन के डिप्टी के रूप में अपने हालिया कार्यकाल में, खांडकर ने टीम को दक्षिण कोरिया में एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी 2021 के लिए तैयार करने में मदद की। इसके अलावा टीम ने 2022 में ओमान में खेले गए एशिया कप में कांस्य पदक जीता और विश्व कप के लिए भी क्वालीफाई किया। वह एफआईएच प्रो लीग 2021-22 सीजन के लिए महिला टीम के सपोर्ट स्टाफ का भी हिस्सा थे। हाल के वर्षों में, खांडकर ने हॉकी इंडिया के कोच एजुकेशन पाथवे लेवल बेसिक, लेवल 1 और लेवल 2 के अलावा एफआईएच लेवल 1 कोर्स भी किया है। हॉकी इंडिया के अध्यक्ष पद्मश्री डॉ. दिलीप टिर्की ने जूनियर टीम के राष्ट्रीय कार्यक्रम में तुषार खांडकर का स्वागत करते हुए कहा, भारतीय टीम के पूर्व खिलाड़ियों का कोच के रूप में सिस्टम में लौटना हमेशा अच्छा होता है। तुषार अपने साथ हॉकी में दशकों का अनुभव लेकर आए हैं। वह जूनियर कोर ग्रुप में युवा खिलाड़ियों के लिए एक महान रोल मॉडल भी होंगे। उनकी नियुक्ति सही समय पर हुई है, क्योंकि

टीम सैंटियागो में एफआईएच महिला जूनियर विश्व कप 2023 की तैयारी कर रही है। इस नई भूमिका में तुषार खांडकर को नियुक्त करने में समर्थन के लिए साई को धन्यवाद और मैं तुषार को इस नए प्रयास के लिए शुभकामनाएं भी देता हूं।"

साई, बेंगलुरु, जहां जूनियर महिला कोर प्रोबेबल ग्रुप प्रशिक्षण कर रही है, पहुंचने पर उत्साहित खांडकर ने कहा, मुझे यह जिम्मेदारी सौंपने के लिए मैं हॉकी इंडिया की आभारी हूं। अपने खेल करियर के बाद मेरा झुकाव हमेशा कोचिंग की ओर रहा है। इन वर्षों में, मैंने विश्व हॉकी में कुछ प्रसिद्ध प्रशिक्षकों के अधीन काम किया है और उनके साथ काम करके बहुत कुछ सीखा है। मैं इन युवा और प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को अंतरराष्ट्रीय हॉकी में अपना प्रदर्शन बढ़ाने में मदद करने को लेकर उत्सुक हूं।

एशियाई कबड्डी चैंपियनशिप : भारत की शानदार शुरूआत, पहले दिन अपने दोनों मैच जीते

बुसान - । भारतीय कबड्डी टीम ने टूनार्मेंट के पहले दिन दोनों मैच जीतकर एशियाई कबड्डी चैंपियनशिप में शानदार शुरूआत की। भारत ने दिन की शुरूआत दक्षिण कोरिया के खिलाफ की। भारत ने पहले मैच में कोरिया को 76-13 से हराकर शानदार शुरूआत की। इसके बाद दूसरे मैच में भारतीय टीम को चीनी ताइपे से कड़ी चुनौती का सामना करना पड़ा, हालांकि अंत में भारत को 53-19 से जीत मिली। चीनी ताइपे ने शुरूआत में भारतीयों को कड़ी टक्कर दी। उन्होंने अच्छे कौशल का प्रदर्शन किया और कुछ आक्रामक खेल दिखाया। ताइपे के रेडर और डिफेंडर भारतीय टीम के खिलाफ काफी प्रभावी दिखे। वे पहले क्वार्टर में तीन अंकों से पीछे थे, लेकिन भारतीय कप्तान पवन सहरावत ने 12वें मिनट में ऑल-आउट कर भारत की बढ़त 14-6 कर दी। मध्यांतर तक भारतीय टीम मैच में 21-12 से आगे रही।

दूसरे हाफ की शुरूआत में चीनी ताइपे की रक्षा पंक्ति प्रभावशाली दिखाई दी, लेकिन अनुभवी भारतीय पक्ष ने बेहतरीन प्रदर्शन कर अपनी बढ़त को बनाए रखा और अंत में यह मुकाबला 53-19 से अपने नाम किया।

इससे पहले भारत ने अपने पहले मैच में मेजबान कोरिया के खिलाफ 76-13 से शानदार जीत दर्ज की। भारतीय टीम ने मैच के चौथे मिनट में ही कोरिया को ऑल-आउट कर दिया। कोरिया ने छठे मिनट में अपना खाता खोला, जबकि भारतीय टीम ने 14वें मिनट में एक और ऑलआउट किया और अपनी बढ़त 29-3 कर दी। पहले हाफ की समाप्ति तक टीम इंडिया मुकाबले में 40-4 से आगे थी।

भारत ने दूसरे हाफ में भी अपना बेहतरीन प्रदर्शन जारी रखा। मुकाबले में नौ मिनट शेष रहते भारत ने एक और ऑल-आउट कर दिया और अंत में 76-13 के स्कोर के साथ बड़ी जीत दर्ज की।

विश्व कप 2023 के कार्यक्रम और स्थान की घोषणा भारत-पाकिस्तान का महामुकाबला 15 अक्टूबर को

मुंबई । भारत की मेजबानी में इस साल के अंत में 46 दिनों तक चलने वाले आईसीसी पुरुष क्रिकेट विश्व कप 2023 के कार्यक्रम और दस स्थानों की सूची जारी कर दी गई है। बहुप्रतीक्षित भारत-पाकिस्तान मुकाबला रविवार, 15 अक्टूबर को अहमदाबाद में खेला जाएगा। विश्व कप की शुरूआत 5 अक्टूबर को अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में इंग्लैंड और न्यूजीलैंड के बीच मैच के साथ होगी। मेजबान भारत अपने अभियान की शुरूआत 8 अक्टूबर को चेन्नई में पांच बार के विश्व कप विजेता ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ करेगा। ऑस्ट्रेलिया 13 अक्टूबर को लखनऊ में दक्षिण अफ्रीका से भिड़ेगा। भारत-पाकिस्तान का महामुकाबला रविवार, 15 अक्टूबर को अहमदाबाद में खेला जाएगा। पाकिस्तान 20 अक्टूबर को बेंगलुरु में ऑस्ट्रेलिया से भिड़ेगा, जबकि अगले दिन मुंबई में इंग्लैंड का दक्षिण अफ्रीका से मुकाबला होगा। भारत 22 अक्टूबर को सुरम्य धर्मशाला में न्यूजीलैंड के खिलाफ उतरेगा और ऑस्ट्रेलिया 4 नवंबर को अहमदाबाद में अपने चिर प्रतिद्वंद्वी इंग्लैंड से भिड़ेगा। भारत 29 अक्टूबर को लखनऊ में इंग्लैंड का सामना करेगा।

सैफ चैंपियनशिप : मजबूत कुवैत के सामने होगी भारतीय टीम की अग्नि परीक्षा

बेंगलुरु । पहले ही सेमीफाइनल में पहुंच चुकी भारतीय फुटबॉल टीम सैफ चैंपियनशिप के अपने आखिरी लीग मैच में आज शाम मजबूत कुवैत से भिड़ेगी। दो जीत से छह अंकों के साथ भारत की तरह कुवैत ने भी सेमीफाइनल में प्रवेश कर लिया है और मंगलवार को श्री कांतिरावा स्टेडियम में होने वाला मैच ग्रुप ए के विजेता का फैसला करेगा। दिन के दूसरे मैच में पाकिस्तान और नेपाल का आमना-सामना हुआ, जो महत्वहीन हो गया है क्योंकि दोनों टीमें अपने पहले के दो मैच हारने के बाद पहले ही सेमीफाइनल की दौड़ से बाहर हो चुकी हैं। भारत ने अपने पहले मैच में पाकिस्तान को 4-0 से हराया था लेकिन उसे नेपाल पर 2-0 से जीत के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ी। लगातार आठ मैचों में क्लीन शीट हासिल करने के बाद भारतीय टीम का डिफेंस अच्छी स्थिति में दिख रहा है। हालांकि, मिडफील्ड और फ्रंटलाइन को कुवैत जैसी मजबूत टीम के खिलाफ एक पायदान ऊपर प्रदर्शन करना होगा। भारत को नेपाल की रक्षा पंक्ति को भेदने के लिए एक घंटे से अधिक समय तक संघर्ष करना पड़ा था, और कुवैत कहीं अधिक संगठित और अनुभवी रक्षा पंक्ति के साथ लंबी बाधाएँ खड़ी कर सकता है।

भारत एक बार फिर गोल के लिए करिश्माई सुनील छेत्री की ओर देखेगा, क्योंकि उन्होंने पाकिस्तान के खिलाफ हैट्रिक और नेपाल के खिलाफ एक गोल किया था। भारत के लिए कट्टर विरोधियों के खिलाफ खेलने से पहले कई गोल करने वाले खिलाड़ियों को ढूंढना जरूरी है क्योंकि वे छेत्री को शायद ही कोई मौका देंगे। दूसरी ओर, कुवैत, जिसका भारत के खिलाफ आमने-सामने का रिकॉर्ड 2-1 है, ने अब तक टूनार्मेंट में बहुत ही अनुशासित खेल दिखाया है। कुवैत ने नेपाल और पाकिस्तान पर क्रमशः 3-1 और 4-0 से जीत दर्ज की है। यहां की परिस्थितियों से सामंजस्य बिठाने में समय लगने के बावजूद वह भारत के खिलाफ भी इसी लय में रहना चाहेगी। यह सेमीफाइनल से पहले उसे अच्छी मानसिक स्थिति में भी रखेगा।

वर्ल्ड कप में भारत-पाक मुकाबला 15 अक्टूबर को

5 अक्टूबर को इंग्लैंड-न्यूजीलैंड मैच से शुरूआत फाइनल 19 नवंबर को; तीनों ही मैच अहमदाबाद में

भारत में अक्टूबर-नवंबर के बीच 46 दिन तक वनडे वर्ल्ड कप के 48 मुकाबले खेले जाएंगे। इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल (क्रिउ) ने मंगलवार को वर्ल्ड कप का शेड्यूल जारी कर दिया। टूनार्मेंट की शुरूआत 5 अक्टूबर को न्यूजीलैंड-इंग्लैंड मुकाबले से होगी। यह मैच अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में खेला जाएगा। इसी मैदान पर 19 नवंबर को फाइनल होगा। टूनार्मेंट के सेमीफाइनल मुकाबले मुंबई और कोलकाता में होंगे।

टूनार्मेंट का सबसे चर्चित मैच, यानी भारत-पाकिस्तान मुकाबला 15 अक्टूबर को नरेंद्र मोदी स्टेडियम में ही होगा। हालांकि भारत के वर्ल्ड कप अभियान की शुरूआत ऑस्ट्रेलिया से मुकाबले के साथ होगी। यह मैच 8 अक्टूबर को चेन्नई में खेला जाएगा।

29 सितंबर से वॉर्म-अप मुकाबले

टूनार्मेंट के लिए 12 वेन्यू शॉर्टलिस्ट किए गए। 10 शहरों में लीग और नॉकआउट स्टेज के मुकाबले होंगे। जबकि गुवाहाटी और तिरुवनंतपुरम के साथ हैदराबाद में वॉर्म-अप मैच होंगे। मुकाबले 29 सितंबर से शुरू हो कर 3 अक्टूबर तक चलेंगे।

टीम इंडिया 30 सितंबर को गुवाहाटी में इंग्लैंड के खिलाफ पहला वॉर्म-अप मैचे खेलेगी। टीम का दूसरा वॉर्म-अप मैच 3 अक्टूबर को तिरुवनंतपुरम में क्वालिफायर-1 की टीम से होगा।

10 शहरों में खेले जाएंगे वर्ल्ड कप के मुकाबले

वर्ल्ड कप 2023 के मुकाबले 10 शहरों में खेले जाएंगे। जिसमें अहमदाबाद (नरेंद्र मोदी स्टेडियम), बेंगलुरु (एम चिन्नास्वामी स्टेडियम), चेन्नई (एमए चिदम्बरम स्टेडियम), दिल्ली (अरुण जेटली क्रिकेट स्टेडियम), धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन स्टेडियम), हैदराबाद (राजीव गांधी अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम, उप्पल) हैं।

इनके अलावा कोलकाता (ईडन गार्डन), लखनऊ (अटल बिहारी बाजपेयी इकाना क्रिकेट स्टेडियम), मुंबई (वानखेड़े स्टेडियम), पुणे (महाराष्ट्र क्रिकेट एसोसिएशन स्टेडियम) शामिल हैं। हैदराबाद के अलावा गुवाहाटी और तिरुवनंतपुरम 29 सितंबर से 3 अक्टूबर तक प्रैक्टिस मैचों की मेजबानी करेंगे।

8 टीमें क्वालिफाई, बची हुई 2 जगहों के लिए मुकाबले जारी

इस बार वर्ल्ड कप में 10 टीमें भाग लेंगी। 2023 वनडे वर्ल्ड कप के लिए होस्ट भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, अफगानिस्तान, न्यूजीलैंड, दक्षिण अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड ने सीधे तौर पर क्वालिफाई किया है। अब बाकी दो टीमें क्वालिफायर राउंड से आएंगी। इन दो जगहों के लिए 10 टीमों आयरलैंड, श्रीलंका, वेस्टइंडीज, नेपाल, नीदरलैंड, ओमान, स्कॉटलैंड, वअए, वरअ, जिम्बाब्वे के बीच मुकाबले चल रहे हैं।

नॉकआउट मैचों के लिए रिजर्व डे

शेड्यूल में टूनार्मेंट के नॉकआउट मुकाबलों के लिए रिजर्व डे रखे गए हैं। यानी कि दोनों सेमीफाइनल और फाइनल मैच के लिए रिजर्व-डे रहेगा। वर्ल्ड कप में पहले भी नॉकआउट मैचों के लिए रिजर्व डे रखे जा चुके हैं। पूर्व भारतीय बल्लेबाज वीरेंद्र सहवाग और श्रीलंका के पूर्व दिग्गज स्पिनर मुथैया मुरलीधरन ने भारत को फाइनल का प्रबल दावेदार बताया है। सहवाग ने भारत-ऑस्ट्रेलिया को चुना, तो मुरलीधरन ने भारत-इंग्लैंड के नाम लिए। दोनों ने कहा कि हम चाहते हैं कि वर्ल्ड कप का फाइनल मुकाबला भारत और पाकिस्तान के बीच हो, हालांकि यह मुश्किल है।

शेयर बाजार में तेजी का रुख, निवेशकों को डेढ़ लाख करोड़ का फायदा

ऑल टाइम हाई के करीब पहुंचे सेंसेक्स और निफ्टी

नई दिल्ली । घरेलू शेयर बाजार में मंगलवार को उत्साह का माहौल बना रहा। शुरूआती कारोबार में हुई बिकवाली के बाद दिन के दूसरे सत्र में मिले खरीदारी के सपोर्ट ने बाजार में जोश भर दिया। खरीदारी के सपोर्ट से सेंसेक्स आज पूरे दिन 63 हजार अंक के ऊपर बना रहा। इसी तरह निफ्टी भी 18,800 अंक के ऊपर जाकर बंद हुआ। दिन भर के कारोबार के बाद सेंसेक्स 0.71 प्रतिशत और निफ्टी 0.68 प्रतिशत की मजबूती के साथ बंद हुए। मंगलवार के कारोबार में सबसे अधिक तेजी रियल्टी, बैंकिंग, आईटी, मेटल और फाइनेंशियल सेक्टर के शेयरों में दर्ज की गई। इसके साथ ही फार्मास्यूटिकल और इंफ्रास्ट्रक्चर सेक्टर में भी खरीदारी होती रही। पूरे दिन के कारोबार के बाद एफएमसीजी और आयल एंड गैस सेक्टर के अलावा सभी सेक्टोरल इंडेक्स हरे निशान में बंद हुए। ब्रॉडर मार्केट में भी तेजी का माहौल बना रहा, जिससे बीएसई के मिडकैप इंडेक्स ने 0.38 प्रतिशत और स्मॉलकैप इंडेक्स ने 0.61 प्रतिशत की तेजी के साथ कारोबार का अंत किया। मंगलवार बाजार में आई तेजी के कारण स्टॉक मार्केट के निवेशकों की संपत्ति में करीब 1.49 लाख करोड़ रुपये से अधिक का इजाफा हो गया।

प्रस्ताव को मंजूरी देने के लिए निदेशक मंडलों की बैठक 30 जून को होगी

एचडीएफसी का एचडीएफसी बैंक में विलय एक जुलाई से होगा प्रभावी: दीपक पारेख

मुंबई/नई दिल्ली । आवास वित्त कंपनी एचडीएफसी लिमिटेड का निजी क्षेत्र के एचडीएफसी बैंक के साथ विलय एक जुलाई से प्रभावी होगा। इस विलय प्रस्ताव को मंजूरी देने के लिए एचडीएफसी और एचडीएफसी बैंक के निदेशक मंडलों की बैठक 30 जून को होगी। एचडीएफसी के चेयरमैन दीपक पारेख ने मंगलवार को कहा कि एचडीएफसी का एचडीएफसी बैंक के साथ विलय एक जुलाई से प्रभावी होगा। इस विलय के बाद बनने वाली नई इकाई की संयुक्त संपत्ति करीब 18 लाख करोड़ रुपये होगी। इस सौदे के तहत एचडीएफसी के प्रत्येक शेयरधारक को 25 शेयरों के बदले एचडीएफसी बैंक के 42 शेयर मिलेंगे। एचडीएफसी के वाइस चेयरमैन एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) केकी मिस्त्री ने कहा कि कंपनी के शेयर की सूचीबद्धता समाप्त करने का काम 13 जुलाई से प्रभावी होगा। एचडीएफसी बैंक ने पिछले साल चार अप्रैल को आवास वित्त कंपनी एचडीएफसी लिमिटेड का खुद में विलय करने पर सहमति जताई थी। यह विलय सौदा 40 अरब डॉलर का है। देश के कंपनी इतिहास में इसे सबसे बड़ा विलय सौदा करार दिया गया है। इस विलय के बाद देश की एक बड़ी वित्तीय सेवा कंपनी सृजित होगी।

महंगाई पर काबू पाने के लिए बफर स्टॉक से तुअर दाल देगी सरकार

तुअर दाल की बढ़ती कीमतों पर नियंत्रण के लिए सरकार ने उठाया कदम

नई दिल्ली । सरकार ने भारतीय बाजार में आयातित स्टॉक आने तक अरहर दाल को राष्ट्रीय सुरक्षित भंडार (बफर स्टॉक) से एक मूल्यांकित और लक्षित तरीके से जारी करने का निर्णय लिया है। केंद्र ने यह कदम उपभोक्ताओं को तुअर दाल यानी अरहर दाल की किफायती दामों पर उपलब्धता बढ़ाने के लिए उठाया है।

खाद्य मंत्रालय ने मंगलवार को एक बयान में कहा कि राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन महासंघ (नाफेड) और राष्ट्रीय सहकारी उपभोक्ता संघ (एनसीसीएफ) को पात्र मिल मालिकों के बीच ऑनलाइन नीलामी के माध्यम से तुअर दाल का निपटान करने का निर्देश दिया है, ताकि उपभोक्ताओं के लिए तैयार तुअर दाल के उपलब्ध स्टॉक को बढ़ाया जा सके। इससे पहले सरकार ने जमाखोरी और सट्टेबाजी को रोकने और उपभोक्ताओं के लिए कीमत सामान्य बनाए रखने के लिए 2 जून को आवश्यक वस्तु अधिनियम, 1955 को लागू कर

तुअर और उड़द दाल के स्टॉक की अधिकतम सीमा लागू की थी। इस आदेश के तहत सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के लिए 31 अक्टूबर, 2023 तक तुअर और उड़द के लिए स्टॉक सीमा निर्धारित की गई है। उल्लेखनीय है कि कुछ महीने पहले खुदरा बाजार में तुअर दाल गुणवत्ता के आधार पर 95-110 रुपये प्रति किलोग्राम बिकती थी, लेकिन अब यह 130-150 रुपये प्रति किलोग्राम बिक रही है।

कलेक्टर, जिपं. सीईओ, डिप्टी कलेक्टर सहित अधिकारियों ने सुनी समस्याएं

फतवा समाचार ◈ अनूपपुर

आम जन की समस्याओं के निराकरण के तहत कलेक्ट्रेट स्थित नर्मदा सभागार में मंगलवार को साप्ताहिक जनसुनवाई में 47 लोगों ने अपने आवेदन प्रस्तुत किए। जनसुनवाई कार्यक्रम में कलेक्टर श्री आशीष वशिष्ठ, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री अभय सिंह ओहरिया, डिप्टी कलेक्टर श्री दीपक पाण्डेय सहित विभिन्न विभागों के अधिकारियों ने आवेदकों की समस्याओं को सुना तथा उनके आवेदनों पर आवष्यक कार्यवाही सुनिश्चित की। उल्लेखनीय है कि आम जन की समस्याओं के निराकरण के लिए प्रत्येक मंगलवार को राज्य शासन के दिशानिदेर्शानुसार कलेक्ट्रेट स्थित नर्मदा सभागार में जनसुनवाई का कार्यक्रम आयोजित किया जाता है, जिसमें जिलेभर के लोग अपनी समस्याओं को आवेदन के साथ प्रस्तुत करते हैं। जनसुनवाई में मौके पर ही कार्रवाई होने से आम जनों में सुनवाई के प्रति भरोसा कायम हुआ है।

आज जनसुनवाई में ग्राम धिरौल तहसील अनूपपुर की वृद्ध महिला कान्ती पटेल ने पुत्र द्वारा परेशान करने एवं भरण-पोषण दिलाए जाने, वार्ड नं. 07 ग्राम भालूगड़ार थाना बिजुरी की निर्मला कुमारी ने स्वामी विवेकानंद विद्या मंदिर हाई स्कूल बिजुरी द्वारा टीसी एवं रिजल्ट नही दिए जाने, वार्ड नं. 07 नगरपालिका परिषद पसान के के. नागबाबू ने समग्र पोर्टल पर परिवार आईडी अनुमोदन किए जाने, ग्राम केल्हौरी थाना चचाई के प्रानू बैगा ने प्रधानमंत्री संबल योजना में अपात्र कर देने, जनपद पंचायत पुष्पराजगढ़ अंतर्गत ग्राम पंचायत पड़री के सरपंच ने नया ट्रांसफार्मर लगाए जाने तथा नया आंगनबाड़ी भवन निर्माण कराए जाने, शा.उ.मा.वि. बम्हनी के सेवानिवृत्त शिक्षक श्री चन्द्रशेखर पटेल ने नियुक्ति दिनांक से नियमित वेतनमान प्रदान करने के संबंध में, वार्ड क्र. 8 आदर्श मार्ग अनूपपुर के मो. तकी ने प्रधानमंत्री आवास योजना में अपात्र किए जाने सहित 47 आवेदन प्रस्तुत किए गए।

मूल्यांकन से अधिक राशि आहरण करने के प्रकरण में भाद सचिव को जेल

अनूपपुर। जनपद पंचायत अनूपपुर अंतर्गत ग्राम पंचायत रेउंदा के तत्कालीन सचिव वर्तमान सचिव ग्राम पंचायत भाद श्री लल्लूराम केवट को प्राथमिक शाला बाउण्डीवाल प्रशासकीय स्वीकृति 47 हजार के विरुद्ध कार्य कराया जाकर भुगतान की राशि 93 हजार दर्शार्या गया है। मूल्यांकन से अधिक राषि 46 हजार 96 आहरित किए जाने पर अपर कलेक्टर (विकास) एवं विहित अधिकारी जिला पंचायत श्री अभय सिंह ओहरिया ने 27.06.2023 को मामले की समक्ष में सुनवाई करते हुए मध्यप्रदेश पंचायत राज एवं ग्राम स्वराज अधिनियम 1993 की धारा 91 की उपधारा 2 जा.फौ. के तहत अनावेदक को वसूली राशि जमा नही करने पर प्रकरण में सिविल कारागार भेजने की कार्यवाही की गई है। उन्होंने जिला जेल के जेलर को जेल वारंट भेजते हुए अनावेदक को अपनी अभिरक्षा में रखने तथा पेशी तारीख 11 जुलाई 2023 को अनावेदक को कार्यालय जिला पंचायत में हाजिर कराने के निर्देश दिए हैं।

नशामुक्ति की गतिविधियां आयोजित कर जनचेतना के प्रयास आवश्यक : कलेक्टर

फतवा समाचार ◈ अनूपपुर

नशे के दुष्प्रभाव से आम जन को जागरूक करने पुलिस विभाग भी निभाएगा भूमिका-पुलिस अधीक्षक
नशामुक्ति अभियान के संबंध में जिला स्तरीय समिति की बैठक सम्पन्न

नशीले पदार्थों के सेवन से मुक्ति हेतु राज्य शासन द्वारा लिए गए निर्णय के अनुसार 15 अगस्त 2023 तक विभिन्न गतिविधियां तथा कार्यवाहियां की जानी हैं। जिसके तहत जिले से लेकर ग्राम पंचायत स्तर तक तथा स्कूल, कॉलेज, कोचिंग संस्थाओं के साथ-साथ सार्वजनिक स्थलों पर जनजागरूकता/जनचेतना की व्यापक गतिविधि सुनिश्चित की जाए। उक्ताशय के विचार कलेक्टर श्री आशीष वशिष्ठ ने कलेक्ट्रेट स्थित नर्मदा सभागार में जिला स्तरीय नशामुक्ति अभियान समिति की बैठक की अध्यक्षता करते हुए दिए। उन्होंने कहा कि नशामुक्ति जनजागरूकता के लिए सार्वजनिक स्थलों पर बैनर, पोस्टर, पम्पलेट, दीवार लेखन एवं अन्य गतिविधियों के माध्यम से व्यापक प्रचार-प्रसार सुनिश्चित किए जांए। उन्होंने कहा कि नशा की मुक्ति के लिए आम जनों को जागरूक करने हेतु नशे से होने वाली हानि के संबंध में अवगत कराया जाए।

इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक श्री जितेन्द्र सिंह पवार ने कहा कि नशामुक्ति अभियान के माध्यम से जनचेतना के प्रयास आवश्यक हैं। उन्होंने इस संबंध में शिविर, रैली, नुक्कड़ नाटक तथा अन्य माध्यमों से व्यापक जनजागरूकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि पुलिस विभाग भी समन्वय कर विभिन्न स्तरों पर नशामुक्ति जनजागरूकता कार्यक्रम के आयोजन मे सहभागिता सुनिश्चित करेगा।

जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री अभय सिंह ओहरिया ने नशामुक्ति बैठक एवं कार्यशाला मे उपस्थित लोगों को शपथ दिलाई। इस अवसर पर स्वास्थ्य, पंचायत एवं ग्रामीण विकास, शिक्षा, सामाजिक न्याय एवं अन्य विभागों के अधिकारी, कर्मचारी उपस्थित थे।

कार्यशाला में एम. पी. वी.एच. ए. के परियोजना समन्वयक श्री क्षितिज व्यास एवं संभागीय समन्वयक श्री रोहित पालीवाल के द्वारा तंबाकू नियंत्रण कानून की जानकारी दी गई, जिसमे मुख्य रुप से धारा 4 के अंतर्गत सार्वजनिक स्थलों पर धूम्रपान करना निषेध है । उल्लघंन करने पर 200 रुपए तक का जुमार्ना हो सकता है । इसी प्रकार से धारा 5,6 एवं धारा 7 के बारे में जानकारी दी गई। धारा 6 (अ) के अनुसार 18 वर्ष से कम आयु के अवयस्क व्यक्ति को तंबाकू उत्पाद बेचना प्रतिबंधित है । धारा 6(ब) के अनुसार शैक्षणिक संस्थानों के 100 गज की दूरी में तंबाकू उत्पादों का विक्रय प्रतिबंधित है। विश?व में प्रतिवर्ष करीब 60 लाख और भारत में 12 से 13 लाख मृत्यु तंबाकू के सेवन से होने वाली बीमारियों के कारण होती है । तंबाकू के सेवन से होने वाली बीमारियों में कैंसर, फेफड़ों संबंधी रोग, हृदय तथा रक्त संबंधी रोग, मस्तिष्क संबंधी रोग इत्यादि होते हैं । तंबाकू के धुएं में 4000 किस्म के रसायन होते हैं जिसमें से 60 तत्व केंसर जैसे रोग उत्पन्न कर सकते हैं । तंबाकू में मौजूद निकोटिन नशे का आदि बना देता है। यह धूम्रपान के 7 सेकंड के अंदर मस्तिष्क में पहुंच जाता है और फेफड़ों और धमनियों में घुल जाता है। जन समुदाय से अपील की है कि तंबाकू का सेवन ना करे यह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। इस अवसर पर तम्बाकू मुक्त शिक्षण संस्थान क्रियान्वयन निर्देशिका का विमोचन कलेक्टर श्री आशीष वशिष्ठ, पुलिस अधीक्षक श्री जितेन्द्र सिंह पवार, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री अभय सिंह ओहरिया, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. आर.पी. सोनी, जिला शिक्षा अधिकारी श्री टी.आर. आर्मो द्वारा किया गया।

पकरिया के लोगों को निराश देख कलेक्टर ने कराया भजन कीर्तन, ग्रामीणों संग किया रात्रि भोज

फतवा समाचार ◈ शहडोल

जिले में 27 जून को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का शहडोल दौरा स्थगित होने के बाद पकरिया गांव के ग्रामीण निराश हो गए। व्यवस्था में लगे अधिकारी कर्मचारियों का मनोबल थोड़ा कमजोर हो गया था। इस बात को कलेक्टर वंदना वैद्य ने महसूस किया कि गांव के लोग निराश है। इनका मन बदलना बहुत जरूरी है। इसके बाद तय किया कि ग्राम पंचायत पकरिया में भजन, कीर्तन एवं रात्रि भोज आयोजन कराया जाए। भजन कीर्तन का आयोजन हुआ खुद भी भजन गाए और उनके साथ एसडीएम सहित सभी अधिकारी कर्मचारी व गांव के लोगों ने भजन कीर्तन का आनंद लिया। प्रधानमंत्री का प्रस्तावित कार्यक्रम स्थगित होने पर ग्रामीण उदास थे।कलेक्टर वंदना वैद्य ने? रात्रि में ग्रामीणों के साथ भजन कीर्तन एवं भोजन कार्यक्रम कराया । मालूम हो कि प्रधानमंत्री की तैयारी में भोजन के पैकेट भी तैयार हो गए थे। 27 जून को सुबह से ही भोजन के पैकेट वितरण करना था। डेढ़ लाख भोजन के पैकेट तैयार होने थे। इसमें 30 हजार के आसपास पैकेट बनकर तैयार हो गए थे जिसे पकड़िया गांव में वितरण कराया गया है। भजन कीर्तन के बाद गांव को लोगों को यही भोजन कराया गया है।

शहडोल की श्रेया ने स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी से स्पेस इंजीनियरिंग में हासिल की मास्टर डिग्री

शहडोल। उड़ान हमेशा ऊंची होना चाहिए ताकि हम जी भरकर इस संसार को देख सकें। कुछ ऐसा ही हुआ है शहडोल की श्रेया अग्रवाल के साथ। शहर के निजी स्कूल से अपना अध्ययन कर आइआइटी कानपुर से एरो स्पेस विषय से बीटेक करने वाली श्रेया ने सोच रखा था कि वह अपनी उड़ान को बरकरार रखेंगीं। इसके लिए उन्होंने यूएसए कैलीफोर्निया की स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी को चुना और यहां से उन्होंने 18 माह में स्पेस इंजीनियरिंग विषय से मास्टर डिग्री हासिल करने में सफलता हासिल की। इन्होंने भारत देश का झंडा ऊंचा करते हुए 99.5 प्रतिशत अंक हासिल किए। श्रेया के पिता राजेंद्र कुमार अग्रवाल अनूपपुर जिले में ग्रामीण बैंक के प्रबंधक के तौर पर सेवाएं दे रहे हैं मां अर्चना अग्रवाल एक गृहिणी हैं और इन्होंने अपनी बेटी श्रेया को इतनी ऊंचाई तक ले जाने में उसके साथ हर कदम पर सहयोग किया। श्रेया के पिता ने नईदुनिया से बात करते हुए बताया कि बेटी सितंबर 2021 में यहां से पढ़ाई करने यूएसए गई थी और इसे अभी 17 जून को मास्टर आफ साइंस की डिग्री प्रदान की गई है। इन्होंने कहा कि डिग्री मिलते ही बेटी को नौ लाख रुपये महीने की नौकरी अमेरिका की ही एक कंपनी ने आफर की है जिसे वे सितंबर में ज्वाइन करेंगी।

20 घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद मिला बच्ची का शव बकरियों को बचाने के दौरान नदी में बह गई थी मासूम

उमरिया। सोन नदी की धारा में बही बच्ची का शव करीब 20 घंटे बाद मिल गया है। ग्राम भमरहा बचहा टोला निवासी 11 वर्षीय बच्ची बकरियां चराने के लिए गई थी, इसी दौरान पैर फिसलने से नदी में गिर गई थी। उमरिया जिले के मानपुर थाना क्षेत्र से गुजरने वाली सोन नदी में ग्राम भमरहा बचहा टोला निवासी 11 वर्षीय मासूम बालिका पैर फिसलने से बह गई थी, जिसका शव करीब 20 घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद मिला है। मानपुर थाना प्रभारी सुन्द्रेश सिंह मेराबी ने बताया कि मंगलवार को लगभग 11 बजे ग्राम भमरहा के बचहा टोला निवासी बालिका आशा सिंह पिता सुरेश सिंह सोन नदी के किनारे बकरी चरा रही थी। बकरियां नदी तरफ जाने लगी तो उनको वापस लाने के लिए गई थी, तभी पैर फिसलने से नदी की धार में चली गई। पुलिस को करीब 12:30 बजे सूचना मिली, तत्काल पुलिस टीम रवाना हुई और एसडीआरएफ टीम को सूचना देकर बुलाया गया। पुलिस, एसडीआरएफ की टीम और ग्रामीणों की मदद से मंगलवार शाम तक पता तलाश जारी रहा, लेकिन अंधेरा होने के कारण रात में तलाशी अभियान बन्द करना पड़ा। बुधवार सुबह से फिर से तलाश कार्य शुरू किया गया, तो घटना स्थल से लगभग 20 किलोमीटर दूर हंचौरा घाट में बच्ची का शव उतराता हुआ मिला। जिसको बरामद कर मर्ग पंचनामा कार्रवाई की। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है,

खाद्य मंत्री के नाम से जालसाजी करने वाला पकड़ाया

फतवा समाचार ◈ अनूपपुर

खाद्य मंत्री बिसाहूलाल सिंह के लेटर पैड पर फर्जी हस्ताक्षर जालसाजी का मामला सामने आया था। जालसाज बीमारी सहायता के लिए मंत्री के जाली हस्ताक्षर कर कलेक्टर से स्वेच्छा अनुदान जारी करवाता था। यह काम मंत्री का सोशल मीडिया प्रभारी ही कर रहा था। उसकी जानकारी होने पर खाद्य मंत्री ने मामले की शिकायत पुलिस अधीक्षक अनूपपुर से की थी। उनकी सूचना पर पुलिस ने जांच कर सोशल मीडिया प्रभारी नेक मोहम्मद के खिलाफ विभिन्न धाराओं में अपराध दर्ज कर लिया है। भालूमाडा पुलिस ने इस मामले पर मंत्री बिसाहूलाल सिंह के निजी सहायक महेश प्रसाद साहू की सूचना पर आरोपी नेक

मोहम्मद के विरुद्ध 1 लाख 20 हजार रुपए की धोखाधड़ी के मामले में धारा 467, 468, 471 ,420 के तहत अपराध दर्ज कर लिया है। अभी आरोपी की गिरफ्तारी नहीं हो पाई है।

टमाटर के खेत में गिरी आकाशीय बिजली, एक युवक व दो बच्चों सहित तीन की मौत

अनूपपुर। अनूपपुर जिले के अमरकंटक थाना अंतर्गत आकाशीय बिजली गिरने से एक युवक और दो बच्चों सहित तीन की मौत हो गई है। पुष्पराजगढ़ तहसील और थाना अमरकंटक के ग्राम पंचायत पौड़ी अंतर्गत किरगाही गांव में गुरुवार दोपहर हवा और वर्षा के दौरान गरज चमक हुई। उसी समय टमाटर के खेत में आकाशीय बिजली गिरी। इस दौरान खेत में मौजूद लोगों में एक युवक और दो बच्चे चपेट में आ गए जिनकी घटनास्थल पर ही मौत हो गई। अमरकंटक पुलिस से प्राप्त जानकारी अनुसार घटना गुरुवार दोपहर 2:45 की है। मृतकों में दीपक पिता केशव महरा 24 वर्ष निवासी ग्राम पंचायत बहपुर है। इसी तरह इस घटना में दो बच्चों तेजप्रताप पिता शिव प्रताप 6 वर्ष और खेमवती पिता सुखदेव यादव 11 वर्ष दोनों निवासी ग्राम किरगाही की भी मौत हो गई है। बताया गया कि घटनास्थल टमाटर का खेत है जो दोनों बच्चों के पिता की है। मृतक दीपक महरा यहां टमाटर खरीदने आया हुआ था जो कि घटना का शिकार हो गया इसी तरह दो चचेरे भाई -बहन खेत में थे वह भी आकाशीय बिजली की चपेट में आ गए। घटनास्थल के नजदीक दोनों बच्चों के पिता भी मौजूद थे। बताया गया कि घटनास्थल पर कोई पेड़ नहीं था टमाटर के खेत पर जरूर एक झाला बना हुआ था। घटना की सूचना मिलने पर अमरकंटक पुलिस पहुंची और शव पंचनामा कार्रवाई के बाद तीनों मृतकों के शव को अमरकंटक लेकर आई।

मानसिक दिव्यांग महिला के साथ रेप करते देख महिलाओं ने रोका, समाज सेविका के आने से पहले फरार

अनूपपुर। चचाई थाना क्षेत्र में अपराधों में अंकुश नहीं लग पा रहा है। अवैध गतिविधियों के साथ-साथ महिला संबंधी अपराधों में भी दिनों दिन बढ़ोतरी हो रही है। अनूपपुर-शहडोल मुख्य मार्ग पर अमलाई स्थित पेट्रोल पंप के पास सड़क पर ही 55 वर्षीय मानसिक दिव्यांग महिला के साथ दुष्कर्म की वारदात को अंजाम दिया। आरोपी राजू काछी को महिलाओं ने अलग करने का प्रयास किया। आरोपी ने महिलाओं के साथ भी अभद्रता की। पूरे मामले की जानकारी समाज सेविका मीना केवट को लगी को वह मौके पर पहुंची, तब तक आरोपी वहां से फरार हो गया था। पीड़िता को लेकर मीना केवट महिला थाने पहुंची, जहां आरोपी के खिलाफ दुष्कर्म की धाराओं में मामला पंजीबद्ध किया। पूरे मामले के संबंध में पुलिस अधीक्षक जितेन्द्र सिंह पवार ने कहा कि मामला पंजीबद्ध करने के साथ ही आरोपी की गिरफ्तारी कर लिया है।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक डल्लू सोनी द्वारा सांई प्रिंटिस म. नं 19 जिंसी जहांगीराबाद, भोपाल,मप्र, मुद्रित एवं मजिस्ट्रेट बंगला वार्ड नं 9 , जिला अनूपपुर मध्यप्रदेश से प्रकाशित। संवादक-डल्लू सोनी, समाचार चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार/न्यायालनी क्षेत्र अधिकार अनूपपुर होगा। मो -9893798715